# यही इस्लाम है

विश्व में सबसे तेज़ गति से फैलने वाले
धर्म की एक झलक

काबा जाते हुए विमान से ली गई एक तस्वीर। जिस पवित्र घर के निर्माण केलिए अल्लाह ने अपने दूत इब्राहीम (अ.) को हुक्म दिया था। और अल्लाह ने इस संसार के सम्पूर्ण मुसलमानों को आदेश दिया है कि वह जहाँ भी हो नमाज़ इसी दिशा की ओर मुंह करके पढ़ें।

THIS IS ISLAM

ⓗ دار الدليل المعاصر للنشر والتوزيع ، ١٤٤١هـ

*فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر*
باهمام ، فهد بن سالم
هذا هو الإسلام - باللغة الهندية. / فهد بن سالم باهمام - الرياض ،١٤٤١هـ
١٥٠ ص ، ٢٢ X ١٥ سم

ردمك: ٩٧٨-٦٠٣-٩١٣٧٣-٧-٥

١- الاسلام أ .العنوان
ديوي ٢١١ ١٤٤١/٤٠٨١

رقم الإيداع : ١٤٤١/٤٠٨١
ردمك: ٩٧٨-٦٠٣-٩١٣٧٣-٧-٥

प्रथम संस्करण
2020

प्रतिलिपि, अनुवाद और इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशन सर्वाधिकार माडर्न गाइड कंपनी के पास सुरक्षित है।

# यही इस्लाम है

## विश्व में सबसे तेज़ गति से फैलने वाले धर्म की एक झलक

फ़हद बाहमाम

- क्या आप अपने आस-पास और मिडिया में बहुचर्चित विषय धर्म के बारे में सही जानकारी प्राप्त करना नहीं चाहते?
- कृपया आप थोड़ी देर रुक कर गहराई से सोचें उस धर्म के बारे में जो ग्लोबल आँकड़ों के अनुसार सबसे अधिक फैलने वाला और स्वीकार किया जाने वाला धर्म है।
- जब आप जीवन, धर्म और संसार के बारे में और समुदाय की धारणा और संस्कृतियों की खोज करते हैं, तो क्या आपको खुशी महसूस नहीं होती?
- आप इस्लाम की सही जानकारी प्राप्त करने के लिए अपना बहुमूल्य समय क्यों नहीं देते। फिर अपनी बुद्धि और विवेक के साथ निर्णय लें?

यदि उपर्युक्त कोई चीज़ रोचक हो या उससे आप सहमत हों, तो यह पुस्तक आपके लिए निश्चित रूप से सहायक साबित होगी।

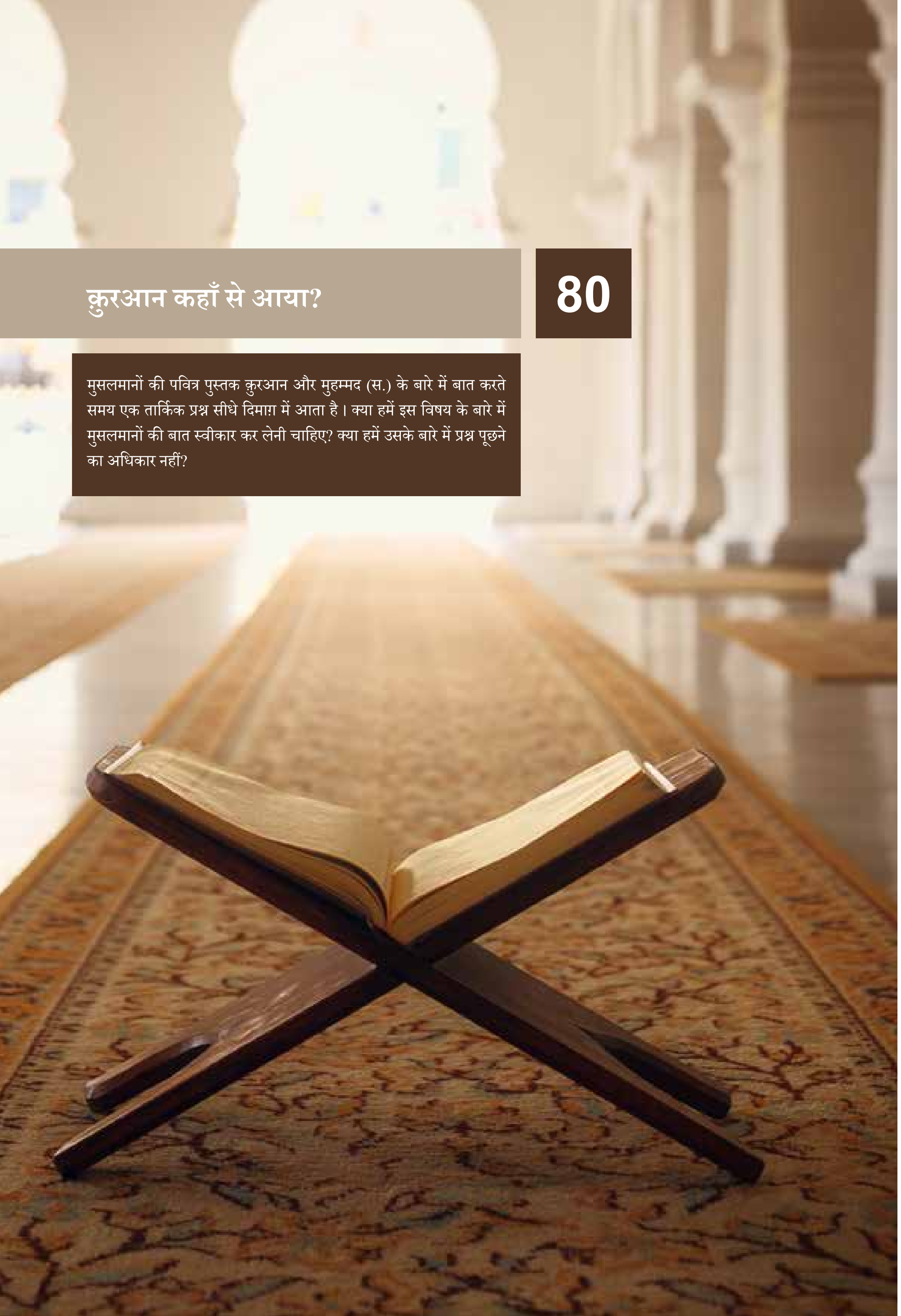

# किताब के विषय


प्रश्न जो हम सबको परेशान करता है.. — 12

- इस्लाम धर्म
- इस्लाम का शाब्दिक अर्थ
- इस्लाम ही सम्पूर्ण दूतों का धर्म है

इस्लाम विश्वव्यापी धर्म है — 16

- पर्यावरण संरक्षण आस्था का एक हिस्सा है
- ज्ञान का धर्म
- कुछ मुस्लिम विद्वान
- इस्लाम सम्पूर्ण जीवन प्रणाली है

एक निर्माता.. एक ईश्वर — 30

- इस्लाम और प्राकृतिक सिद्धांतों में कोई विरोधाभास नहीं है
- इस्लाम में भक्त और प्रभू के बीच में कोई माध्यम नहीं
- क्या इस्लाम में प्रवेश करने के लिए कोई विशेष अनुष्ठान है?

दूतों की वास्तविकता — 38

- समस्त दूत मानव ही थे
- दूत वर्ग में मध्यस्तता:
- इस्लाम में दूतों का स्थान

इस्लाम में ईसा (अ.) का स्थान — 42

इस्लाम के दूत कौन है? — 48

- ईशदूत मुहम्मद (स.) का संक्षिप्त परिचय

मुहम्मद (स.) दुनिया के न्यायधीशों की दृष्टि में — 54

क़ुरआन कहाँ से आया? — 80

मुसलमानों की पवित्र पुस्तक क़ुरआन और मुहम्मद (स.) के बारे में बात करते समय एक तार्किक प्रश्न सीधे दिमाग़ में आता है। क्या हमें इस विषय के बारे में मुसलमानों की बात स्वीकार कर लेनी चाहिए? क्या हमें उसके बारे में प्रश्न पूछने का अधिकार नहीं?

मुहम्मद (स.) और उनकी नैतिकता की कुछ झलकियाँ —— 60

- नम्रता:
- दया
- न्याय
- उपकार और उदारता
- धैर्य और सहनशीलता
- साधारण जीवन
- वादा पूरा करना

मुहम्मद (स.) के उपदेश —— 68

क़ुरआन ने मुहम्मद (स.) का वर्णन कैसे किया है? —— 74

- पवित्र क़ुरआन इस्लाम का अनन्त चमत्कार
- क़ुरआन के संरक्षण में चमत्कार

क़ुरआन कहाँ से आया? —— 80

- बार-बार लगाए गए आरोप
- इसे केवल एक प्रतिभा क्यों न मानें
- संभवत: यह पहले ग्रंथों से लिया गया है
- विभिन्न ऐतिहासिक तथ्य
- सूरतुल-फ़ातिहा

इस्लाम में उपासना की वास्तविकता —— 88

- इस्लाम के मूल आधार
- ये आदेश और परीक्षण क्यों हैं?
- नमाज़
- दान (ज़कात)
- उपवास
- हज्ज

इस्लाम में परिवारिक व्वस्था —— 104

- इस्लाम ने विवाह और परिवार के गठन के सिद्धांत पर बल दिया
- इस्लाम ने परिवार के हर सदस्य को पूर्ण सम्मान दिया, चाहे पुरुष हो या महिला
- इस्लाम में माता-पिता के प्रति सम्मान और उनकी मृत्यु तक उनकी सेवा करने और उनके आदेशों का पालन करने को अनिवार्य करता है
- इस्लाम बेटे और बेटियों के अधिकारों के संरक्षण और उनके बीच ख़र्च करने में न्याय का आदेश देता है
- इस्लाम ने रिश्तेदारों के संग अच्छा व्यवहार करने को अनिवार्य किया है:

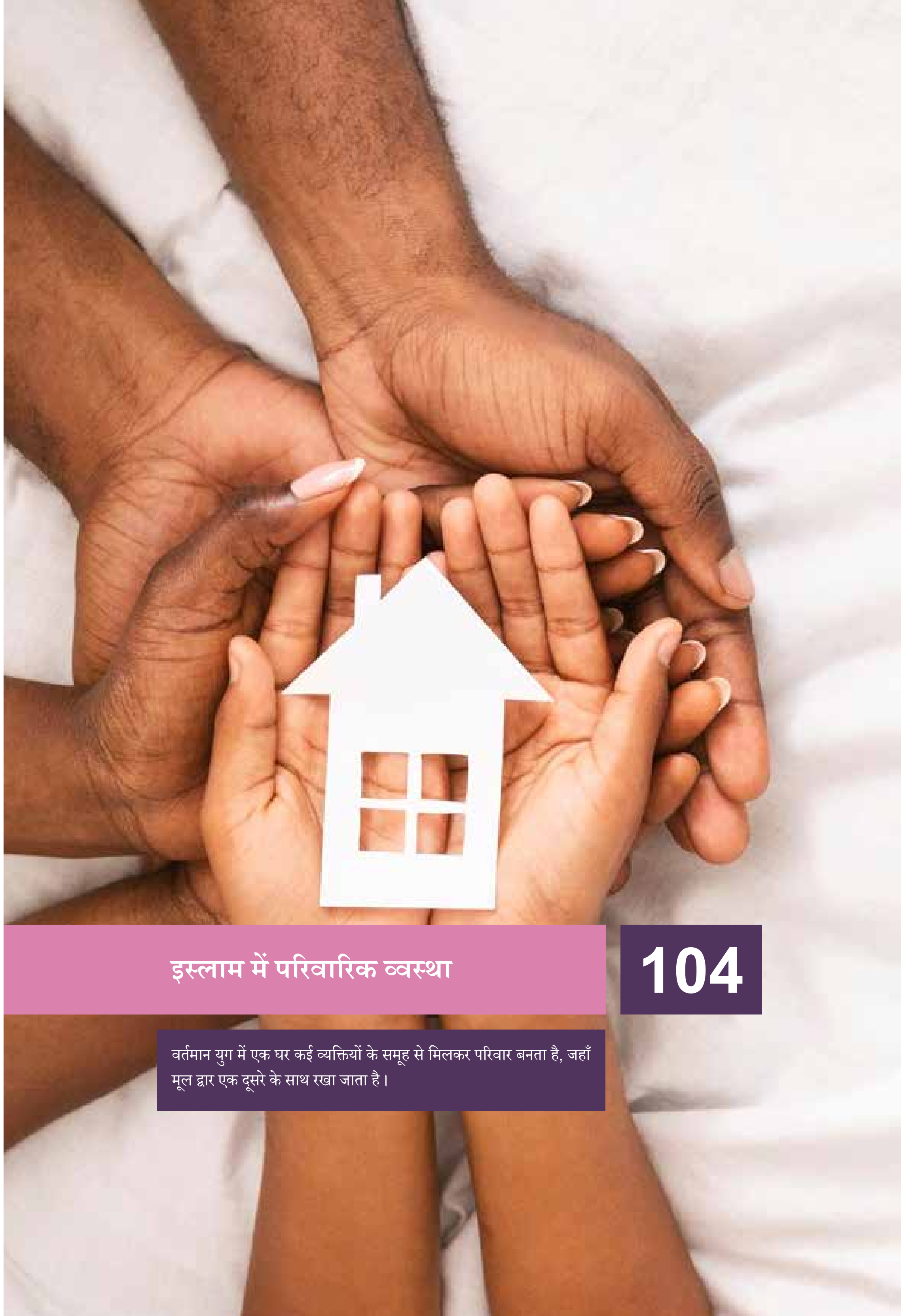

## इस्लाम में परिवारिक व्वस्था 104

वर्तमान युग में एक घर कई व्यक्तियों के समूह से मिलकर परिवार बनता है, जहाँ मूल द्वार एक दूसरे के साथ रखा जाता है।

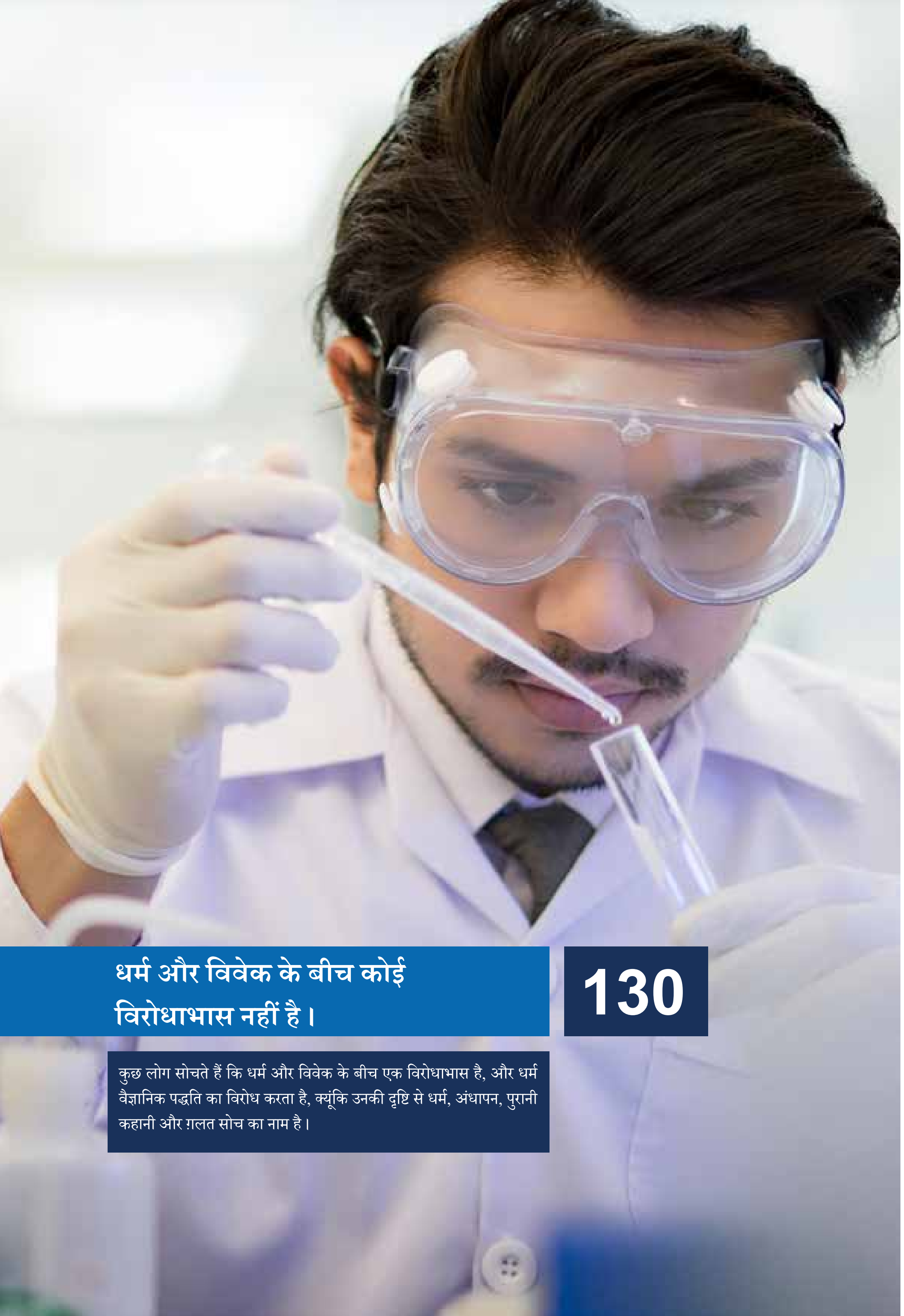

## धर्म और विवेक के बीच कोई विरोधाभास नहीं है।

**130**

कुछ लोग सोचते हैं कि धर्म और विवेक के बीच एक विरोधाभास है, और धर्म वैज्ञानिक पद्धति का विरोध करता है, क्यूंकि उनकी दृष्टि से धर्म, अंधापन, पुरानी कहानी और ग़लत सोच का नाम है।


इस्लाम में महिला का स्थान — 110
- महिलाओं के सम्मान और उनके अधिकारों के कुछ उदाहरण:
- इस्लाम ने इन महिलाओं की देख-भाल पर ज़ोर दिया है
- इस्लाम में पुरुष एवं महिला के बीच संघर्ष के लिए कोई जगह नहीं है
- पुरुष और महिला के बीच का सम्बंध
- इस्लाम में पुरुषों और महिलाओं के बीच सम्बंधों की प्रकृति
- इस्लाम ने अजनबी पुरुषों के सामने हिजाब को क्यों अनिवार्य किया?
- पुरुष और अजनबी महिला के बीच सम्बंध के सिद्धांत

खाने-पीने में इस्लाम का क़ानून — 120
- सूअर
- मदिरा (शराब) और नशीला पदार्थ
- क़ुरआन मदिरा और नशीला पदार्थ पर कैसे नियंत्रण करता है

पाप और पश्चाताप — 126

धर्म और विवेक के बीच कोई विरोधाभास नहीं है। — 130
- सही सोच में आने वाली बाधाएँ, जैसा की क़ुरआन ने स्पष्ट किया है

इस्लाम शान्ति का धर्म है — 136
- इस्लाम आज सबसे तेज़ी से फैलने वाला धर्म:
- मुसलमानों ने विजय प्राप्त करने के बाद नए देशों में कैसा शासन किया?

इस्लाम और कुछ मुसलमानों के बीच विरोधाभास — 142
- नया कोण

## प्रश्न जो हम सबको परेशान करता है..

हम सभी को अपने जीवन में अपने आप से एक बार पूछना होगा... कहानी क्या है? मैं कौन हूँ? और कहाँ से आया हूँ? और कहाँ जाना है? मेरा ठेकाना कहाँ है? इन तमाम चीजों का उद्देश्य क्या है? क्या इस दुनिया में यह सब बेकार नहीं है अगर अंत मृत्यु और मिट्टी के और कुछ भी नहीं है?

मुसलमान और अन्य आकाशीय धर्मग्रन्थ समुदाय के लोग इस बात पर विश्वास रखते हैं कि बिना सत्य ईश्वर और मरने के पश्चात् एक दूसरा जीवन होगा जहाँ अपराधी को सज़ा और पीड़ित को न्याय मिले इन बातों पर आस्था और विश्वास न रखना, बिल्कुल बेकार और व्यर्थ है, ऐसी यातना और तकलीफ़ जिसका कोई मतलब नहीं, ऐसा क़र्ज़ है जिसके वापसी की कोई आशा नहीं।

वास्तव में, सत्य ईश्वर पर विश्वास के बिना जीवन के विरोधाभास, जन्म महत्व, सही और ग़लत का अर्थ समझा नहीं जा सकता। तो एक दिन यह जीवन समाप्त हो जाएगा और हर व्यक्ति को उसके कर्म के अनुसार जो कुछ उसने किया है फल मिलेगा।

तभी हम अपने सभी मूल्यों और अवधारणाओं पर गहरा विश्वास रख सकते हैं जिसकी ओर हम आमंत्रित करते हैं जैसे-- न्याय, प्रेम, सहानुभूति, सत्य, दया, धैर्य, इत्यादि।

और वास्तव में स्वंय के साथ एक चुनौती है जिसका मतलब है, अपनी उपलब्धियों का आनंद लें और धैर्य की मिठास महसूस करें।

क़ुरआन जो मुसलमानों का पवित्र ग्रंथ है उसमें इस बात की ओर इशारा किया गया है, सत्य ईश्वर अल्लाह ने बुद्धिमान और ग़ौर व फ़िक्र,विचार करने वाले लोगों के बारे में बयान किया है कि: “और आसमानों और ज़मीन की पैदाइश पर विचार करते हैं (और कहते हैं) कि ऐ हमारे रब ! तूने यह सब बिना फ़ाएदा के नहीं बनाया, तू पवित्र है।” (सूरतु-आले-इमरान: १९१)

> अरबी भाषा में इस्लाम के अनेक अर्थ शामिल होते हैं जो: आत्मसमर्पण, अनुसरण, आज्ञाकारिता, एख़्लास, सुरक्षा, अथवा शान्ति है।

> वास्तव में, सत्य ईश्वर पर विश्वास के बिना जीवन के विरोधाभास, जन्म महत्व, सही और ग़लत का अर्थ समझा नहीं जा सकता।

## इस्लाम धर्म:

धरती पर अधिकांश धर्मों को विशेष व्यक्ति, राष्ट्र या किसी विशेष देश के नाम पर रखा गया जहाँ पर यह धर्म प्रकट हुआ जैसे: ईसाई धर्म ईसा मसीह के नाम पर, यहूदी हयूदा के नाम पर, बौद्ध धर्म अपने संस्थापक बुद्धा के नाम पर, और हिन्दू धर्म भारत से सम्बंध रखते हुए हिन्दू कहता है, इत्यादि।

इस्लाम किसी विशेष व्यक्ति, जनजाति, जाति या राष्ट्र से सम्बंधित नहीं है, क्योंकि वह किसी विशेष जनजाति से सम्बंधित नहीं है जिससे उसको जोड़ा जाए, और यह किसी व्यक्ति विशेष का आविष्कार भी नहीं है कि उससे उसको जोड़ा जाए, इसलिए केवल इसका नाम इस्लाम रखा गया है।

## इस्लाम का शाब्दिक अर्थ:

जब हम अरबी भाषा में इस्लाम की परिभाषा देखते हैं, तो इसमें अनेक अर्थ शामिल होते हैं जो: आत्मसमर्पण, अनुसरण, आज्ञाकारिता, एख़्लास, सुरक्षा, अथवा शान्ति है।

इस्लाम: आत्मसमर्पण और पूर्ण आज्ञाकारिता उस सृष्टिकर्ता के लिए जो हमारा जन्मदाता और मालिक है, और उसके अतिरिक्त सभी प्रकार की उपासना से आज़ादी का नाम इस्लाम है।

यही अर्थ क़ुरआन की अनेक आयतों से प्रमाणित हुआ है।



पवित्र क़ुरआन हमें बताता है जिसने अपनी सम्पूर्ण इच्छाओं और आशाओं को अल्लाह के लिए समर्पित कर दिया, और उसके आदेशों और प्रतिबंधों का पालन किया तो वह ऐसी मज़बूत रस्सी को पकड़ लिया जो टूटने वाली नहीं है, और उसके लिए हर प्रकार की सफ़लता भी है। (सूरतु लुक़मान:२२)

इस्लाम पूरे रूप से केवल एक अल्लाह की पूजा उपासना करने और उसके अतिरिक्त किसी और की उपासना से आज़ादी का नाम है, और मुस्लिम उस व्यक्ति को कहा जाता है जो केवल उसी की उपासना करे, जो आंतरिक शान्ति में जीता है, और जो लोग उसके पास रहते हैं उनके लिए भी शान्ति का वातावरण बनाए रहता है।

**लेकिन क्या सम्पूर्ण दूतों का का धर्म यही था?**

## इस्लाम ही सम्पूर्ण दूतों का धर्म है:

क़ुरआन इस बात की पुष्टि करता है कि विभिन्न युगों में सभी राष्ट्रों और समुदाय में लोगों की ओर एक दूत भेजा गया जो उन्हें अल्लाह का दीन बताए, जैसा कि क़ुरआन में मुहम्मद (स.) के बारे में आया है कि: हम ने ही आप को हक़ देकर ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है, और कोई उम्मत ऐसी नहीं हुई है जिसमें कोई डराने वाला न गुज़रा हो। ( सूरतु फ़ातिर: २४ )

सम्पूर्ण दूत इसी सत्य धर्म को लेकर आए, और उनके बीच में आस्था, दीन और नैतिकता में कोई अंतर नहीं था।

इस्लाम १४०० वर्ष पूर्व मुहम्मद (स.) लेकर आए लेकिन यह कोई नया धर्म नहीं बल्कि सम्पूर्ण संदेष्टाओं के धर्मों का विस्तार था, इसलिए क़ुरआन सम्पूर्ण संदेष्टाओं पर विश्वास और आस्था का आदेश देता है जैसे कि: इब्राहीम, इसहाक़, याक़ूब, मूसा और ईसा अलैहेमुस्सलाम। (सूरतुल बक़रह: १३६)

दिलचस्प बात यह है कि, इब्राहीम और याक़ूब ने अपने बच्चों को इसी धर्म को स्वीकार करने का निर्देश दिया था। क़ुरआन की पवित्र किताब कहती है कि: “ऐ मेरे बच्चों, अल्लाह ने तुम्हारे लिए इस्लाम धर्म को चुना है, इसलिए आप मरते दम तक इस्लाम पर जमे रहना”। (सूरतुल बक़रह: १३२)

यह धर्म सम्पूर्ण दूतों के धर्मों का विस्तार है, असल आस्था में कोई अंतर नहीं, ज़माने और समय के हिसाब से क़ानून में थोड़ा बहुत अंतर अवश्य था, यहाँ तक कि मुहम्मद (स.) को अंतिम ईशदूत बनाकर सम्पूर्ण मानव जाति के लिए भेजा गया।

यहाँ क़ुरआन इस बात को स्पष्ट करता है कि सत्य धर्म केवल एक ही है, और जो मतभेद हम दुसरे आकाशीय धर्मों में देख रहे हैं वह केवल इसलिए है कि लंबी अवधि के कारण फेरबदल कर दिया गाय है, जैसा कि अल्लाह अपने पवित्र क़ुरआन में कहता है: बेशक अल्लाह के पास दीन इस्लाम ही है, और जो किताब दिए गए उन्होंने इल्म आने के पश्चात् आपस में हसद के कारण मतभेद किया, और जो अल्लाह की आयतों को न माने तो अल्लाह जल्द ही हिसाब लेगा। (सूरतु आले-इमरान: १९)

> इस्लाम किसी विशेष व्यक्ति, जनजाति, जाति या राष्ट्र से सम्बंधित नहीं है, क्योंकि वह किसी विशेष जनजाति से सम्बंधित नहीं है जिससे उसको जोड़ा जाए, और यह किसी व्यक्ति विशेष का आविष्कार भी नहीं है कि उससे उसको जोड़ा जाए, इसलिए केवल इसका नाम इस्लाम रखा गया है।

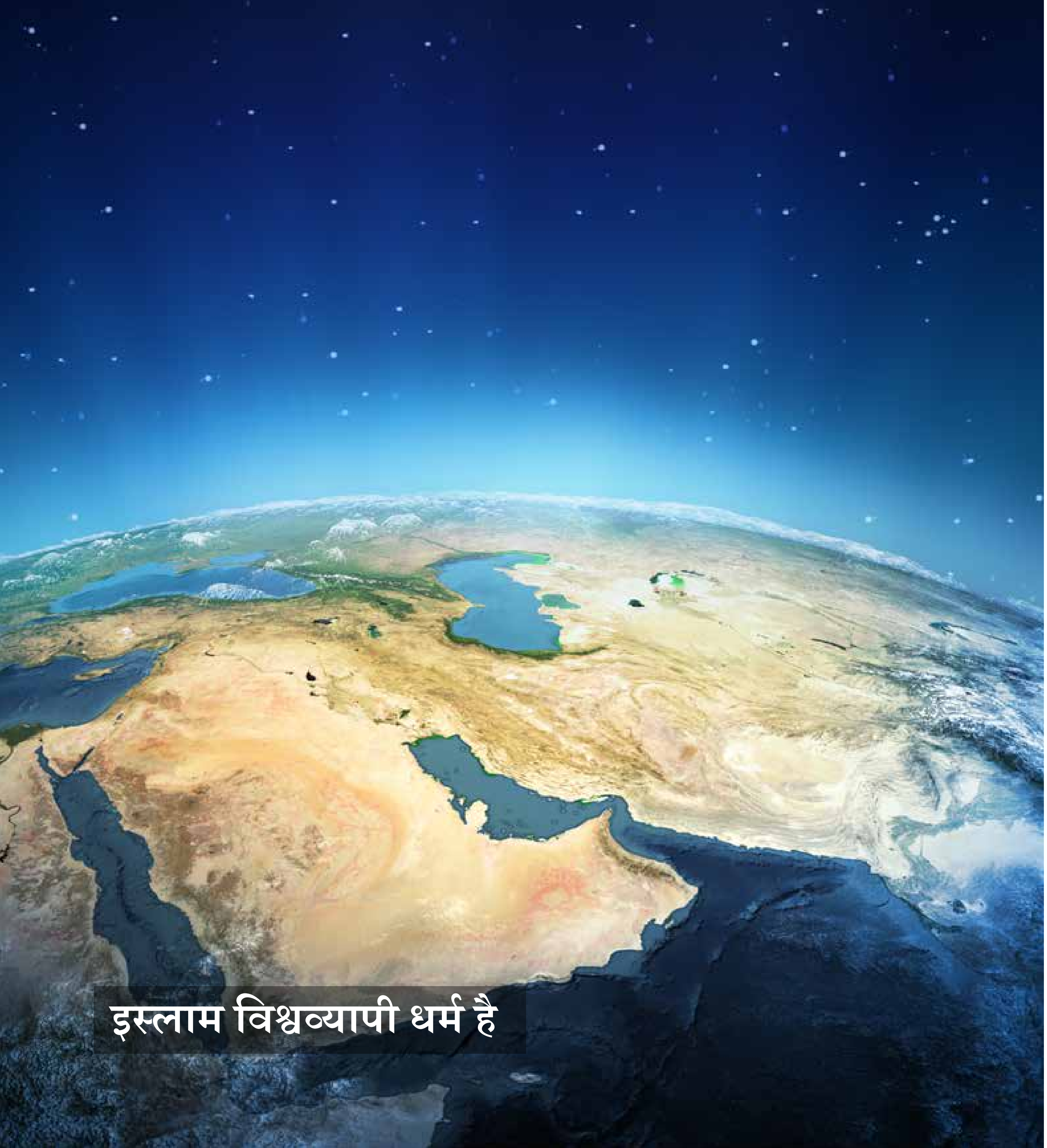


## आश्चर्य

आश्चर्य की बात यह है कि क़ुरआन में कहीं भी "अरब" शब्द का उल्लेख नहीं किया गया है जबकि क़ुरआन उनकी भाषा में अवतरित हुआ, और मुहम्मद (स.) उन्हीं के बीच भेजे गए, और आज अरब के लोग मुसलमानों के बीच अल्पसंख्यक माने जाते हैं इसलिए कि इनकी कुल आबादी केवल 20% से भी कम है, जबकि इंडोनेशिया दक्षिणपूर्व एशिया में सबसे बड़ा इस्लामिक देश है। केवल भारत की अल्पसंख्यक मुस्लिम आबादी अरब की आबादी से अधिक है।

इस्लाम धर्म सभी लोगों के लिए है, चाहे वह किसी भी संस्क्रति, जाति, और देश से सम्बंध रखने वाले हों, उनके लिए दया और मार्गदर्शन के रूप में आया, जैसा कि क़ुरआन में है कि: “और हम ने मुहम्मद (स.) को पूरे संसार के लिए रहमत बनाकर ही भेजा है।” (सूरतुल अम्बिया:१०७)

इस्लाम ने मानवता के लिए ऐसी एक व्यवस्थित प्रणाली प्रस्तुत किया है कि जो संसार के किसी देश में मानव निर्मित संविधान और क़ानून से नहीं मिल सकता।

क़ुरआन ने केवल अरब अथवा मुसलमानों को ही सम्बोधन नहीं किया बल्कि समस्त मानवजाति को सम्बोधित किया है चाहे वह किसी भी समुदाय और धर्म के हों, अल्लाह क़ुरआन में कहता है कि: “हे लोगो ! हम ने तुम्हें एक (ही) मर्द और औरत से पैदा किया है और इसलिए कि तुम आपस में एक-दुसरे को पहचानों, जातियाँ और प्रजातियाँ बना दी हैं, अल्लाह की नज़र में तुम सबमें वह इज्ज़त वाला है जो सबसे ज़यादा डरने वाला है, यक़ीन करो कि अल्लाह जानने वाला अच्छी तरह जानता है।” (सूरतुल हुजुरात:१३)

इस प्रकार, क़ुरआन ने पुष्टि की है कि सभी मनुष्य अनेक रंगों और जातियों के बावजूद आदम और हव्वा की संतान हैं, और उनके बीच जो अंतर और विविधता पाई जाती है वह प्राथमिकता के लिए नहीं है, बल्कि परिचय, सहयोग और एक दुसरे की सहायता के लिए है, लेकिन सबसे श्रेष्ट और अच्छा वह है जो अल्लाह की पूजा-उपासना करने और उससे डरने वाला हो।

क़ुरआन ने इस ओर हमारा ध्यान खींचा है कि विभिन्न रंगों और अनेक बहुभाषावाद और संस्कृतियां इस संसार में अल्लाह का वरदान, निशानी और अनूठा निर्माण है। और आकाश और पृथ्वी के बनाने की महानता की ओर ध्यान केन्द्रित करवाना है, क़ुरआन में है कि: “और उसकी (क़ुदरत) की निशानियों में से आकाशों और धरती की पैदाइश और तुम्हारी भाषाओं और रंगों का मतभेद (भी) है, बुद्धिमानों के लिए अवश्य उसमें बड़ी निशानियाँ है।” (सूरतुर्रूम:२२)

१९४८ में पहली बार मानव अधिकार के लिए विश्वव्यापी घोषणापत्र जारी हुआ, जिसमें समान अधिकार, स्वतंत्रता और मानव मानवाधिकार के बारे में बात हुई थी, जबकि इस्लाम के दूत मुहम्मद (स.) ने १४०० वर्ष पूर्व ही मानव जाति के अधिकारों के लिए एक नए युग का शुभारंभ किया था जब आप ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा: “ऐ लोगो ! यह जान लो कि तुम्हारा रब (अल्लाह) एक है, और तुम्हारे पिता (आदम) एक हैं, और किसी अरबी को किसी अजनबी (ग़ैर अरबी) पर और न किसी अजनबी को अरबी पर कोई प्राथमिकता है, और न किसी गोरे को काले पर और न किसी काले को गोरे पर प्राथमिकता है मगर वह व्यक्ति सबसे श्रेष्ट है जो अल्लाह से सबसे अधिक डरने वाला हो।” (अहमद : २३४८९)

> इस्लाम ने मानवता के लिए ऐसी एक व्यवस्थित प्रणाली प्रस्तुत किया है कि जो दुनिया के किसी देश में मानव निर्मित संविधान और क़ानून से नहीं मिल सकता।

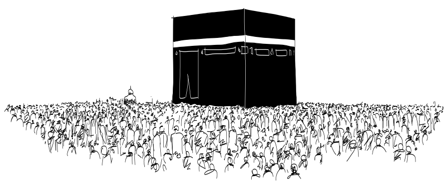

**मुहम्मद (स.) इस्लाम के दूत हैं**

“ऐ लोगो ! यह जान लो कि तुम्हारा रब (अल्लाह) एक है, और तुम्हारे पिता (आदम) एक हैं, और किसी अरबी को किसी अजनबी (ग़ैर अरबी) पर और न किसी अजमी को अरबी पर कोई प्राथमिकता है, और न किसी गोरे को काले पर और न किसी काले को गोरे पर प्राथमिकता है मगर वह व्यक्ति सबसे श्रेष्ट है जो अल्लाह से सबसे अधिक डरने वाला हो।”

**मानव अधिकारों के लिए विश्वव्यापी घोषणा**

जिसमें समान अधिकार, स्वतंत्रता और मानव मानवाधिकार के बारे में बात हुई

६३० ई०

१९८४ ई०

## पर्यावरण संरक्षण आस्था का एक हिस्सा है:

कुछ दार्शनिक (फ़लसफ़ी) लोगों का कहना है कि मनुष्य इस जगत में पूर्ण स्वामी है, अपने हितों और इच्छाओं के अनुसार जो चाहे कर सकता है, उसका कोई पूछ-ताछ करने वाला नहीं है, और वह अपनी ख़ुशी के लिए इस जगत और कुछ जीवियों को नष्ट कर सकता है, या इसका बिल्कुल उल्टा, कुछ लोग मनुष्य को किसी और पर कोई महत्व नहीं देते, केवल ऐसी स्तिथि में इंसान भी लाखों सृष्टि में से एक है और कुछ नहीं, तो ऐसी स्तिथि में इस्लाम मनुष्य और संसार के बीच के रिश्ते को कैसे देखता है?

इस्लाम ने पृथ्वी और मानव के बीच आस्था और सिद्धांतों के बीच गहरा संबंध होना परिभाषित किया है। जगत में रहने वाले सम्पूर्ण इंसानों, जानवरों, पक्षियों और प्राकृतिक संसाधनों को मज़बूत करने के लिए विभिन्न क़ानून और प्रावधान तैयार किए गए हैं।

शोधकर्ता का ध्यान आकर्षित करने वाली पहली बात यह है जो क़ुरआन द्वारा निर्धारित संतुलन बयान किया गया है, अल्लाह ने मनुष्यों को सभी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ प्राणी घोषित करके मानवता को प्राथमिकता दी है। (सूरतुल इस्रा:७०) यह संसार और आस-पास के सभी चीज़ो को मानव के लाभ के लिए बनाया है। (सूरतु इब्राहीम:३२,३३)

मानव पृथ्वी पर लाखों सृष्टि में से केवल एक सृष्टि ही नहीं, कि उसको कोई विशेषता नहीं, बल्कि सम्मानित प्राणी हैं, और पृथ्वी को मनुष्य के लाभ के लिए बनाया गया है। (सूरतुल-बक़रह:२९)

लेकिन सर्वश्रेष्ठ होने का मतलब यह नहीं है कि मनुष्य को पूरा अधिकार है और वह अपनी ख़ुशी के लिए पृथ्वी, प्राणियों और प्राकृतिक चीज़ो और संसाधनों को नष्ट करे। क्योंकि इसका असली स्वामी अल्लाह है। इस धरती को आस-पास के प्राणियों और प्राकृतिक संसाधनों को मनुष्य के लाभ के लिए बनाया गया है, और वह उसके विकास और परगति के लिए जो चाहे कर सकता है इस शर्त के साथ कि किसी सृष्टि को हानि नहीं पहुँचाएगा चाहे वह मनुष्य हो या कोई और हो। (सूरतू हूद-:६१, सूरतुल-बक़रह:३०)

इस्लामी ने मनुष्य और संसार के बीच घनिष्ठ सम्बंध को नियंत्रित करने के लिए सैकड़ों क़ानून और प्रावधान बनाए हैं, उदाहरणस्वरूप:

**१) पशुओं की देख-भाल:**

मुहम्मद (स.) से जानवरों और पशुओं के अधिकार और उनकी देख-भाल के बारे में कई उपदेश आए हुए हैं, और उनके साथ अच्छा व्यवहार करने पर परलोक में महान पुरस्कार भी रखा है, और उनको तकलीफ़ देने से रोका है अगर कोई ऐसा करेगा तो उसको दंड भुकतने की धमकी भी दी है।

जबकि १८२४ ई० में ब्रिटेन में पशु अधिकारों के लिए रॉयल सोसाइटी ऑफ़ एनिमल राइट्स की स्थापना हुई, और आधुनिक समय में ब्रिटेन में जानवरों पर अत्याचार करने वालों को सज़ा देने का पहला क़ानून १९४९ ई० में बना। लेकिन इस्लाम ने १४ शताब्दी पूर्व ही इसे अवैध रूप से पशु अधिकारों, उनके साथ क्रूरता, को महान अपराध घोषित किया है। इसके बहुत से उदाहरण मुहम्मद (स.) की शिक्षाओं में पाया जा सकता है, जैसे कि: जानवरों को भूका रखना, उसे यातना देना या उसकी शक्ति से अधिक भार रखना, या ऐसे तरीक़े से खेल खेलना जिसने उसे हानि पहुँचे या चेहरे पर मारना! । अधिक विस्तृत जानकारी के लिए अन्य इस्लामी पुस्तकों का अध्ययन करें।

इस्लाम में जानवरों से प्यार और उसकी सुरक्षा पर कितना ज़ोर दिया जाता है, मुहम्मद (स.) की निम्नलिखित शिक्षाओं से जाना जा सकता है। मुहम्मद (स.) कहते हैं कि: "एक वैश्या औरत (इस्लाम में सबसे निषेध में से एक है) उसने एक कुत्ते को प्यास से तड़पते हुए देखा और उसपर दया खाते हुए अपने जूतों में कूवें से पानी भर कर निकाला और उस कुत्ते को पिला दिया, उसके बदले में अल्लाह ने उसको क्षमा (माफ़) कर दिया! । (बुख़ारी:३२८०)

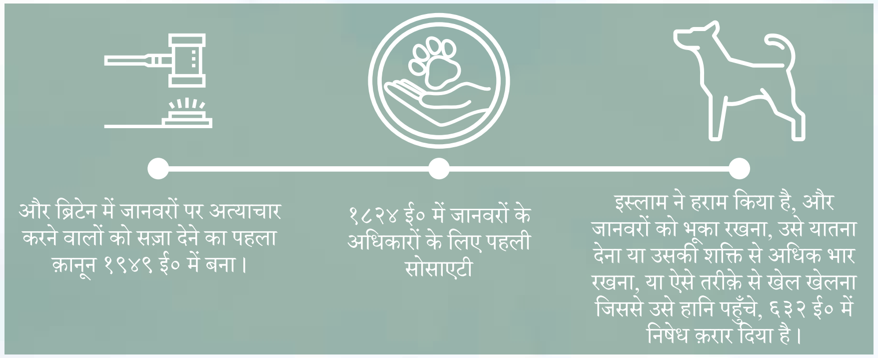


**२) पौधों की देख-भाल:**

पौधे और कृषि की देख-भाल करने के लिए इस्लाम ने प्रेरित किया है चाहे वह निजी लाभ के लिए हो या समाज के लिए या किसी और के लाभ के लिए हो!

मुहम्मद (स.) ने हमें सूचित किया है कि: "अगर कोई किसी की खेती या पौधों की देख-भाल में किसी भी प्रकार की सहायता करता है, जिससे पक्षी-पक्षियाँ, जानवर और मनुष्य अगर कुछ खा लें तो उसके लिए दान (सदक़ा) लिखा जाएगा।" (बुख़ारी: २३२०)



वास्तविकता यह है कि, दूत मुहम्मद (स.) ने कठिन परिस्थितियों में भी मुस्लिम को इस बात की ओर आमंत्रित किया कि पर्यावरण की देख-भाल में कोई कसर न छोड़े, और कृषि के द्वारा भूमि का विकास, भले ही यह निश्चित हो कि वह उससे लाभ नहीं उठा पाएगा। उन्होंने कहा कि: "अगर परलोक (क़यामत) का दिन भी आजाए और आप के हाथ में एक पौधा है, तो हर संभव उसे लगाने का प्रयास करें, यह आपके लिए दान होगा।" (अहमद : १२९८१)

इसलिए इस्लाम ने पर्यावरण, भूमि-निर्माण को एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य बताया और कठिन परिस्थितियों में पूजा-उपासना का भी महत्व बताया, इससे उनको कोई भी चीज़ नहीं फेर सकती चाहे वह कितनी बड़ी हो।

**३) प्राकृतिक संसाधनों की देख-भाल:**

इस्लाम ने पर्यावरण की रक्षा पर ज़ोर दिया है, इसके श्रोतों को बर्बाद नहीं किया, या प्रदूषण और भ्रष्ट किया, बल्कि "उपचार से पहले की रोकथाम" के सिद्धांत के आधार पर लोगों के लिए एक जागरूकता अभियान कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिनमें: व्यक्तिगत स्वच्छता और उसके विवरण की देख-भाल, प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा, और उसको नष्ट करने से रोका, उदाहरणस्वरूप:

- प्राकिर्तिक संसाधनों के उपयोग में भी फ़ज़ूल-ख़र्ची को वर्जित किया है, जैसे पानी, भले ही आप अल्लाह की पूजा-उपासना के लिए वज़ू करने के लिए पानी का प्रयोग आवश्यकता से अधिक क्यों न करें (वज़ू: नमाज़ से पहले अपने बदन के कुछ अंगों को धुलना)।
- प्राकिर्तिक संसाधनों और एकाधिकार को सत्ता और प्रभाव वाले लोगों को रोका है, जिससे की दूसरों को नुक़सान पहुँचे, इसलिए, खाद्य पदार्थों, दवाओं के उपचार और उर्जा के लिए, पशु आहार के लिए पानी रोकने को अवैध कहा है। (अबू-दाऊद :३४७७)

> पर्यावरण की देख-भाल करना और प्रदूषण से शुद्धीकरण में योगदान करना ईमान का हिस्सा है जैसा कि रसूल (स.) ने कहा है।

- इस्लाम ने वातावरण प्रदूषित करने वाले सम्पूर्ण कार्यों से रोका है जैसे कि: स्थिर (रुके हुए) पानी में पेशाब करने से क्योंकि यह इसे प्रदूषित करता है, इसी प्रकार रास्तों या छाया के स्थान पर पेशाब-पाख़ाना करने से, जहाँ से लोग गुज़रते हो या अपनी थकावट को दूर करने के लिए कुछ देर रुकते हों।

यह एक ऐसे धर्म के कुछ आसान उदाहरण हैं, जिनके महान दूत गंदगी से वातावरण को साफ करने, और सड़क से हानिकारक चीज़ को दूर करने में भाग लेते हैं, न केवल पुन्य का काम है बल्कि ईमान का एक हिस्सा भी है। (मुस्लिम: ३५)

**ज्ञान का धर्म:**

यह संयोग की बात नहीं थी कि क़ुरआन का प्रथम शब्द “इक्रा” (पढ़) दूत पर अवतरित हुआ - शान्ति और सलामती हो आप पर - पवित्र क़ुरआन में और पैगंबर मुहम्मद (स.) के वचन में मानव जाति के लिए उपयोगी सभी प्रकार के विज्ञान का इस्लाम समर्थन करता है, यहाँ तक कि वह मुस्लिम जो इस्लामी ज्ञान सीखने के उद्देश्य से घर से बाहर जाता है, वह स्वर्ग में चल रहा है जैसा कि मुहम्मद (स.) ने बयान किया है कि: “जो भी घर से ज्ञान प्राप्त करने के लिए निकल जाता है, अल्लाह उसके लिए स्वर्ग का रास्ता आसान बना देता है।” (मुस्लिम : २६९९)

एक अद्भुत तुलना जिसको मुहम्मद (स.) अपने इन शब्दों में बयान कर रहे हैं कि: “एक आलिम का महत्व एक पूजा करने वाले व्यक्ति पर ऐसे ही है जैसे मुहम्मद (स.) का महत्व और तुलना उस व्यक्ति से किया जाए जो सबसे कम दर्जे का हो।” (तिर्मिज़ी:२६८५ )

यही कारण है कि इस्लाम धर्म और विज्ञान के बीच मतभेद नहीं पाया जाता है, जैसा कि दुसरे धर्मो में है। वैज्ञानिकों ने वैज्ञानिक विचारों और निष्कर्षों की कोशिश नहीं की थी जैसा कि अंधकार युग में था। इसके विपरीत धर्म, विज्ञान का मार्गदर्शक प्रकाश था, जिसने इसे समर्थन किया और उसकी ओर आमंत्रित किया। आज भी मस्जिदों में मानव की भलाई के लिए शिक्षा दी जाती है।

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि अधिकतम मुस्लिम प्राकृतिक वैज्ञानिकों ने क़ुरआन को सीखने और याद करने और धर्म को समझने से अपने जीवन की शुरूआत की, और फिर उन्होंने अपने संबंधित विषयों और विशेषताओं में बड़ी भूमिका निभाई।

अल्लाह ने उस शिक्षक और अच्छी बातें सिखलाने वाले को उच्च पद दिया है। मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया: “सभी प्राणियां धार्मिक ग्रुओं के लिए प्रार्थना करती हैं जो लोगों को च्छी चीजें सिखाते हैं।” (तिर्मिज़ी:२६८५ )

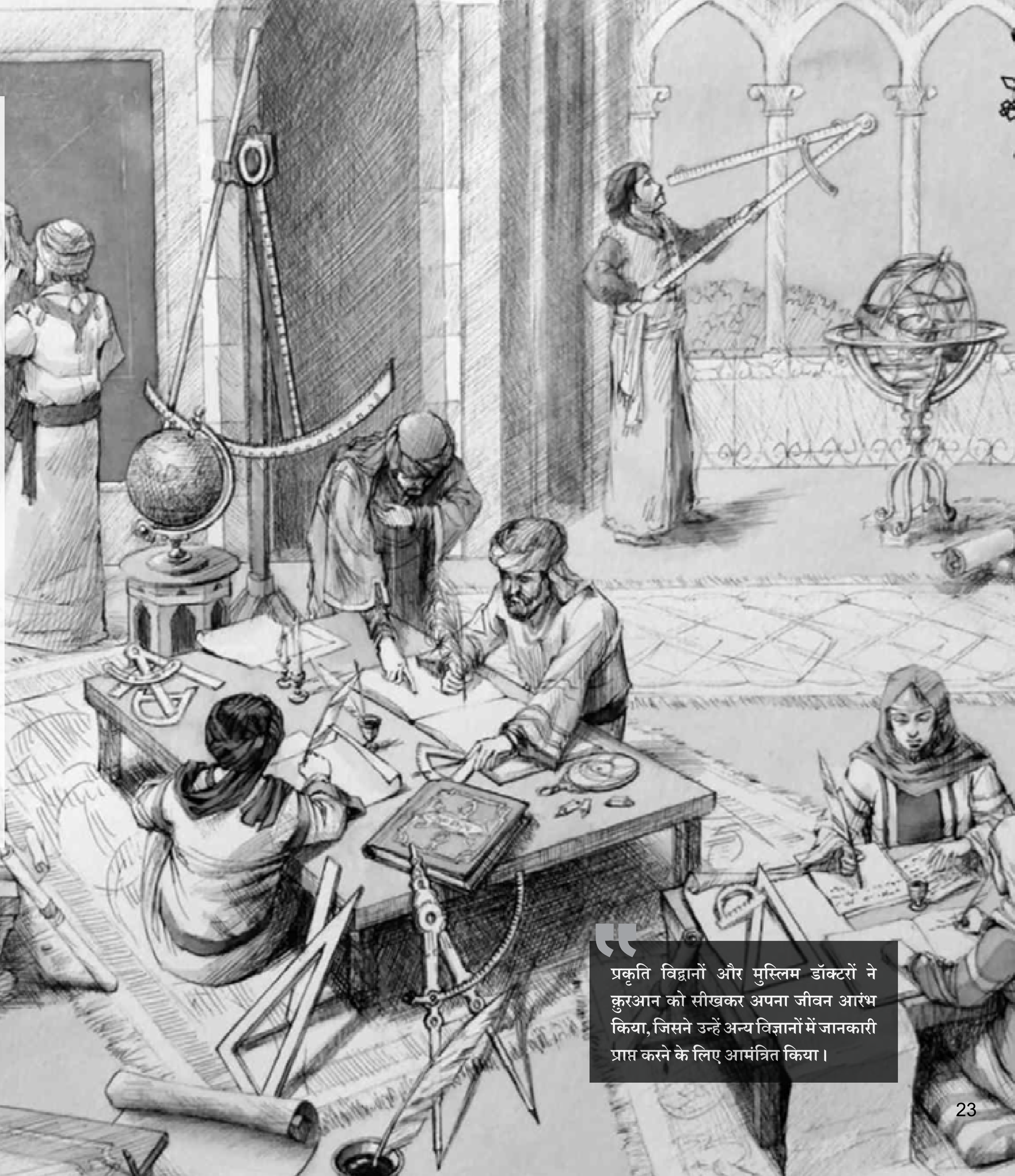

प्रकृति विद्वानों और मुस्लिम डॉक्टरों ने क़ुरआन को सीखकर अपना जीवन आरंभ किया, जिसने उन्हें अन्य विज्ञानों में जानकारी प्राप्त करने के लिए आमंत्रित किया।

**कुछ मुस्लिम विद्वानः**

१) **अल-ख्वार्ज़िमी (७९०-८५० बग़दाद) गणित,** इंजीनियरिंग और खगोल विज्ञान के विद्वान थे, और बीजगणित के संस्थापक भी हैं, और कम समय में ही उनकी पुस्तक का अनुवाद विभिन्न अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में किया गया था, बल्कि उन्हीं के प्रयास से Algebra और Zero (शून्य) अरबी भाषा से लैटिन भाषा में शामिल किया गया था।

२) **इब्नुल-हैषम (९६५-१०४० क़ाहिरा)** भौतिक और इंजीनियरिंग के विद्वान थे, उन्होंने विश्व प्रसिद्ध अज़हर विश्वविद्यालय में लंबे समय तक काम किया। ऑप्टिकल लेंस और प्रकाश रसायन शास्त्र के क्षेत्र में उन्होंने महान योगदान दिया है और कैमरा के आविष्कार का श्रेय उन्हीं को जाता है, अधिकांश शोधकर्ता इस बात को बताते हैं कि कैमरा "क़ुमरह" अरबी शब्द से बना है जिसे "प्रकाश कक्ष" कहा जाता है और यह भी इब्नुल-हैषम के आविष्कारों में से है।

३) **अल-बैरूनी (९७३-१०४८ ख्वारिज़्म)** खगोल विज्ञान के महान विद्वान् थे, पहले ऐसे विद्वान् हैं जिन्होंने कहा कि पृथ्वी घूमती है, और उन्होंने पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति की ओर इशारा किया था।

४) **अल-ज़हरावी (९३६-१०१३ स्पेन)** वह एक वरिष्ठ डॉक्टर और सर्जन थे, उनके हाथों सर्जरी का विकास हुआ है, और उन्होंने कई सर्जिकल उपकरणों का आविष्कार अपनी पुस्तकों में किया, यहाँ तक कि उनकी किताबें चिकित्सा और सर्जरी का मुख्य श्रोत बन गईं, और बाद में अनेक भाषाओं में उसका अनुवाद भी किया गया।

५) **इब्ने-सीना (९८०-१०३७ बुख़ारा)** यह वैज्ञानिक समुदाय (Avicenna) में चिकित्सक और दार्शनिक के रूप में प्रसिद्ध हैं, उन्होंने चिकित्सा विज्ञान में बीमारियों को पहचानने और उनका इलाज करने के कई प्रभावी तरीकों का आविष्कार किया है, अनुसंधान और चिकित्सा विज्ञान की सेवा सर्वोच्च स्थान पर है, यह शोध उस समय एक महत्वपूर्ण खोज था और आज हमारे बीच बनी हुई है, जैसा कि उनकी पुस्तक "अल-क़ानून" में स्पष्ट है, जो सात शताब्दी तक चिकित्सा के अध्ययन में मुख्य संदर्भ में बनी रही और सत्रहवीं शताब्दी के मध्य तक यूरोप के कई विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती रही।

एक वरिष्ठ डॉक्टर की पहचान होने के बाद उन्होंने विज्ञान और ज्ञान की कृपा के लिए अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए निःशुल्क सेवा शुरू की।।

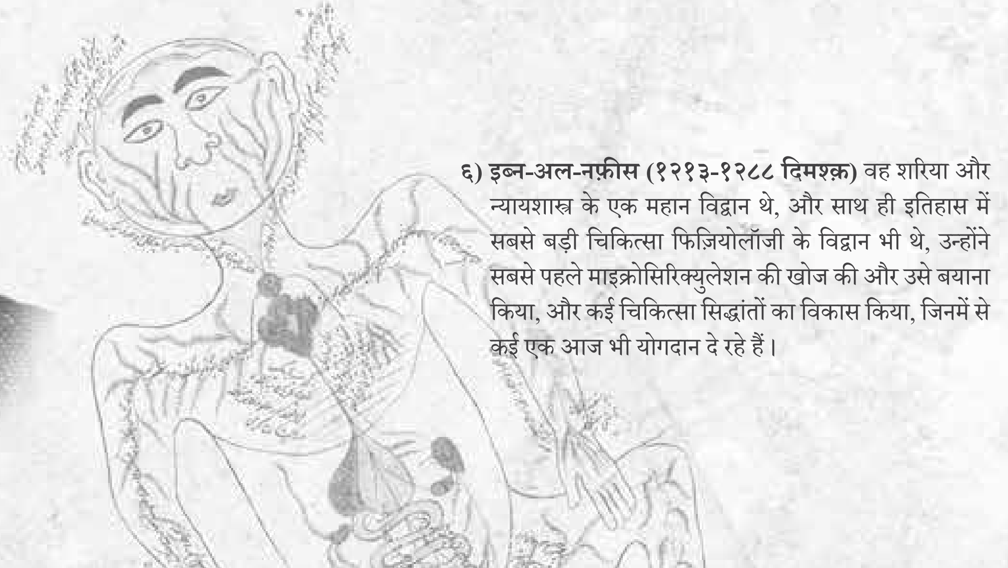

६) **इब्न-अल-नफ़ीस (१२१३-१२८८ दिमश्क़)** वह शरिया और न्यायशास्त्र के एक महान विद्वान थे, और साथ ही इतिहास में सबसे बड़ी चिकित्सा फिज़ियोलॉजी के विद्वान भी थे, उन्होंने सबसे पहले माइक्रोसिरिक्युलेशन की खोज की और उसे बयाना किया, और कई चिकित्सा सिद्धांतों का विकास किया, जिनमें से कई एक आज भी योगदान दे रहे हैं।

## इस्लाम सम्पूर्ण जीवन प्रणाली है:

बहुत से लोग आश्चर्यचकित रह जाते हैं जब उनको पता चलता है कि इस्लाम केवल अनुष्ठान, कार्य और सामान्य नैतिक निर्देश का नाम नहीं है जैसा कि दूसरे धर्मों में उन्होंने पाया है।

वास्तव, में इस्लाम केवल आध्यात्मिक आवश्यकता का नाम नहीं है जो मुसलमान मस्जिदों में नमाज़ और प्रार्थना के माध्यम से करते हैं..।

और न ही केवल विचार, विश्वास और दर्शन का नाम है जिसपर उसके अनुयायी आस्था रखते हैं..।

और न ही केवल आर्थिक प्रणाली या एक एकीकृत वातावरण का नाम है..।

और न ही समाज के निर्माण के लिए केवल नियम और आदेश का नाम है..।

और न ही आचरण, और दूसरों के साथ व्यवहार करने के लिए एक विचारधारा का नाम है..।

इसके बजाय, इस्लाम पूरे जीवन प्रणाली का नाम है, यह आशा, इच्छाओं और जीवन से संबंधित सभी पहलुओं को इकट्ठा किया है, और न ही लोगों की स्वतंत्रता को सीमित करता बल्कि उनको और सुविधा प्रदान करता है, जिससे रचनात्मकता, निर्माण और सभ्यता के प्रति प्रयासों पर ध्यान केंद्रित किया जा सके, और यह अल्लाह की ओर से अपने बन्दों पर अमूल्य वरदान है जैसा कि क़ुरआन में बयान किया गया है। (सूरतुल-मायेद:-३)

जब ग़ैर-मुसलमानों में से एक ने दूत मुहम्मद (स.) के एक साथी से मज़ाक उड़ाते हुए पूछा, जिनका नाम "सलमान अल-फ़ारसी" है कि: "तुम्हारा मित्र (यानी रसूल स.) तुमको सबकुछ सिखाता है, यहाँ तक कि मूत्र और मल के शिष्टाचार भी? तो आप के महान साथी ने उत्तर दिया: हाँ, हमने सीखा है, और फिर उन्होंने इस मामले में इस्लाम और नैतिकता के प्रावधानों का उल्लेख किया।" (मुस्लिम: २६२)

## लोक-परलोक:

प्राचीन समय के मिस्रियों में जब किसी की मृत्यु हो जाती थी तो अंतिम संस्कार के

> इस्लाम पूरे जीवन प्रणाली का नाम है, जिसने तमाम पहलुओं को एकत्रित किया।

समय उसकी क़ब्र में उसकी तमाम बहुमूल्य चीजें रख देते थे यह सोचकर कि मृत्यु के बाद उसके दूसरे जीवन में उसकी आवश्यकता पड़ेगी।

दूसरी ओर, तिब्बत के लोग अपने मरने वाले की शाओं को काटकर खानेवाले पक्षियों के लिए ऊँचे स्थान पर रख देते, और हिंदुओं में अभी भी मृतकों की शाओं को जलाया जाता है, इसलिए कि उनके आस्था के अनुसार – मृतक की आत्मा को शान्ति पहुँचाने का एक मात्र तरीक़ा यही है।

ये मृतक और अंतिम संस्कार के विभिन्न तरीक़ों के मात्र कुछ उदाहरण हैं, मृत्यु के पश्चात् विश्वास और धर्म के आधार पर, अलग-अलग समय और स्थान पर लोगों में मतभेद और भिन्नता पाई जाती थी, और यहाँ पर कई गहन प्रश्न हैं जिनका उत्तर ढूँढना आवश्यक है.. क्या कोई दूसरा जीवन भी है? इसकी प्रकृति क्या है? और हमें वहाँ किस चीज़ की आवश्यकता होगी ?

इसका कारण यह है कि मृत्यु एक महान सच्चाई है जिसपर सब लोग सहमत हैं और बिना अपवाद के हर किसी का इंतेज़ार कर रही है, चाहे हम दूसरे जीवन पर विश्वास रखते हों अथवा हमारा हिसाब-किताब हमारी इंद्रियों को छूने तक सिमित है.. चाहे हम उस महत्पूर्ण क्षण के लिए तैयार हों, या इसे भूलने की कोशिश की है और इसे बहुत व्यस्त होने और चिंताओं ने अनदेखा कर दिया है।

यह सवाल जो हर प्रकार की लापरवाही और विस्मृति का विरोध करता है, और जब भी मनुष्य थोड़ी देर ठहर कर अपने आपसे पूछता है.. क्या यही अंत है और इसके पश्चात् कुछ भी नहीं? क्या हमारे अस्तित्व से एक प्रकार की छेड़छाड़ है?

यह एक प्रश्न है जो बार-बार हमारे मन में आता है और क़ुरआन ने उसे अलग-अलग प्रकार से दोहराया है। और इसी समय कुछ लोगों के पश्चाताप और अफ़सोस के बारे में भी सूचित किया गया क्यूंकि उन्होंने अपने आप को उस प्रश्न के उत्तर के लिए तैयार नहीं रखा और न ही परलोक की तैयारी की थी, उस समय कुछ लोग कहेंगे "काश, कि मैंने इस जीवन के लिए कुछ (नेकी के काम) पहले से कर रखे होता" (सूरतुल फ़ज्र: २४) और दूसरा कहेगा: "काश कि मैं मिट्टी बन जाता"।" (सूरतुन नबा: ४०)

और यह बात स्पष्ट है कि तमाम आकाशीय धर्म ग्रन्थों के लोग परलोक, स्वर्ग और नर्क पर विश्वास और आस्था रखते हैं, इसलिए कि यह सम्पूर्ण संदेशवाहकों का सार और ख़ुलासा है, और बुद्धि इस बात को स्वीकार नहीं करती कि बिना दूसरे जीवन का जिसमें हिसाब व किताब हो और प्रत्येक मनुष्य को उसके कर्म के अनुसार पूरा बदला मिले, जीवन, धर्म और नैतिकता का कोई अर्थ नहीं रह जाता है।

इसी के साथ बहुत सारे लोग यह सोचते हैं कि धर्म और पूजा-उपासना को पैसे, ख़ुशी और विकास के साथ जोड़ा नहीं जा सकता, कार्य या तो दुनिया के लिए हो या परलोक के लिए, एक साथ और एक ही समय में दोनों को एकत्रित नहीं कर सकते जैसे दिन और रात का होना एक साथ संभव नहीं है, यह क्षण या तो यहाँ के लिए हो या वहाँ के लिए...

> सभी आकाशीय धर्म परलोक के जीवन पर विश्वास रखते हैं और इस बात पर भी कि वहाँ लोगों को उनके कर्मो के अनुसार इनाम और सज़ा दी जाएगी।

पूजा-उपासना और शारीरिक ख़ुशी के बीच इस्लाम में कोई बाधा और विरोधाभास नहीं होने पर बहुत से लोग आश्चर्यचकित हैं... दूत मुहम्मद (स.) हमें बताते हैं कि "यदि मनुष्य जब कोई सही काम करता है चाहे किसी भी रूप में हो और उसकी नीयत अच्छी हो तो उसको परलोक में पुण्य मिलेगा, भले ही वह रास्ते से काँटा हटा दे या प्यार से अपनी पत्नी के मुंह में थोड़ा सा खाना ही डाल दे तो उसे पुण्य मिलेगा!।" (बुख़ारी : ५६)

मैसेंजर मुहम्मद (स.) धार्मिकता और पुण्य के कार्यों का वर्णन करते हुए अपने दोस्तों से वर्णन करते हैं और कहते हैं कि अच्छे कर्मों के दरवाज़े अंतहीन के रूप में ख़त्म नहीं होते हैं तो उनके साथी आश्चर्यचकित रह गए और आप ने कहा "जब कोई भी तुम्में से अपनी पत्नी से संभोग करता है तो उसको पुण्य मिलता है। तो आप के एक साथी ने कहा: संभोग और पुण्य का क्या सम्बंध है? तो मुहम्मद (स.) ने कहा "तुम्हारा क्या कहना है कि अगर उसने अपनी इच्छा हराम जगह में पूरी की तो क्या उसने पाप नहीं कमाया, तो लोगों ने कहा क्यों नहीं, तो मुहम्मद (स.) ने कहा कि उसी प्रकार सही तरीक़ा से इच्छा पूरी करने पर पुण्य भी मिलेगा।" (मुस्लिम : १००६)

इसलिए, जो लोग पहले से इस्लाम को जानते हैं, वे इस तथ्य को भी जानते हैं कि लोक और परलोक के जीवन में संतुलन की क्या वास्तविकता है जैसा कि क़ुरआन ने उसका आचरण किया है, एक ही समय में लोगों को पूजा और उपासना पर उभारा जाता है ताकि परलोक में उसका अच्छा बदला मिले तो वहीँ अल्लाह के फ़ज़ल से दुनिया प्राप्त करने पर भी ज़ोर देता है। (सूरतुल जुमअ: ९-१०) और वह पुण्य का हक़दार होगा जब उसका इरादा अल्लाह की उपासना करना हो, और जिस प्रकार से नमाज़ पढ़ना, उपवास रखना, ग़रीबों को दान देना इबादत और उपासना है उसी प्रकार से कठिन परिश्रम, कमाई, बच्चों की देख-भाल, उनकी शिक्षा का प्रबंध करना, राष्ट्र निर्माण और समाज निर्माण भी उसकी पूजा उपासना है।

> क़ुरआन संतुलन पर ज़ोर देता है, एक ही समय में लोगों को पूजा और उपासना पर उभारा जाता है ताकि परलोक में उसका अच्छा बदला मिले तो वहीँ अल्लाह के फ़ज़ल से दुनिया प्राप्त करने पर भी ज़ोर देता है।

यह मनोवैज्ञानिक आश्वासन और आंतरिक शान्ति के रहस्यों में से एक है, जिसे मुस्लिम पाता है जब वह अपने लोक और परलोक के जीवन और ख़ुशी और उपासना के बीच सद्भाव को महसूस करता है, और आपस में कोई मतभेद भी नहीं है बल्कि एकीकृत इमारत एक-दूसरे का समर्थन करती है।

इसलिए क़ुरआन हमें मुस्लिम के आदर्श वाक्य की पुष्टि करता है, कि जिसका पूरा जीवन ही उपासना है और इसे घोषणा करते हुए कहता है कि: मेरा पूरा जीवन सभी परिस्थितियों में अल्लाह की पूजा-उपासना है। मेरी नमाज़ और पूजा-उपासना न केवल अल्लाह के लिए है, बल्कि मेरे जीवन की सभी स्थितियों की गणना अल्लाह द्वारा की जाती है। वह मेरे कार्यों का न्याय करेगा और मेरी मृत्यु के बाद मुझे उसका बदला मिलेगा, इसलिए मैं अल्लाह के आदेशों का पालन करता हूँ, और उसका धर्म इस्लाम है।

**संचार और साझा करने का धर्म:**

रूस, डेनमार्क और स्कैंडिनेवियाई देशों के बड़े हिस्सों के लिए मुस्लिम यात्री अहमद बिन फ़ज़लान का विवरण लोगों के जीवन की वास्तविकता का पहला सटीक वर्णन और विश्लेषण समझा जाता है, और दुनिया को इन देशों के बारे में ज्ञात हुआ।

और वह इसलिए कि अहमद बिन फ़ज़लान ने ९२१ ई० में अद्भुत यात्रा की जो मध्य युग में सांस्कृतिक संचार की सबसे महत्वपूर्ण यात्राओं में से एक मानी जाती है, और बग़दाद (उस समय विज्ञान और सभ्यता की राजधानी) से निकले, और बड़ी संख्या में कई देशों और लोगों का दौरा किया, पहली बार प्रकाशित एक पुस्तक में अपने अवलोकन और घटनाओं को एक महान पुस्तक में दर्ज किया जो १९२३ ई० में प्रकाशित हुई, रूस में पाई गई पांडुलिपि की प्रति के आधार पर।

अमेरिकी वैज्ञानिक माइकल क्रिकटन के रूप में इब्ने फ़ज़लान के लेखन के महत्वपूर्ण कारण यह है कि बगदाद में मुस्लिम अपने धर्म के अनुपालन में सख़्त थे, जो उपस्थिति, व्यवहार और आस्था में अलग-अलग लोगों के लिए खुले थे। उस समय वे क्षेत्रीय लोग थे और इससे उन्हें विदेशी संस्कृतियों के गवाह बनने पर प्रेरित किया।

माइकल क्रिचटन (मृतकों के ईटर)

> इस्लाम लोगों को भवन, सभ्यता और सुधार में लोगों को भागीदारी की ओर आमंत्रित करता है, और उनके धर्म, सांस्कृतियों के मतभेद के बावजूद उनके साथ अच्छे व्यवहार से मिलने पर ज़ोर देता है, और चेतावनी देता है कि लोगों से अलगाव और दूरी इस्लाम का सही मार्ग नहीं है, इसीलिए अल्लाह के दूत मुहम्मद (स.) ने कहा है कि जो लोगों से मिलता है और उनके कष्ट और ग़लतियों पर धैर्य रखता है उससे बेहतर है जो लोगों से न मिलता हो और उनसे दूर रहता हो। (इब्ने-माजह:४०३२)

# एक निर्माता.. एक ईश्वर

इस्लाम इस बात पर ज़ोर देता है कि केवल सैद्धांतिक विश्वास ही आस्था के लिए पर्याप्त नहीं है। अगर निर्माता, जन्मदाता एक है, तो पूज्य योग्य ईश्वर भी एक ही होना चाहिए।

**अरबी में (अल्लाह) शब्द का तीन अर्थ है**

- एक अर्थ यह है कि "सत्य ईश्वर" जिसकी पूजा की जाती है और नमाज़, उपवास और सभी प्रकार की पूजा-उपासना उसी के लिए है।
- अपनी ज़ात और गुणों में अति-महान है, और बुद्धि उसकी महानता तक पहुँचने में असमर्थ है।
- और सत्य ईश्वर वह है जिससे दिल जुड़ जाए और लोग उसी की ओर मायल हों, और उसको याद करने, उसके निकट होने और पूजा-उपासना से मन को शान्ति मिलती है।

क़ुरआन ने ईश्वर के बारे में सही धारणा पर ज़ोर दिया है और उसे सभी झूटे आरोपों से पवित्र माना जाए जो उसकी गरिमा के अनुरूप न हो..।

अल्लाह ही इस संसार का निर्माता है जैसा कि क़ुरआन स्पष्ट रूप से बयान करता है, इस संसार में छोटी से छोटी चीज़ का भी निर्माता वही है उसकी इच्छा और ज्ञान के बिना कोई भी चीज़ नहीं है, समस्त सृष्टि की जो भी मादा अपने बच्चे को जन्म देती है तो वह उसके ज्ञान में होता है, और वर्षा में एक बूंद पानी, और दिन एंव रात्रि में कोई भी परिवर्तन, चाहे मालून हो या न हो उसकी इच्छा और ज्ञान के बिना संभव नहीं है, अल्लाह की क्षमता, दया और उसका ज्ञान उसको घेरे हुए है। (सूरतु-फ़ुस्सेलत:४७- अंआम: ५९)

उसके सबसे अच्छे और सबसे पूर्ण और सुंदर गुण हैं, वह शक्तिशाली है जिसको पराजित नहीं किया जा सकता, और दयालू है जिसकी दया हर चीज़ को सम्मिलित है, और बहुत महान है जिसमें किसी प्रकार की कोई कमी नहीं।

और जब कुछ लोगों ने दावा किया कि ईश्वर (अल्लाह) ने छह दिनों में आकाश और पृथ्वी बनाई और फिर सातवें दिन विश्राम किया, क़ुरआन ने इन दावों का स्पष्ट रूप से खंडन किया: "बेशक हम ने आकाशों और धरती और दोनों के बीच की जो कुछ चीजें हैं, सबको (केवल) छ: दिन में पैदा कर दिया और हमें थकान ने स्पर्श (छुआ) तक नहीं किया।" (सूरतु क़ाफ़: ३८) और यह उपज और दावा इसलिए

> क़ुरआन इस बात की पुष्टि करता है कि सब कुछ ईश्वर (अल्लाह) के ज्ञान और क्षमता के साथ होता है, यहाँ तक कि बारिश की बूंदें और पेड़ की पत्तियां भी गिरती हैं तो उसका ज्ञान उसको होता है।



> इस्लाम में सबसे स्पष्ट मुद्दा अकेले ईश्वर की पूजा करना है, और समस्त ईशदूतों का यही सन्देश था जैसा कि क़ुरआन बयान करता है।

लोगों के दिमाग़ आया क्यूंकि उन्होंने ने निर्माता और प्राणी में समानताएं दे दीं, जबकि ईश्वर ही निर्माता है और उसके अतिरिक्त सबके सब सृष्टि हैं तो ईश्वर और उसके प्राणियों में समानता कैसे की जा सकती है "उस जैसी कोई चीज़ नहीं है, वह सुनने वाला देखने वाला है।" (सूरतुश्शूरा:११)

और वह अल्लाह लोगों के साथ न्याय करने वाला है, किसी के साथ कण के बराबर भी अन्याय नहीं करता जैसा कि हम अपने जीवन में उसकी दया और ज्ञान को देख रहे हैं, जैसे छोटा बालक अपने माता-पिता के बहुत सारे कार्यों को नहीं समझ सकता, क्यूंकि दोनों की सोच और क्षमता में महान अंतर पाया जाता है, तो ईश्वर की रचनाओं और इच्छाओं को मनुष्य की बुद्धि पूरे रूप से समझ पाने में असमर्थ है।

इस्लाम इस बात पर ज़ोर देता है कि केवल सैद्धांतिक विश्वास ही आस्था के लिए पर्याप्त नहीं है। अगर निर्माता, जन्मदाता एक है, तो पूज्य योग्य ईश्वर भी एक ही होना चाहिए, इसलिए किसी भी प्रकार की पूजा-उपासना अथवा प्रार्थना सत्य ईश्वर को छोड़ कर किसी और केलिए करना उचित नहीं है, बल्कि बिना किसी वास्ता के पूरे एख़्लास के साथ उसी की उपासना करना, इसलिए कि निर्माता उससे बहुत बड़ा है।

जब इस संसार में राजा अथवा राष्ट्रपति के लिए यह संभव नहीं है कि वह लोगों की आवश्यकताओं और ज़रूरतों को नहीं जान सकता और बिना सहायक और सहयोगियों के उनतक नहीं पहुँच सकता ताकि उनकी स्थिति से अवगत होकर उनकी सहायता कर सके, जबकि सत्य ईश्वर (अल्लाह) हर छुपी और ज़ाहरी चीजों को जनता है, और वह मज़बूत और सक्षम मालिक है, और हर चीज़ पर उसकी पकड़ है, और जब वह किसी कार्य को करना चाहता है तो केवल कहता है "हो जा" तो वह हो जाती है..... तो फिर उसको छोड़ कर दूसरों के पास जाने की क्या आवश्यकता है?।

क़ुरआन इस बात को निर्धारित करता है कि जब तक मुस्लिम अपनी आवश्यकताओं को सत्य ईश्वर के शरण में लेकर नहीं जाता उस समय तक उसको शान्ति और समृद्धि प्राप्त नहीं होती, और वह शक्तिशाली और महान है, अपने बन्दों से बहुत प्रेम करता है और उनके बहुत निकट है, और जब कोई भी उससे दुआ और प्रार्थना करता है तो वह उससे बहुत प्रसन्न होता है, और उनको उनकी आवश्यकताओं के अनुसार देता भी है। (सुरतुल-बक़रह:२८ नमल:६२-६३)

इसलिए इस्लाम में सबसे स्पष्ट मुद्दा अकेले एक ईश्वर की पूजा-उपासना करना है। (सूरतुल-नहल:३६) और समस्त दूतों का यही सन्देश था जैसा कि क़ुरआन बयान करता है। कोई संदेशवाहक, फ़रिश्ता, वली चाहे वह किसी भी योग्यता को पहुँचे हों, उनको पुकारना अथवा वास्ता बनाना जाएज़ नहीं है क्यूंकि वह भी सत्य ईश्वर के प्राणियों में से हैं, और अल्लाह ही की उपासना करने वाले हैं। जबकि अल्लाह अपने बन्दों से क़रीब है और उनकी बातों को सुनता है, और उनकी प्रार्थनाओं को स्वीकार करता है।

उस व्यक्ति को सौभाग्य और ख़ुशहाली अवश्य प्राप्त होगी जो केवल एक सत्य ईश्वर की पूजा करता है, उसके लिए कोई परेशानी नहीं होगी। जब मालिक एक, निर्माता एक, पूज्य योग्य भी एक है तो दुआ और प्रार्थना भी केवल उसी से करनी चाहिए।

क़ुरआन की सबसे प्रसिद्ध और महान सुरह "सूरतुल एख़्लास" का यही अर्थ भी है।

### सूरतुल एख़्लास

अल्लाह ने अपने नबी को स्पष्ट रूप से हुक्म दिया कि वह लोगों को बताएं कि अल्लाह कौन है? ।

- अल्लाह एक ही है उसकी पूजा-उपासना में कोई भागीदार नहीं ।
- अल्लाह वह है जो किसी पर निर्भर नहीं रहता बल्कि सभी प्राणी अपनी आवश्यकताओं केलिए उसी पर निर्भर रहती हैं ।
- न उसकी कोई संतान है और न ही वह किसी का संतान है और उससे पहले कोई भी चीज़ नहीं ।
- उसकी ज़ात और गुणों में कोई समकक्ष या समान नहीं क्योंकि वह निर्माता है और उसके अतिरिक्त सब उसकी प्राणी हैं ।

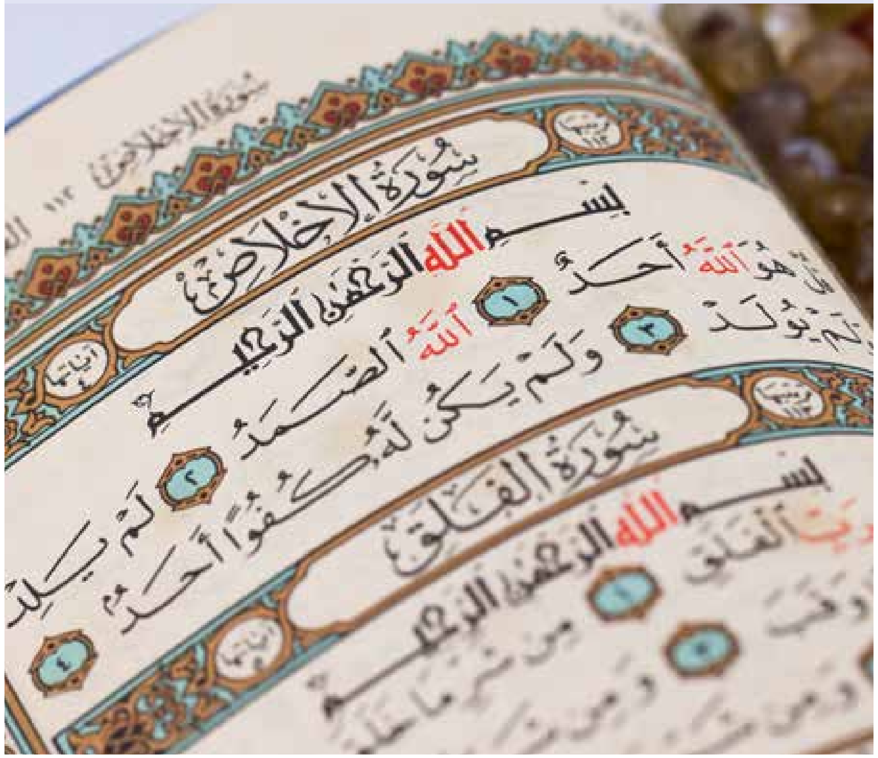




### इस्लाम और प्राकृतिक सिद्धांतों में कोई विरोधाभास नहीं है

अल्लाह ने इस संसार को एक छोटे कोष (cell) से बनाया है, जिसमें हम रहते हैं, और छोटा कोष जिसे आज के विज्ञान के अत्याधुनिक माइक्रो-ऑडियंस के माध्यम से खोजने में सक्षम हुए । जिसने इस विशाल पृथ्वी को एक बहुत ही नियमित और व्यवस्थित तरीक़े से चलाया है । और सभी प्राकृतिक वैज्ञानिकों ने पुष्टि की है कि यदि इस प्रणाली में कोई असंतुलन, और बाधा आई तो यह पृथ्वी को अनिवार्य रूप से विनाश और बर्बादी की ओर ले जाएगा..।

मुस्लिम का मानना है कि जिस निर्माता ने इस अद्भुत प्रणाली को अपनी सटीकता और कठोरता से बनाया है, वह इस बात को जनता है कि जीवन प्रणाली के लिए कौन सा क़ानून अच्छा होगा । वह धर्म जो उसने इंसानियत के लिए चुना है जिसमें मानव जाति की भलाई और सफलता है, और अल्लाह ने क़ुरआन में स्पष्ट रूप में बयान कर दिया है कि जिसने इस संसार और मनुष्यों का निर्माण किया वही उनके बारे में अधिक ज्ञानी है कि उनके लिए क्या उचित है: “क्या वही न जाने जिसने पैदा किया? फिर वह बारीक देखने और जानने वाला भी हो ।” (सूरतुल-मुल्क:१४)

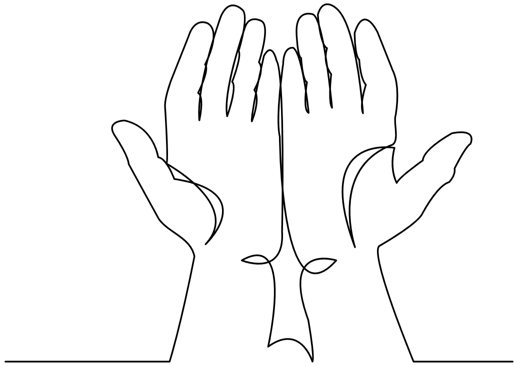

**इस्लाम में भक्त और प्रभू के बीच में कोई माध्यम नहीं**

जबकि हम देखते हैं कि कई धर्मों ने कुछ लोगों को धार्मिक रूप से विशेष स्थान (पण्डित, पूजारी, पादरी और धर्मगुरू) दिया है, और उन व्यक्तियों और उनकी सहमति को लोग अपनी आस्था और पूजा से जोड़ कर देखते हैं, वे उन धर्मों के अनुसार उनके और ईश्वर के बीच मध्यस्थ हैं, जो क्षमा देते हैं, और अदृश्य (ग़ैब) जानते हैं – जैसा कि इस पर उनकी आस्था है - और उनके उल्लंघन और विरोध को नुक़सान का कारण बताते हैं।

इस्लाम ने धार्मिक रूप से किसी भी व्यक्ति को ऐसा विशेष स्थान नहीं दिया है। परन्तु मनुष्य को सम्मान और उच्च स्थान दिया, इस्लाम ने भक्त और ईश्वर के बीच आध्यात्मिक माध्यम से लोगों को स्वतंत्र कर दिया है। यहाँ तक कि मानव की ख़ुशी, पूजा-उपासना और क्षमा-याचना में किसी भी व्यक्ति के दख़ल को सही नहीं ठहराया चाहे वह धार्मिक रूप से जितना भी महान हो।

इसी प्रकार उनको इस बात से भी स्वतंत्रता प्रदान की है कि धार्मिक ज्ञान केवल किसी विशेष जाति और समुदाय से ही सम्बंधित नहीं है और धार्मिक ज्ञान प्राप्त करना यह आपका अपना अधिकार ही नहीं बल्कि सर्वप्रथम अधिकार और अनिवार्यता में से है जैसा कि क़ुरआन स्पष्ट रूप से मुस्लिमों को क़ुरआन सीखने और फिर उसके अनुसार चलने का हुक्म देता है। (सूरतु-साद:२९)

पूजा-उपासना और आस्था मनुष्य और उसके ईश्वर के बीच है, और किसी को भी किसी पर महत्व नहीं दिया गया है। बेशक अल्लाह अपने बन्दों से क़रीब है और उनकी प्रार्थनाओं को सुनता और स्वीकार करता है। उसकी पूजा-उपासना और नमाज़ को देखता है और पुण्य भी देता है। मनुष्यों में से किसी को भी क्षमा और पश्चाताप जारी करने का अधिकार नहीं है, इसलिए बन्दा जब भी क्षमा और तौबा करना चाहे, ईश्वर उसकी तौबा को क़बूल करेगा और उसको क्षमा करदेगा। अल्लाह अपने बन्दों के बहुत निकट है जब वे उसके पास जाते हैं और उसे पुकारते हैं, जैसा कि क़ुरआन में अल्लाह ने बयान किया है। (सूरतुल-बक़रह:१८६)

> इस्लाम ने मनुष्य को सम्मान और उच्च स्थान दिया, इस्लाम ने भक्त और भगवान के बीच आध्यात्मिक माध्यम से लोगों को स्वतंत्र कर दिया है। यहाँ तक कि मानव की ख़ुशी, पूजा-उपासना और क्षमा-याचना में किसी भी व्यक्ति के दख़ल को सही नहीं ठहराया चाहे वह धार्मिक रूप से जितना भी महान हो।

> क़ुरआन इस बात को निर्धारित करता है कि जब वे उसके पास जाते हैं और उसे पुकारते हैं तो ईश्वर हर किसी के क़रीब है।

**क्या इस्लाम में प्रवेश करने के लिए कोई विशेष अनुष्ठान है?**

इस्लाम में प्रवेश होने केलिए कोई जटिल और विशेष अनुष्ठान नहीं है जिससे वह आश्वस्त हो जाए, और न ही यह अनिवार्य है कि किसी निजी स्थान पर या विशिष्ट व्यक्तित्व की उपस्थिति में नहीं होना चाहिए। बल्कि उसके लिए यही पर्याप्त है कि जब उसकी इच्छा हो तो "शहादतैन" का अर्थ जानते हुए, उसपर विश्वास रखते हुए ज़बान से कहे:

अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाह (अर्थात मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य ईश्वर नहीं, मैं केवल उसी की पूजा-उपासना करूँगा जिसका कोई भागीदार नहीं।

व अश्हदु अन्न मुहम्मदर् रसूलुल्लाह (मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (स.) अल्लाह के अंतिम संदेशवाहक है, अब मैं उनका पूरी तरह से पालन करूँगा और उनके अतिरिक्त किसी और का अनुसरण नहीं करूँगा)।

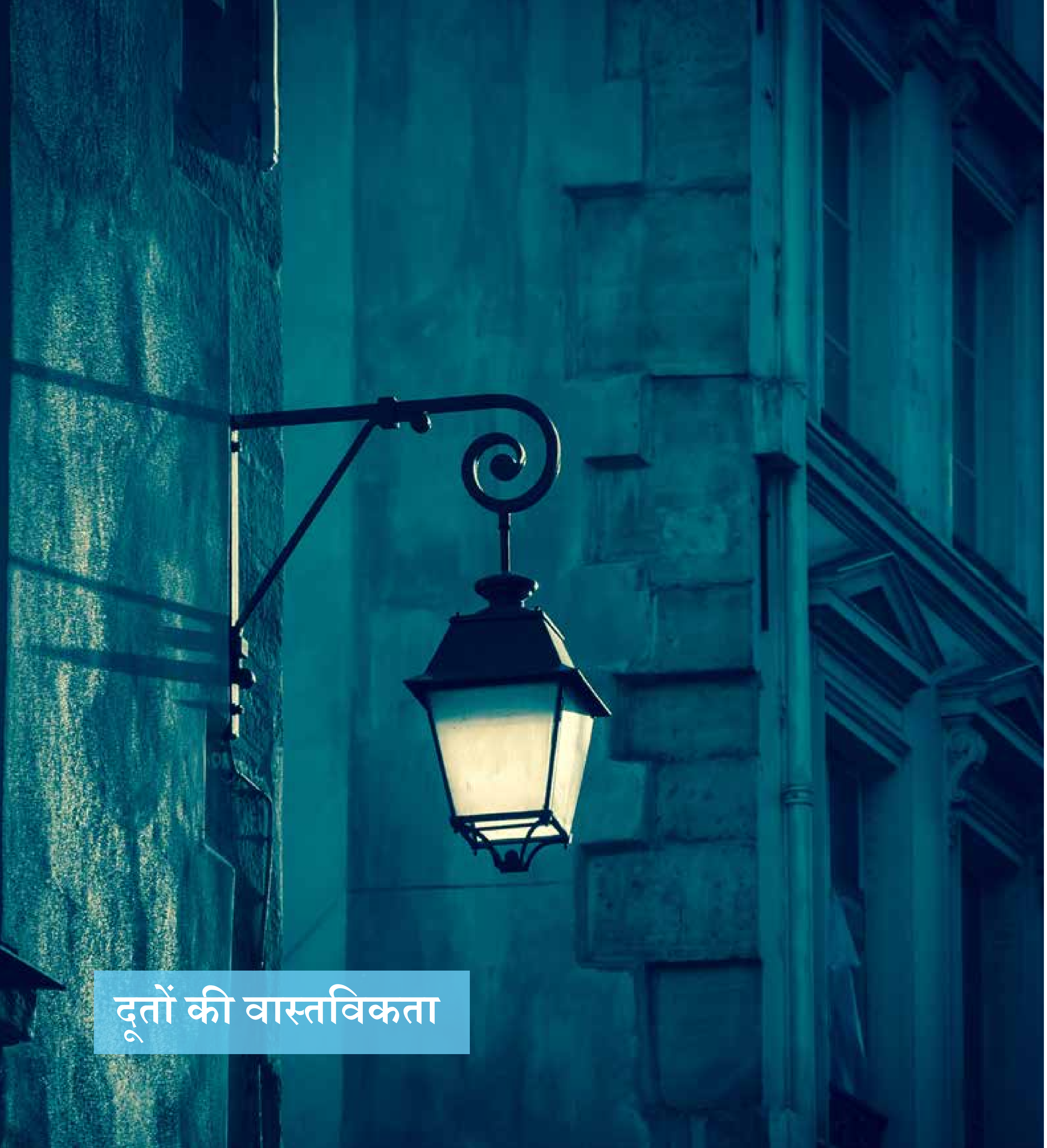

# दूतों की वास्तविकता

अल्लाह ने लोगों को अपनी पूजा-उपासना केलिए पैदा किया है। और उन्हें ईश्वरीय नियन सिखाने केलिए दूत और संदेष्टा भेजा। वे लोगों के धर्म और उनके जीवन में सुधार करने के लिए कार्य करते हैं। और वे अपने समुदाय केलिए एक आदर्श बनें, विचलन का विरोध करें, और लोगों को सत्य मार्ग की ओर आमंत्रित करें। ताकि लोगों को उनपर आस्था (ईमान) न रखने का कोई बहाना न बन सके ..। तो इन दूतों की वास्तविकता क्या है?

## समस्त दूत मानव ही थे:

क़ुरआन के कई श्रोतों में इस बात की पुष्टि की गई है कि सम्पूर्ण दूत मानव ही थे, अल्लाह ने उन्हें प्रकाशन और संदेशवाहक केलिए ख़ास (विशेष) कर लिया था। हमारे और भविष्यवक्ताओं के बीच मानव समानता अवश्य है, परन्तु वे शुद्धता और अखंडता के साथ उच्च श्रेणी पर हैं। अल्लाह ने उनको अपना संदेश और धर्म मानव जाति में पहुँचाने केलिए चुन लिया था। जैसा कि क़ुरआन में आया है कि: "आप कह दीजिए कि मैं तो तुम जैसा ही एक इंसान हूँ (हाँ) मेरी ओर प्रकाशना (वह्यी) की जाती है।" (सूरतुल-कहफ़: ११०)

अत: सम्पूर्ण दूत मानव ही हैं। जैसे मानव का जन्म हुआ वैसे उसका भी जन्म हुआ। जैसे हमारी मृत्यु होती है वैसे ही उनकी भी मृत्यु होती है। हमारे जैसे वह भी बीमार होते हैं। शारीरिक बनावट और आवश्यकताओं में तनिक भी हम से भिन्न नहीं हैं।

उनमें दिव्यता की कुछ भी विशषता नहीं है, इसलिए कि दिव्यता केवल सत्य ईश्वर (अल्लाह) केलिए है। बस वह मानव हैं जिनकी ओर प्रकाशन किया जाता है, उनकी ओर फ़रिश्तों अथवा किसी और माध्यम से अल्लाह का संदेश पहुँचाया जाता है।

पहले तो उनके समुदाय के लोग प्रकाशन (वह्यी) से आश्चर्यचकित रह गए, तो अल्लाह ने उसका खंडन किया और इस बात को स्पष्ट किया कि लोगों के मार्गदर्शन और धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने का यही एक विकल्प और रास्ता है। (सूरतु-यूनुस:२)

## दूत वर्ग में मध्यस्तता:

अल्लाह ने अपना संदेश पहुँचाने केलिएय सर्वेष्ठतम लोगों का चयन किया। वह शुद्धता और अखंडता के साथ उच्च श्रेणी के मनुष्य थे। क़ुरआन ने उन्हें निर्देशित, धैर्य, नेक लोग, चयन किये गए और तमाम लोगों पर सर्वेष्ट घोषित किया है। सूरतुल-अंआम:८४-८७)

यदि किसी दूत से कोई ग़लती हो गई तो, अल्लाह उसे स्वीकार नहीं करता है, बल्कि उन्हें वापस लौटने और पश्चाताप करने की चेतावनी देता है। और यह जान-बूझ कर नहीं बल्कि अंजाने में ऐसा होता है।

> क़ुरआन इस बात की पुष्टि करता है कि सम्पूर्ण दूत मानव ही थे, अल्लाह ने उन्हें प्रकाशन और संदेशवाहक केलिए विशेष कर लिया था।

इस प्रकार, हम क़ुरआन में देखते हैं कि भविष्यवक्ताओं का एक उत्कृष्ट और बहुत विनम्र स्थान बयान किया है। न उनके मर्यादा में अतिशयोक्ति किया गया है और न ही अपमानित। वे महान पापों से पवित्र हैं, फिर भी वे इंसान हैं, न कि देवता। न ही देवताओं के पुत्र हैं और दिव्यता और देवता की कोई विशेषता उनमें नहीं है।

क़ुरआन में अल्लाह ने जो बयान किया है उससे और स्पष्ट प्रमाण मिलता है कि महाप्रलय के दिन अल्लाह और ईसा (अ.) के बीच वार्तालाप होगी, जिसमें यह वर्णन किया गया है कि जो ईसा और उनकी माता मरियम की पूजा करते थे उनसे उनका कोई सम्बंध नहीं है: "और जबकि अल्लाह कहेगा कि हे ईसा इब्ने मरियम, क्या तुम ने उन लोगों से कह दिया था कि मुझ को और मेरी माँ को अल्लाह के सिवाय देवता बना लेना? (ईसा) कहेंगे कि मैं तो तुझे पवित्र समझता हूँ, मुझको किस प्रकार यह बात शोभा देती कि मैं ऐसी बात कहता जिसके कहने का मुझको कोई अधिकार नहीं, अगर मैंने कहा होगा तो तुझे उसका ज्ञान होगा, तू तो मेरे दिल की बात जनता है, मैं तेरे जी में जो कुछ है उसको नहीं जानता, केवल तू ही ग़ैबों का जानकार है। मैंने उनसे केवल वही कहा जिसका तूने मुझे हुक्म दिया कि अपने रब और मेरे रब अल्लाह की पूजा-उपासना करो, और जब तक मैं उनमें रहा उनपर साक्षी रहा और जब तूने मुझे उठा लिया तो तू ही उनका संरक्षक था और तू हर चीज़ पर साक्षी है। (सूरतुल-मायदा: ११६-११७)



## इस्लाम में दूतों का स्थान:

कुछ लोग सोचते हैं कि क़ुरआन में केवल मुहम्मद (स.) की कहानियां और ख़बरें हैं और वे उस समय आश्चर्यचकित रह जाते हैं जब उन्हें इस बात का पता चलता है कि क़ुरआन ने ईसा (अ.) की महानता को देखते हुए और उनपर लगे झूटे आरोपों का खण्डन २५ बार किया गया है। और मूसा (अ.) का नाम १३६ बार आया है, जबकि मुहम्मद (स.) जिनपर क़ुरआन अवतरित किया गया उनका नाम केवल ५ बार आया है।

> क़ुरआन से परिचित हर व्यक्ति इस बात को जानता है कि उसके अध्यायों का नाम कई भविष्यवक्ताओं के नाम पर रखा गया है जैसे: इब्राहीम, यूसुफ़ बल्कि अल्लाह ने ईसा (अ.) की पवित्र माँ (मरियम) के नाम पर ही एक अध्याय का नाम "मरियम" रख दिया।

> क़ुरआन ने ईसा (अ.) की महानता को देखते हुए और उनपर लगे झूटे आरोपों का खण्डन २५ बार किया है। और मूसा (अ.) का नाम १३६ बार आया है, जबकि मुहम्मद (स.) जिनपर क़ुरआन अवतरित किया गया उनका नाम केवल ५ बार आया है।

जबकि अधिकांश धर्मों के लोग अपने दूत को छोड़ कर किसी और दूत को नहीं जानते, बल्कि उनमें से कुछ अन्य दूसरे दूतों का विरोध भी करते हैं। जबकि क़ुरआन का अध्ययन करने वाला इस बात को जानता है कि कई छंदों में इस बात को प्रमाणित किया गया है कि सम्पूर्ण दूतों पर ईमान और विश्वास के बिना कोई भी व्यक्ति मुसलमान नहीं हो सकता, और अगर उनमें से किसी का इंकार किया या उनके संदेष्टा होने में शंका व्यक्त की या उनपर झूटे आरोप लगाए तो वह इस्लाम से निकल जाता है। इसलिए क़ुरआन इस बात की पुष्टि करता है कि दूत और जो उनपर विश्वास लाने वाले हैं वह अल्लाह की ओर से आई हुई चीज़ पर ईमान लाए, इसलिए वह अल्लाह उसके फ़रिश्तों और दूतों पर ईमान रखते हैं और उनमें से किसी के ईमान में अंतर नहीं करते।

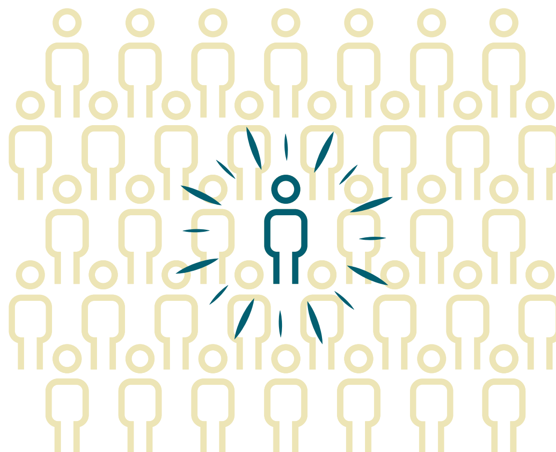

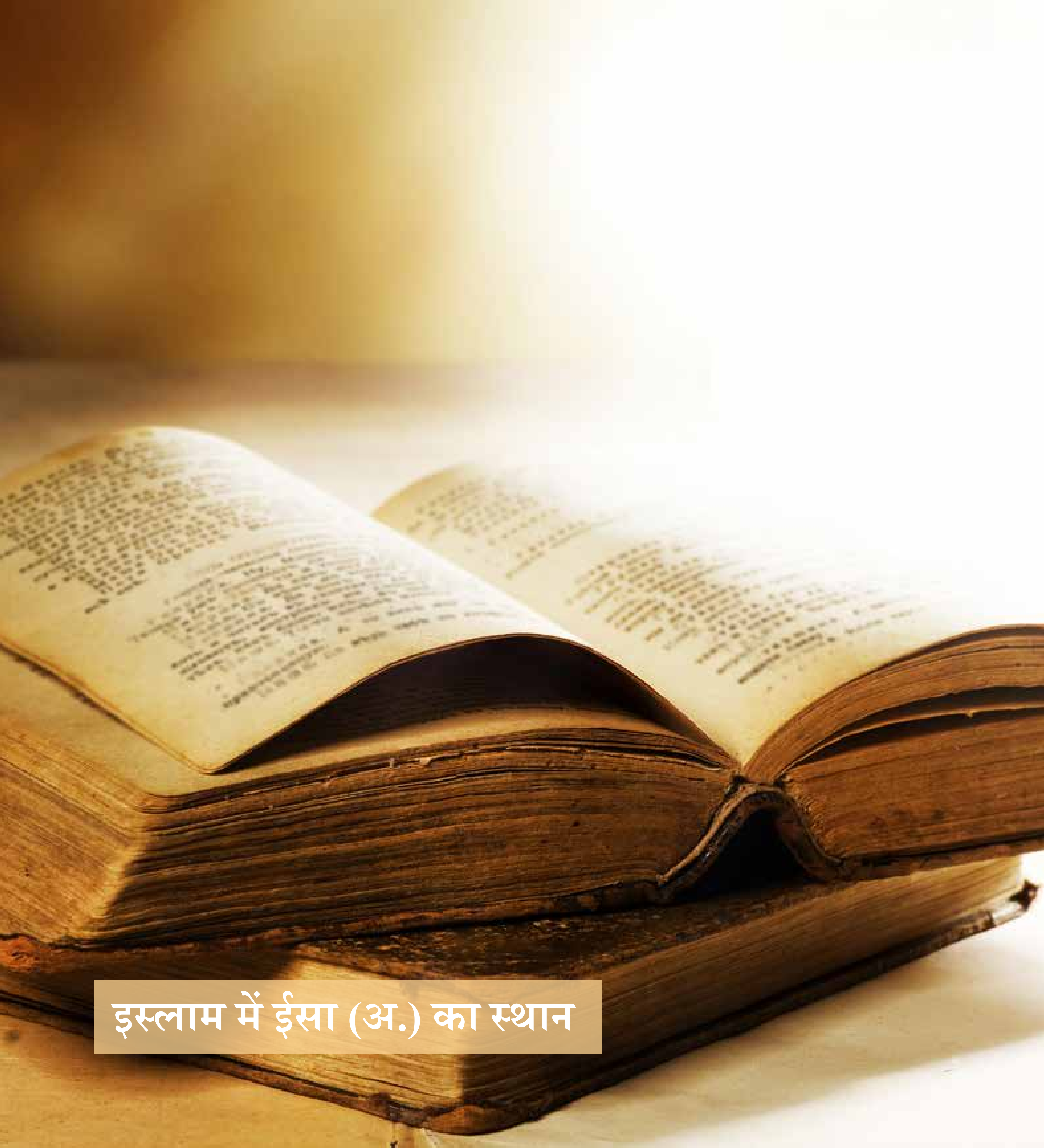

# इस्लाम में ईसा (अ.) का स्थान

ईसा (अ.) को इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों में से एक माना जाता है, और मानव जाति केलिए उन्होंने बड़ा योगदान पेश किया है। लोगों के बीच उनकी स्थिति के बारे में मतभेद पाया जाता है, किसी ने उन्हें देवता कहा तो किसी ने देवता का पुत्र बना दिया। और कई लोगों ने उनसे दुश्मनी की और झूटे आरोप लगाए। तो इस्लाम में ईसा (अ.) का क्या स्थान है?

**१) ईसा (अ.) महानतम दूतों में से हैं:**

क़ुरआन ईसा (अ.) के महानतम दूतों में से एक होने, उनकी माँ मरियम के बारे में ईश्वर की सत्य भक्त, पवित्रता होने की पुष्टि करता है। अल्लाह ने उन्हें चमत्कारिक रूप से बिना पिता के पैदा किया, जैसे उसने सबसे प्रथम मनुष्य आदम (अ.) को बिना माता पिता के पैदा किया। जैसा कि अल्लाह क़ुरआन में कहता है कि: "ईसा (अ.) एक अमर चमत्कार हैं उसी प्रकार से जैसे उसने आदम (अ.) को बिना माता पिता के बनाया। तो उनसे अपनी शक्ति से ईसा (अ.) को बिना पिता के पैदा किया। और अल्लाह की यह विशेषता है कि जब वह किसी चीज़ को कहता है "हो जा" तो वह हो जाती है।" (सूरतु-आले-इमरान:५९)

**२) उनके चमत्कार पर मुस्लमान आस्था रखता है:**

मुसलमान उन तमाम चमत्कारों पर विश्वास करते हैं जो उनके हाथों प्रकट हुए, जैसे कि कुष्ठरोग और अंधों का उपचार, और मृतक को जीवित करना, और लोगों को इस बात की सुचना देना कि वह क्या खाते हैं और उनके घरों में क्या बचा हुआ है। यह सब सत्य ईश्वर की आज्ञा से हुआ। और उनको ईश्वर का सत्य दूत प्रमाणित करने केलिए यह सब चमत्कार प्रदान किया गया।

**३) अल्लाह ने उनके ऊपर इंजील (बाइबल) अवतरित की:**

क़ुरआन यह पुष्टि करता है कि अल्लाह ने उनके ऊपर अपनी सबसे महान किताबों में से एक इंजील (बाइबल) अवतरित की। जो लोगों के लिए मार्गदर्शन और प्रकाश का रूप थी। लेकिन कुछ-कुछ अंतराल के पश्चात् उसमें फेरबदल और परिवर्तन कर दिया गया।

**४) वह मानव हैं, ईश्वर नहीं:**

इस्लाम ने स्पष्ट किया कि ईसा (अ.) आदम के संतानों में से एक मानव हैं, अल्लाह ने उन्हें प्राथमिकता दी और बनी-इस्राईल समुदाय केलिए उनको ईशदूत बनाकर भेजा। और उनके हाथों कई चमत्कार प्रकट हुए, और उनके पास ईश्वरीयता और दिव्यता की कोई विशेषता नहीं है, जैसा कि अल्लाह क़ुरआन में कहता है कि: "ईसा (अ.) केवल नेक बन्दे ही हैं, जिनपर हम ने उपकार किया और कई चमत्कार दिए, ताकि वह अपने समुदाय केलिए अच्छा संकेत और निशानी बन सकें।" (सूरतुज़-ज़ुख़रूफ़: ५९)

**५) उनको फाँसी (मृत्यु दंड ) पर नहीं लटकाया गया, परन्तु आकाश की ओर उठा लिया गया:**

इस्लाम की दृष्टि में ईसा (अ.) की न हत्या की गई है और न ही उनको फाँसी (सूली) पर चढ़ाया गया, बल्कि अल्लाह ने उन्हें आकाश पर उठा लिया। क्यूंकि जब उनके शत्रु उन्हें मारना चाहते थे तो अल्लाह ने दूसरे व्यक्ति को ईसा (अ.) के जैसा बना दिया, तो उन लोगों ने उसकी हत्या कर दी और फाँसी पर चढ़ा दिया और सोचा कि यही ईसा (अ.) हैं, जबकि अल्लाह ने ईसा (अ.) को आकाश पर उठा लिया था। (सूरतुन-निसा: १५७-१५८)

### कुछ प्रसिद्ध ईशदूत:

अल्लाह के ईशदूतों की संख्या बहुत अधिक है उनमें से कुछ प्रसिद्ध यह हैं, उन सब पर अल्लाह की शान्ति हो:

**आदम:**

सम्पूर्ण मानव जाति के पिता हैं, अल्लाह ने उन्हें मिट्टी से बनाया, और फ़रिश्तों को उन्हें सिजदा (माथा टेकना) करने का हुक्म दिया, और फिर स्वर्ग से धरती पर उतारा।

**नूह:**

उन्होंने अपने समुदाय को सत्य ईश्वर की पूजा-उपासना की ओर आमंत्रित किया, परन्तु उन लोगों ने इंकार किया, फलस्वरूप जयप्रलय आया और नूह और उनपर आस्था रखने वालों को छोड़कर सब बर्बाद हो गए।

**इब्राहीम:**

सम्पूर्ण संदेशवाहकों के पिता, और महानतम ईशदूतों में से एक, जिसने लोगों को सत्य ईश्वर की ओर आमंत्रित किया। मुसलमानों का क़िब्ला (काबा) का निर्माण सबसे पहले उन्होंने ने ही किया।

**इस्माईल:**

इब्राहीम (अ.) के पुत्र हैं, जिन्होंने ने काबा के निर्माण में अपने पिता को सहयोग किया।

**इस्हाक़:**

इब्राहीम (अ.) के पुत्र हैं, फ़रिश्तों के शुभ सूचना के पश्चात् उनका जन्म हुआ था।

**याक़ूब:**

इस्हाक़ (अ.) के पुत्र हैं, जिनको इस्राईल भी कहा जाता है, इसीलिए उनके समुदाय को बनी-इस्राईल कहा जाता है।



**यूसुफ़:**

याक़ूब (अ.) के पुत्र हैं, जिनको कई परिक्षाओं (आज़माइश) में डाला गया, फिर अंत में मिस्र के शासक बने।

**मूसा:**

महानतम ईशदूतों में से एक हैं, अल्लाह ने उनको बनी-इस्राईल समुदाय केलिए भेजा और उनके ऊपर तौरात नामी ग्रंथ अवतरित की। और उनके हाथों कई चमत्कार हुए, तो मिस्र के शासक फ़िरऔन ने इंकार किया तो अल्लाह ने उसको दरिया में डूबा दिया और मूसा (अ.) और उनके समुदाय को बचा लिया।

**दाऊद:**

एक दूत हैं जिन्हें अल्लाह ने अपने समुदाय पर राजा बनने का अवसर प्रदान किया था।

**सुलैमान:**

दाऊद (अ.) के पुत्र हैं, ऐसे दूत जिन्हें अल्लाह ने एक महान राजा बनाया और कई सारी प्राणियों को उनके अधीन किया।

**ज़करिया:**

बनी-इस्राईल के दूतों में से एक हैं, ईसा (अ.) की माँ मरियम के संरक्षण और शिक्षा की ज़िम्मेदारी दी गई थी। अल्लाह ने उनको बुढ़ापे में पुत्र दिया जबकि उनकी पत्नी बाँझ थीं।

**ईसा:**

महानतम ईशदूतों में से एक हैं, अल्लाह ने उनको बिना पिता के बनाया, और बनी-इस्राईल समुदाय के लोगों की ओर भेजा। और उनके ऊपर इंजील (बाइबल) अवतरित की, और उनके हाथों कई चमत्कार भी हुए।

**मुहम्मद:**

अंतिम ईशदूत, अल्लाह ने उनको सम्पूर्ण मानव जाति केलिए भेजा। सम्पूर्ण ईशदूतों की पुष्टि करते हुए। और आप पर क़ुरआन अवतरित किया गया। जिसके आगे और पीछे से असत्य (बातिल) फटक नहीं सकता।

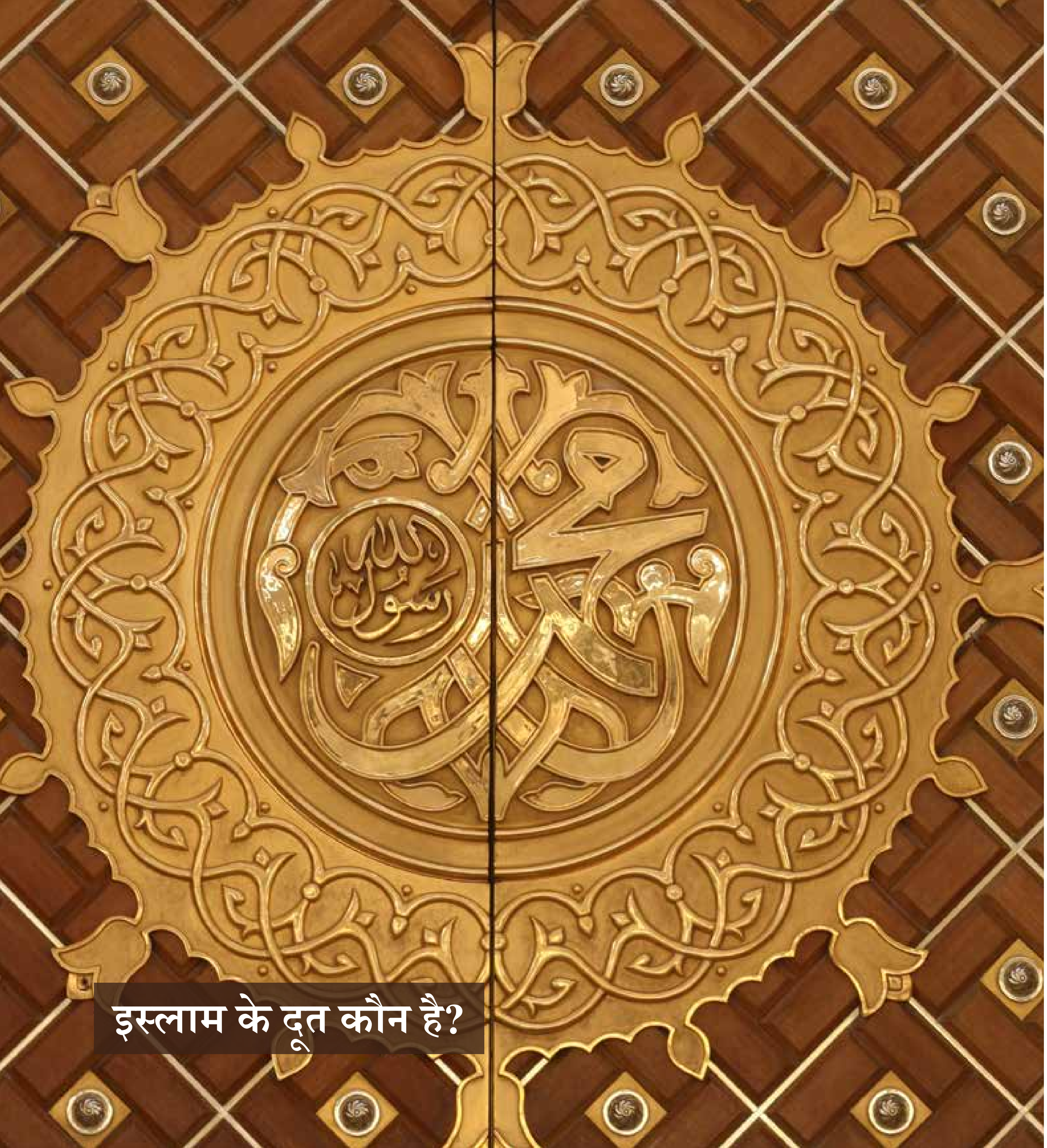

# इस्लाम के दूत कौन है?

मुहम्मद

मुहम्मद (स.) इस्लाम के दूत का नाम है.. ।

आज दुनिया भर के व्यापक नामों में से एक है, और उसका अर्थ यह है कि लोग जिसके कार्यों और नैतिकता के कारण प्रशंसा करें..।

तो मुहम्मद कौन हैं?

**इस्लाम के दूत का नाम:**

मुहम्मद के पिता का नाम 'अब्दुल्लाह' और दादा का नाम 'अब्दुल-मुत्तलिब' है और आप क़ुरैश वंशज (घराने) से थे।

(५७०-६३२ ई०) और उनके बारे में मुसलमानों का आस्था:

**विश्वव्यापी दूत:**

अल्लाह ने मुहम्मद (स.) को सम्पूर्ण जाति और समुदाय केलिए भेजा और आपकी आज्ञाकारिता को सभी केलिए अनिवार्य कर दिया। क़ुरआन इस सम्बंध में कहता है कि: "आप कह दीजिए कि हे लोगो ! मैं तुम तमाम की ओर दूत बनाकर भेजा गया हूँ।" सूरतुल-आराफ़:१५८)

**उनके ऊपर पवित्र क़ुरआन अवतरित किया गया:**

अल्लाह ने मुहम्मद (स.) पर अंतिम धर्म ग्रंथ (किताब) क़ुरआन को अवतरित किया। जिसके आगे और पीछे से असत्य (बातिल) फटक नहीं सकता।

**सम्पूर्ण ईशदूतों और संदेशवाहकों के समापक:**

अल्लाह ने मुहम्मद (स.) को अंतिम ईशदूत बनाकर भेजा और अब आपके पश्चात् कोई दूत आने वाला नहीं है। जैसा कि क़ुरआन में है कि: "लेकिन आप अल्लाह के ईशदूत हैं और सम्पूर्ण दूतों में अंतिम हैं।" सूरतुल-अहज़ाब:४०)

ईशदूत मुहम्मद (स.) का संक्षिप्त परिचय:

**१) आपका जन्म:**

उनका जन्म ५७०ई० में अरब प्रायद्वीप के पश्चिम मक्का में हुआ था। आपके जन्म से पूर्व ही आपके पिता का निधन हो चूका था, और आपने अपनी माँ को भी बहुत कम आयु में खो दिया। फिर अपने दादा अब्दुल-मुत्तलिब की देख-भाल में और फिर अपने चाचा अबू-तालिब की देख-भाल में बड़े हुए।

**२) आपका जीवन और उत्पत्ति:**

आप अपने समुदाय 'क़ुरैश' में ईशदूत (संदेशवाहक) बनने से पहले ५७० से ६०९ ई० तक ४० वर्ष जीवन बिताए । आप अच्छे उच्चारण केलिए उदाहरण थे। और अखंडता और उत्कृष्टता में आदर्श थे। और आप उनके बीच ईमानदार और सादिक़ (सच बोलने वाला) के नाम से प्रसिद्ध थे। पहले आप बकरियाँ चराते थे, फिर आपने व्यापार किया।

ईशदूत बनने से पूर्व आप इब्राहीम (अ.) के विधि अनुसार अल्लाह की पूजा-उपासना करते थे। आप मूर्ति और मूर्तिपूजा प्रथाओं का इंकार करते थे। आप अनपढ़ थे, पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे।

**३) आपका अवतरण:**

अपनी आयु के ४० वर्ष पूरा करने के पश्चात् आप 'नूर पहाड़ी' (मक्का के निकट एक पहाड़ी का नाम) के 'हेरा गूफा' नमी जगह पर अल्लाह की पूजा-उपासना करते थे। जिब्रील (अ.) अल्लाह का सन्देश (वही) लेकर आए, और क़ुरआन का अवतरित होना आरंभ हो गया और सर्वप्रथम श्लोक "इक़्रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़" (पढ़ सत्य ईश्वर के नाम से जिसने सम्पूर्ण संसार की सृष्टि की ) अवतरित हुई। ताकि यह घोषणा करें कि विज्ञान, पढ़ने और लोगों के मार्गदर्शन केलिए नए युग का आरंभ है। और फिर २३ वर्षों के अंतराल में क़ुरआन धीरे-धीरे अवतरित हुआ।

**४) आमंत्रण का प्रारंभ:**

मुहम्मद (स.) ने गुप्त रूप में ३ वर्षों तक लोगों को इस्लाम की ओर आमंत्रित किया, फिर १०वर्षों तक मक्का में खुल्लम-खुल्ला लोगों को अल्लाह की ओर आमंत्रित किया। और आपके अधिकांश अनुयायी दूसरे दूतों के अनुयायीयों के जैसे कमज़ोर और ग़रीब लोग थे। इस बीच मुहम्मद (स.) और आप पर विश्वास रखने वालों को क़ुरैश समुदाय से उत्पीड़न और अन्याय झेलने पड़े। फिर जो लोग हज्ज केलिए मक्का आते उनको इस्लाम का निमंत्रण देते, मदीना वालों ने इसे स्वीकार कर लिया, तो मुस्लमान धीरे-धीरे उसकी ओर प्रवास करना शुरू कर दिया।

**५) आपका प्रवास:**

जब मक्का के लोगों ने आपकी हत्या का असफल प्रयास किया तो मुहम्मद (स.) ने ६२२ ई० में मदीना मुनव्वरह प्रवास किया जिसका नाम उस समय (यस्रिब) था। और आप मदीना में अपने जीवन का १० वर्ष बिताए और लोगों को इस्लाम की ओर आमंत्रित करते रहे। नमाज़, दान, उच्च आचरण और इस्लाम के सम्पूर्ण चीजों के सम्बंध मं जानकारी देते रहे।



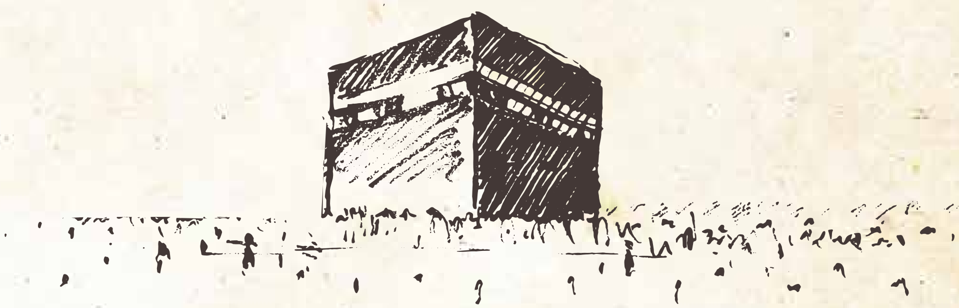

**६) इस्लाम का प्रचार:**

मदीना के प्रवासन के पश्चात् (६२२-६३२ ई०) इस्लामी संस्कार, सभ्य समाज और मुस्लिम समुदाय की स्थापना की। सामुदायिक जनजाति को समाप्त किया और ज्ञान को फैलाया। न्याय, अखंडता, भाईचारा, आपसी सहयोग और राज्य प्रणाली के सिद्धांतों को निर्धारित किया। कुछ जनजातियों ने इस्लाम को मिटाने का प्रयास किया इसलिए विभिन्न युद्ध और घटनाएँ हुईं लेकिन अल्लाह ने अपने धर्म और ईशदूत की सहायता की। और फिर लोग इस्लाम में प्रवेश करने लगे, तो इस्लाम मक्का समेत अरब प्रायद्वीप में अधिकांश शहरों और जनजातियों में प्रवेश किया और लोगों में इस धर्म से अश्वस्त होकर इनको स्वीकारा।

**७) आपका निधन:**

प्रवासन के ११वें वर्ष 'सफ़र' के महीने में जब आप ईश्वरीय सन्देश लोगों तक पहुँचा चुके और अल्लाह ने धर्म की पूर्णता का उपकार कर दिया तो मुहम्मद (स.) बुख़ार और गंभीर बीमारी से पीड़ित हो गए और ११वें वर्ष 'रबीउल-अव्वल' के महीने में सोमवार के दिन (६/८/६३२ ई०) आपका निधन हो गया, उस समय आपकी आयु ६३ वर्ष की थी और आप को मस्जिद-नबवी के बग़ल में पत्नी आयशा (रज़ि.) के घर में दफ़न कर दिया गया।

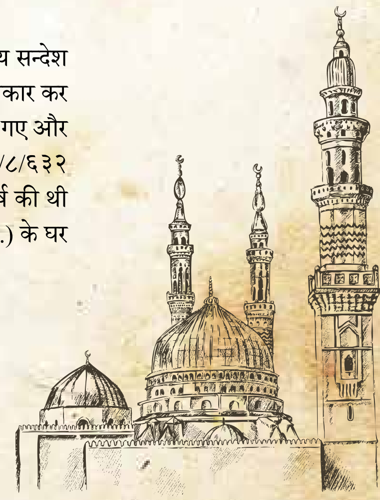

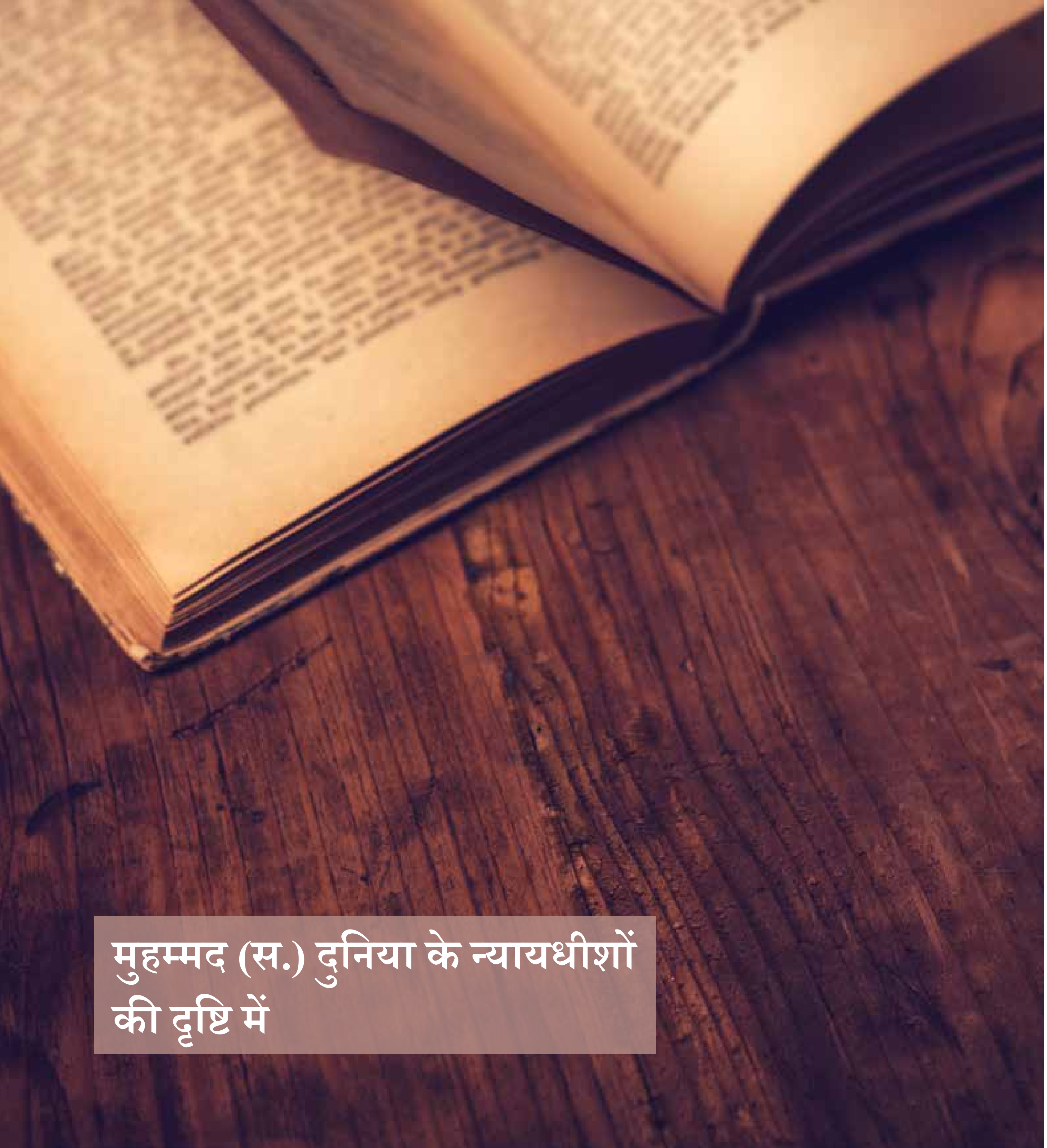

# मुहम्मद (स.) दुनिया के न्यायधीशों की दृष्टि में

दुनिया का कोई भी न्यायधीश चाहे वह किसी भी धर्म और सांस्कृति से सम्बंधित क्यों न हो जब वह मुहम्मद (स.) की जीवनी को पढ़ता है तो आश्चर्यचकित रह जाता है। पूर्व और पश्चिम के विद्वान, दार्शनिक और लेखक इस बात की पुष्टि करते हैं, और इसे अपनी किताबों और लेखों में लिखा है। उन्हीं में से निम्नलिखित कुछ यह हैं:

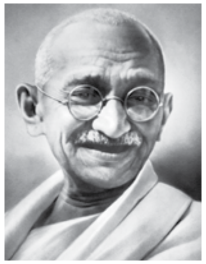

**गाँधी ने अपने समाचार पत्र (यंग इंडिया,१९२४) में कहा:**

मैं उस व्यक्ति के गुणों को जानना चाहता था जो लाखों लोगों के दिलों का बिना किसी विवाद के मालिक है.. और मैं इस बात से आश्वस्त हो गया हूँ कि इस्लाम ने आज जो अपना स्थान प्राप्त किया है उसनें किसी भी रूप में तलवार को कोई ज़ोर नहीं है। बल्कि ईशदूत की सादगी के माध्यम से अपने वादों, समर्पण और अपने मित्रों और अनुयायियों के प्रति वफ़ादारी, उनकी शुद्धता और ईमानदारी के साथ और अपने ईश्वर और उसके संदेश में पूर्ण विश्वास के साथ ऐसा संभव हुआ। और इन्हीं गुणों के कारण मार्ग प्रशस्त किया गया, और कठिनाइयों को दूर किया गया, तलवार के माध्यम से नहीं। मुहम्मद के जीवन के दूसरे भाग को पढ़ने के बाद स्वंय को उनके महान जीवन के बारे में अधिक जानकारी न होने पर पछतावा हुआ।

Mahatma Gandhi, statement published i 'YoungIndia,' 11/ 9 1924

“

मैं उस व्यक्ति के गुणों को जानना चाहता था जो लाखों लोगों के दिलों का बिना किसी विवाद के मालिक है.. और मैं इस बात से आश्वस्त हो गया हूँ कि इस्लाम ने आज जो अपना स्थान प्राप्त किया है उसनें किसी भी रूप में तलवार को कोई ज़ोर नहीं है।

गाँधी

**माइकल हार्ट ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक “इतिहास के सबसे प्रभावशाली १०० व्यक्ति”**

में मुहम्मद (स.) के नाम से आरंभ किया और उसका कारण भी इन शब्दों में बताया कि: “मुहम्मद मेरी पसंद इसलिए हैं ताकि इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण और महानतम पुरुषों में पहला स्थान आपको मिले और पढ़ने वाला आश्चर्यचकित रह जाए, परन्तु आप इतिहास में एकमात्र ऐसे व्यक्ति है जिसने धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष दोनों पर सर्वोच्च सफलता प्राप्त की है।”

Michael Hart in 'The 100, A Ranking of the Most Influential Persons In History,' p.33

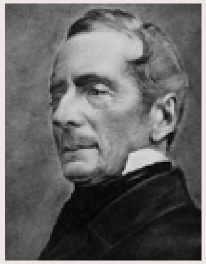

प्रसिद्ध फ्रांसीसी कवि अल्फोन्स डू लामार्टिन अपनी पुस्तक “तुर्की का इतिहास” में कहता है: “साधनों की कमी के बावजूद, महान उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए और उत्कृष्ट प्रतिफल देना महान लोगों की पहचान है। तो मुहम्मद की तुलना इतिहास में किसी भी महान के साथ तुलना करने की हिम्मत कौन करेगा?)।

Histoire de la Turquie: Vol.1, P.111.

भारतीय दार्शनिक रामकृष्ण कहते है कि: प्रस्थितोयां परिवर्तित हो गईं परन्तु मुहम्मद (स.) परिवर्तित नहीं हुए। विजय की स्तिथि हो या पराजय की, शक्ति या विपत्ति में, धन या विनाश में, उनके व्यक्तित्व और गुणों में कोई परिवर्तन नहीं आया। ईश्वर के नियन सम्पूर्ण संदेशवाहकों केलिए जो कदापि बदलते नहीं।

अपनी पुस्तक: (Mhuhammad The Prophet of Islam) में, पृष्ट संख्या,२४

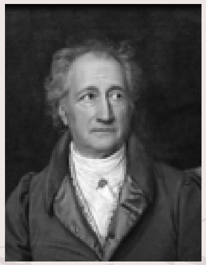

जर्मनी के महानतम कवि गोते ने इस्लाम और मुहम्मद की प्रशंसा करते हुए अपनी प्रेमिका को एक पत्र में लिखा था कि: “यघपि वह सत्तर (७०) वर्ष का हो गया परन्तु इस्लाम की महानता में कोई कमी नहीं आई, बल्कि इस्लाम बढ़ता और मज़बूत होता गया।”

Katarina Mumzen stated in her Goethe book: Goethe und die arabische Welt, P. 177.

**प्रोफेसर स्टोबार्ट कहते हैं:**

सम्पूर्ण मानव इतिहास में मुहम्मद (स.) के निकट भी कोई तुलनीय व्यक्तित्व का उदाहरण नहीं मिलता है। उन्होंने कम भौतिक सामग्री का उपयोग करके बड़ी सफलता और जीत प्राप्त की, इस तरह की सफलताएं इतिहास में दुर्लभ मानी जाती हैं। जब हम सम्पूर्ण दृष्टि से इतिहास का अध्ययन करते हैं तो हमें आपका नाम सबसे प्रकाशित करने वाला और बिल्कुल स्पष्ट रूप में मिलता है।

Islam and Its Founder. P. 227-228.

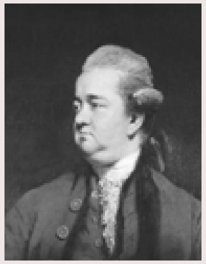

**साइमन ओकले ने अपनी पुस्तक (द हिस्ट्री ऑफ़ द मुस्लिम साम्राज्य) में कहा कि:**

पूरी दुनिया में इस्लाम का फैलना आश्चर्यजनक नहीं है, लेकिन पूरे युग में इसकी निरंतरता और स्थिरता पर आश्चर्यजनक रूप से प्रतीत होता है। जो अद्भुत प्रभाव मक्का और मदीना में मुहम्मद (स.) ने छोड़ा था, आज भारत, अफ्रीक़ा, तुर्की समेत विभिन्न देशों के नए नागरिकों को प्रभावित किया है।

Ockley, Simon. (1870). History of the Saracen Empire. 1st ed. London: A. Murray, P.54.

"जो अद्भुत प्रभाव मक्का और मदीना में मुहम्मद (स.) ने छोड़ा था, आज भारत, अफ्रीक़ा, तुर्की समेत विभिन्न देशों के नए नागरिकों को प्रभावित किया है।
साइमन ओकले

**विल डुरान्ट अपनी प्रसिद्ध अर्थशास्त्र 'सभ्यता की कथा' में लिखते हैं:**

हमें इतिहास में प्रभावशाली लोगों की जीवनी का अध्ययन करने के पश्चात् यह कहना पड़ेगा कि: इतिहास में मुहम्मद (स.) अधिकतम प्रभावशाली व्यक्तित्व में से एक हैं। उन्होंने स्वंय को उन लोगों के आध्यात्मिक और नैतिक स्तर को बढ़ाने के लिए प्रयास किया जिनको गर्मी और रेगिस्तान की बर्बर अव्यवस्था में फेंक दिया गया था। और इस उद्देश्य को प्राप्त करने में वह सफल रहे जहाँ तक इतिहास में कोई भी सुधारक ने सफलता प्राप्त नहीं की, और कम ही ऐसे लोग हैं जो अपने सारे सपनों को साकार कर पाते हैं..। मुहम्मद ने जब इस्लाम का प्रचार करना आरंभ किया, उस समय अरब देश रेगिस्तान था और जहाँ सभी समुदाय मूर्ति पूजा में सम्मलित थे, कम थे और विभाजित थे। परन्तु मुहम्मद (स.) के निधन से पूर्व पूरा अरब संयुक्त और एकजुट राष्ट्र बन गया था। उन्होंने कट्टरता और अंधविश्वास पर अंकुश लगाया, और यहूदी और इसाई धर्म से ऊपर पारंपरिक धर्म जो सत्य, सरल और आसान धर्म इस्लाम की स्थापना की। और राष्ट्रीय साहस और गौरव की शक्ति के साथ एक नैतिक घोषणा की। मुहम्मद (स.) एक पीढ़ी में ही सैकड़ों युद्धों में सफलता प्राप्त की, और एक शताब्दी में ही शक्तिशाली राष्ट्र की स्थापना करने में सक्षम हुए, जो आज दुनिया की आधी आबादी पर शासन कर रहा है।

Will Durant, In The Story of Civilization13 / 47

"जब हम इतिहास में प्रभावशाली लोगों की जीवनी का अध्ययन करते हैं तो उसके पश्चात् यह कहना पड़ेगा कि: इतिहास में मुहम्मद (स.) अधिकतम प्रभावशाली व्यक्तित्व में से एक हैं।
विल डुरान्ट



इस्लाम के कट्टर विरोधी अबू-सुफ़ियान एक रोचक कहानी बयान करते हैं कि जब रूम के राज 'हेरक़ल' को (६२८ ई०) में मुहम्मद (स.) ने निमंत्रण पत्र भेजा और इस्लाम की ओर आमंत्रित किया, तो उस से हेरक़ल को बहुत आश्चर्य हुआ। और उसने अरब देश से एक व्यक्ति को बुलाने केलिए भेजा जो मुहम्मद (स.) के निकट हो, और अबू-सुफ़ियान जिनका शाम देश में व्यापार था (क़ुरैश के सरदारों में से थे और उस समय मुहम्मद (स.) के शत्रु भी थे) तो उनको और जो उनके साथ थे अपने दरबार में बुलाया। हेरक़ल ने अबू-सुफ़ियान से अनुवादक के माध्यम से सच्चाई जानने के लिए कुछ बौद्धिक और बुद्धिमान प्रश्न पूछे। उत्तर सुनने के पश्चात् हेरक़ल ने अबू-सुफ़ियान से कहा:

मैंने वंशावली के बारे में प्रश्न किया तो आपने उत्तर दिया कि वह अरब में उच्च घराने से हैं, इसी प्रकार से ईशदूत उच्च घराने से ही अवतरित किए जाते हैं। मैंने तुमसे पूछा, क्या आप में से कोई इसका दावा करता है? तो उल्लेख किया कि नहीं, अगर किसी ने उससे पहले ऐसा दावा किया होता तो मैं यह कहता कि यह आदमी अपने पूर्ववर्तियों का अनुकरण करता है।

मैंने आपसे प्रश्न पूछा कि क्या आप में से कोई इसके पूर्व इनपर झूठा होने का आरोप लगाया? तो आपका कहना था कि नहीं, तो मैं जान गया कि जो व्यक्ति लोगों के बारे में झूट न बोले वह अल्लाह के बारे में कैसे झूट बोल सकता है!.

मैंने पूछा कि बड़े लोग मुहम्मद (स.) की बात मानते हैं यह कमज़ोर लोग? तो आपने कहा: कमज़ोर लोग, और वास्तव में यही लोग ईशदूतों के अनुयायी रहे हैं। और मैंने पूछा कि उनके अनुयायी बढ़ रहे हैं या कम हो रहे हैं? तो आपने कहा, कि बढ़ रहे हैं, वास्तव में, सच्चे धर्म की यही पहचान है कि वह अंत तक बढ़ता है।

और मैंने पूछा कि क्या कोई इस्लाम में प्रवेश करने के पश्चात् पलट गया, तो आपने कहा, नहीं, वास्तव में, ईमान यही है जब किसी दिल में प्रवेश कर लेता है तो उसको ताज़ा रखता है।

और मैंने पूछा कि क्या वह धोका तो नहीं देते? तो आपने कहा, नहीं, इसी प्रकार ईशदूत धोका नहीं देते।

मैंने पूछा कि वह किन बातों का आदेश देते हैं? तो आपने उत्तर दिया कि: वह एक सत्य ईश्वर की पूजा-उपासना और उसके साथ किसी को भागीदार न बनाने का आदेश देते हैं, और मूर्ति पूजा से रोकते हैं। और नमाज़ पढ़ने, सत्य बोलने और शुद्धता का आदेश देते हैं।

यदि तुम्हारी कही हुई बातें सत्य हुईं तो वह ईश्वर का सत्य दूत है, और वह एक दिन राजा बनेगा। और मैं अंतिम दूत के बारे में जानता था परन्तु यह नहीं पता था कि वह तुम में से होगा। यदि अगर भेंट संभव हो सकती तो मैं उसके लिए हर प्रकार का कष्ट सहन करता। (बुख़ारी: ७)

# मुहम्मद (स.) और उनकी नैतिकता की कुछ झलकियाँ

अंतिम ईशदूत मुहम्मद (स.) ने उच्च आचरण और नैतिकता के अद्भुत और असामान्य उदाहरण प्रस्तुत किया है, पूर्व से लेकर पश्चिम तक के कई लेखकों ने यहाँ तक कि आपके शत्रुओं ने भी आपकी प्रशंसा की है। क़ुरआन ने आपके अतुलनीय नैतिकता का वर्णन किया है..।

जब आपकी पत्नी आयशा (रज़ि.) से आपकी नैतिकता और उच्च आचरण के सम्बंध में पूछा गया तो आपने उसका वर्णन इन शब्दों में किया कि: "क़ुरआन ही उनकी नैतिकता है।" वास्तव में, आपकी नैतिकता और आचरण व्यवहारिक जीवन में क़ुरआन का पूर्ण व्याख्या है।

**आपकी नैतिकता और उच्च आचरण की कुछ संक्षिप्त झलकियाँ:**

### नम्रता:

ईशदूत मुहम्मद (स.) कभी भी कोई उनके स्वागत केलिए खड़ा हो जाए प्रसन्न नहीं होते थे, बल्कि ऐसा करने से रोकते थे। आपके साथी आपसे बहुत प्रेम करते थे लेकिन कभी भी आपको देखकर खड़े नहीं होते थे, इसलिए कि उनको इस बात का ज्ञान होता कि मुहम्मद (स.) उसको अप्रिय (ना-पसंद) करते हैं। (अहमद : १२३४५)

अरब के प्रतिष्ठ और सरदार व्यक्ति अदी बिन हातिम मुहम्मद (स.) के पास इस्लाम गर्हण करने से पूर्व सत्य ईशदूत को जाँचने और वास्तविकता जानने केलिए आए, और कहा : "जब मैं आया तो आपके पास एक महिला और दो या एक बच्ची को पाया जो मुहम्मद (स.) के बिल्कुल निकट सामान्य रूप में थे, तो मैं समझ गया कि यही सत्य ईशदूत है, कोई किसरा और क़ैसर का राजा नहीं।" (अहमद : १९३८१)

नम्रता सम्पूर्ण ईशदूतों की नैतिकता में से है।

मुहम्मद (स.) अपने साथियों के साथ सामान्य रूप में एक साथ बैठते थे और आपका कोई विशेष स्थान नहीं हुआ करता था कि जिससे लोग आपको पहचान सकें। यहाँ तक कि एक बाहर से आने वाला व्यक्ति भी आपको नहीं पहचान पाता था कि आप कौन हैं, तो पूछ बैठता कि तुम में से मुहम्मद कौन हैं?। (बुख़ारी: ६३)

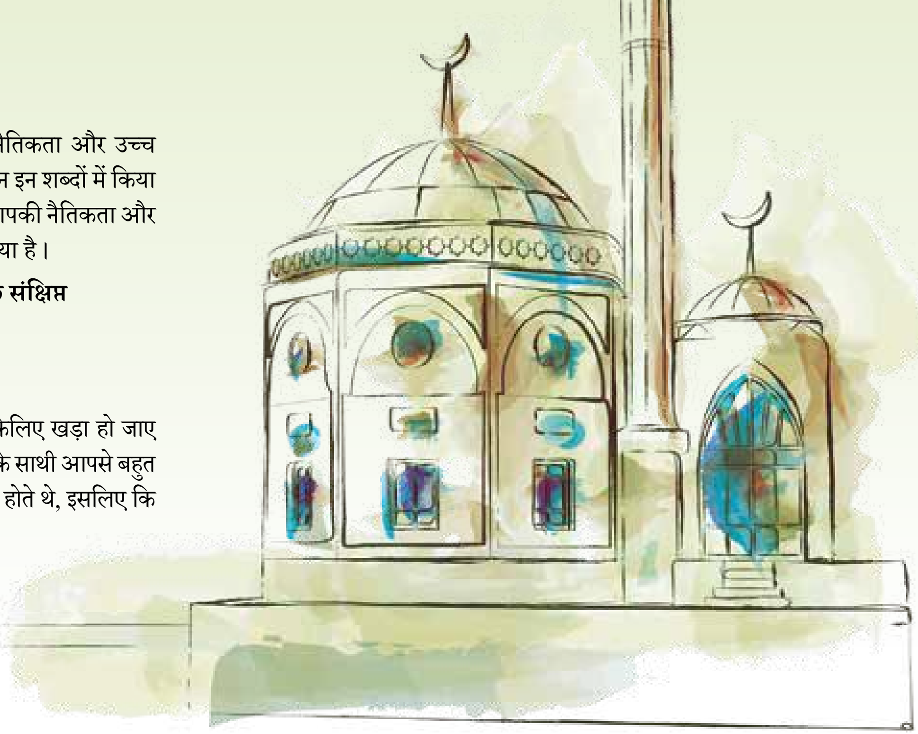

आपके साथी बयान करते हैं कि आप व्यस्त होने के बावजूद भी लोगों के हितों और आवश्यकताओं को पूरा करने केलिए कोई भी चीज़ आपको रोकती नहीं थी, चाहे वह कितनी भी छोटी हो। कभी ऐसा भी हुआ कि मदीना कि एक महिला मुहम्मद (स.) के पास आई और आपको लेकर चली गई, आप उसके पीछे-पीछे उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने केलिए चलते रहे जहाँ-जहाँ वह लेकर गई। (बुख़ारी: ५७२४)

> इस्लाम के ईशदूत अपना निजी कार्य स्वंय ही कर लिया करते थे। और अपने परिवार की सेवा करने और घर के काम को साझा करने में भाग लिया करते थे।

महान सहाबी उमर बिन अल-ख़त्ताब (रज़ि.) बयान करते हैं कि एक बार वह मुहम्मद (स.) के घर में प्रवेश किया तो आपके शरीर पर चटाई के निशान देखे (खजूर के पत्तों की बुनी हुई चटाई) तो उमर (रज़ि.) रोने लगे, तो मुहम्मद (स.) ने कहा, क्यों रो रहे हैं? तो उमर (रज़ि.) ने कहा कि, हे अल्लाह के रसूल: किसरा और क़ैसर के राजा कितनी नेमतों में जीवन बिता रहे हैं, और आप अल्लाह के ईशदूत है! तो मुहम्मद (स.) न कहा कि क्या आप इस बात से संतुष्ट नहीं हैं कि उनके लिए केवल दुनिया ही है और हमारे लिये स्वर्ग है?। (बुख़ारी: ३५०३)

वह अपना निजी कार्य स्वंय ही कर लिया करते थे। और अपने परिवार की सेवा करने और घर के काम को साझा करने में भाग लिया करते थे। इसीलिए जब आपकी पत्नी आयशा (रज़ि.) से घरेलू जीवन के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि: "आप अपने परिवार के घरेलु काम-काज में भाग लेते थे।" (बुख़ारी: ६४४) घरेलु कार्यों में सहायता करते थे, और आयशा (रज़ि.) ने कहा कि: "सामान्य लोगों के रूप में अपने जूते स्वंय सीधे करते और अपने कपड़े स्वंय ही पहनते और रखते थे।" (अहमद : २४७४९)

मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया: "जिसके हृदय में कण बराबर भी घमण्ड होगा वह कदापि स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा।" (मुस्लिम: ९१)

### दया:

मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: "दया करने वालों पर ईश्वर दया करता है, तुम पृथ्वी वालों पर दया करो ईश्वर तुम्हारे ऊपर दया करेगा।" (अबू-दाऊद: ४९४१)

**मुहम्मद (स.) की दया का कुछ उदाहरण:**

#### बाल-बालिका के प्रति आपकी दया:

- नमाज़, इस्लाम का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है जिसमें बात-चीत करना या हिलना और अनुचित कार्य करना वैध नहीं है। एक बार मुहम्मद (स.) ने अपनी नतिनी (ज़ैनब की बेटी) को लेकर नमाज़ पढ़ी, जब आप सिजदा करते तो नीचे रख देते और जब खड़े होते तो उठा लेते थे। (बुख़ारी: ४९४)
- जब आप नमाज़ पढ़ाते और किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनते तो नमाज़ को छोटी कर देते। जैस कि मुहम्मद (स.) ने कहा कि: "जब मैं नमाज़ पढ़ाने केलिए खड़ा होता हूँ तो सोचता हूँ कि नमाज़ लम्बी पढ़ाऊँ, परन्तु जब बच्चे के रोने की आवाज़ सुनता हूँ तो छोटी कर देता हूँ कि कहीं उसकी माँ परेशान न हो।" (बुख़ारी: ६७५)

**महिलाओं के प्रति आपकी दया:**

- मुहम्मद (स.) ने बालिकाओं की देख-भाल और उनके साथ अच्छा व्यवहार करने केलिए प्रेरित किया है, आपने फ़रमाया कि: "जिनको भी अल्लाह ने एक या उससे अधिक बेटी दी और उन्होंने उनकी देख-भाल किया और बेहतर जीवन व्यवस्था प्रदान की तो यह बेटियाँ उनके लिए नरक से बचाव केलिए बाधा बनेंगी।" (बुख़ारी: ५६४९)
- बल्कि पत्नी संग अच्छा व्यवहार और उनकी प्रस्तिथियों के अनुकूल उनके साथ अच्छा बर्ताव करने पर ज़ोर दिया है। और मुसलमानों को आदेश दिया कि वह एक-दूसरे को ऐसी बात की वसीयत करते रहें, और आपने फ़रमाया कि: "महिलाओं के साथ अच्छा व्यवहार करो।" (बुख़ारी: ४८९०)
- उन्होंने अपने घर वालों के साथ प्यार का एक उत्कृष्ट और असामान्य उदाहरण प्रस्तुत किया है। एक बार ऊँट के निकट बैठ कर अपना घुटना नीचे रखा और आपकी पत्नी सफ़िया (रज़ि.) आपके घुटनों पर अपना पाँव रख कर ऊँट पर सवार हुईं। (बुख़ारी: २१२०)
- जब आपकी प्यारी बेटी फ़ातिमा (रज़ि.) आपसे भेंट करने केलिए आतीं तो मुहम्मद (स.) उनका हाथ पकड़ कर उसको चूमते, और फ़ातिमा (रज़ि.) को उस स्थान पर बिठाते जहाँ वह स्वंय बैठे हुए होते। (अबू-दाऊद: ५२१७)

**कमज़ोरों के प्रति आपकी दया:**

- मुहम्मद (स.) ने लोगों को अनाथ (यतीम) की देख-भाल करने केलिए प्रेरित किया है। मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: "मैं और अनाथ की देख-भाल करने वाले ऐसे होंगे" सूचकांक और मध्यम वाली उंगली से इशारा किया (इसी प्रकार से दोनों स्वर्ग में एक साथ होंगे) और दोनों के बीच में थोड़ा गैप रखा। (बुख़ारी: ४९९८)
- उस व्यक्ति के प्रयत्न को जो किसी ग़रीब और विधवा की सहायता करता है उसको उस व्यक्ति के समान बताया है जो अल्लाह के रासते में युद्ध (जिहाद) करता है, और उस व्यक्ति के समान बताया है जो दिन में उपवास रखता है और रात्रि नफ़िल नमाज़ पढ़ता है। (बुख़ारी: ५६६१)
- कमज़ोरों पर दया करना और उन्हें उनके अधिकार देना जीविका प्रदान होने और दुश्मनों पर जीत का कारण बताया है। मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: "मुझे ग़रीब लोगों में तलाश करो (क्यूंकि मैं उन्हीं में रहता हूँ) बेशक उन्हीं कमज़ोर लोगों के कारण (दुश्मन के विरुद्ध) तुम्हारी मदद की जाती है और तुम्हें जीविका प्रदान की जाती है।" (अबू-दाऊद: २५९४)

"रसूल (स.) ने कमज़ोरों पर दया और उनपर एहसान करने को जीविका प्रदान होने और दुश्मनों पर जीत का कारण बताया है।



**न्याय:**

- मुहम्मद (स.) न्याय करने वाले थे, और आपने अपने निकटतम रिश्तेदारों पर भी अल्लाह के क़ानून की स्थापना की, क़ुरआन के आदेश का अनुपालन करते हुए कि: "ऐ ईमानवालो! इंसाफ़ (न्याय) पर मज़बूत रहने वाले और अल्लाह केलिए सत्य साक्षी देने वाले बन जाओ, यद्यपि वह स्वंय तुम्हारे अपने और माँ-बाप और रिश्तेदारों के विरुद्ध ही क्यों न हो।" (सूरतुन निसा:१३५)
- जब कुछ सहाबा एक प्रतिष्ठ महिला की ओर से सिफ़ारिश करने आए जिसपर चोरी करने का आरोप था कि उसको दंडित न किया जाए तो मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: "अल्लाह की क़सम, यदि मेरी बेटी फ़ातिमा भी चोरी करती तो मैं उसको भी दंडित करता।" (बुख़ारी : ४०५३)
- जब ब्याज को अवैध घोषित किया तो सर्वप्रथम अपने निकटतम से आरंभ किया और अपने चाचा अब्बास (रज़ि.) को रोका, मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: "आज, ब्याज का व्यापार अवैध कर दिया गया है, सबसे पहले मैं अब्बास के सभी अवैध व्यवसायों को रद्द करता हूँ, इसलिए कि यह सबका विषय है।" (मुस्लिम : १२१८)
- वह देश के उत्थान और विकास के लिए एक अमूल्य मापदंड बनाया है कि जिसमें कमज़ोर अपना अधिकार धनी लोगों से बिना किसी डर और भय के ले ले, मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: "उस राष्ट का विकास संभव नहीं जिसमें कमज़ोर अपना अधिकार बिना भय के न ले सके।" (इब्ने माजह: २४२६)

**उपकार और उदारता:**

- एक व्यक्ति मुहम्मद (स.) के पास आया और आपसे पैसा माँगा तो आपने कहा कि: "आप जो चाहें ख़रीद लें वह हमारे ऊपर उधार रहेगा, तो आपके साथी उमर (रज़ि.) ने कहा कि: ऐ अल्लाह के रसूल, ऐसा आपने क्यों किया जिसकी आप शक्ति नहीं रखते, तो मुहम्मद (स.) ने उसको पसंद नहीं किया, और उस व्यक्ति ने कहा कि: "ख़र्च करो अल्लाह आपको और अधिक देगा" यह सुनकर मुहम्मद (स.) मुस्कुरा दिए और उस व्यक्ति के चेहरे पर भी ख़ुशी थी।" (अहादीस मुखतारह: ८८)
- एक दिन ८० हज़ार दिर्हम (चाँदी का सिक्का) बाहर से लाया गया, तो आपने उसे चटाई पर रखा और फिर कुछ ही क्षणों में लोगों में विभाजित कर दिया और किसी को भी खाली नहीं लौटाया। (हाकिम : ५४२३)

"श्रोतों के अनुसार मुहम्मद (स.) ने अपने जीवन में पैसा इकठ्ठा नहीं किया।

## धैर्य और सहनशीलता:

- मुहम्मद (स.) ताएफ़ से दुखी होकर वापिस लौटे (मक्का से ९० कि.दूर पर्वत शहर) जब आप उनको इस्लाम की ओर आमंत्रित करने गए थे तो उन्होंने आपको कष्ट पहुँचाया और आपकी बात को स्वीकार नहीं किया। जब आप मक्का वापिस हो रहे थे तो अल्लाह ने पर्वत के फ़रिश्ता को भेजा और कहा कि यदि आप चाहें तो ताएफ़ वालों को नष्ट कर दिया जाए, तो मुहम्मद (स.) ने कहा कि: "मुझे अल्लाह से आशा है कि इनकी आने वाली पीढ़ी ऐसी होगी जो केवल एक अल्लाह की पूजा-उपासना करेगी और उसके साथ किसी को भागीदार नहीं बनाएगी।" (बुख़ारी: ३०५९)
- मुहम्मद (स.) की महानता का सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि मक्का के लोगों के साथ अच्छा व्यवहार किया, जिन्होंने आपको अपने शहर से निष्कासित कर दिया और अपनी तलवार और ज़बान से आपको यातनाएँ दीं। बल्कि एक वर्ष आपको जान से मारने का भी प्रयास किया। परन्तु जब अल्लाह की मदद आई और आपने मक्का में विजय प्राप्त की तो आपने उन लोगों के बीच खड़े होकर कहा कि: "तुम क्या कहते हो, मैं तुम्हारे साथ क्या करने वाला हूँ? उन्होंने कहा कि: आप अच्छा ही करेंगे, आप उदारवादी हैं, तो मुहम्मद (स.) ने कहा कि: मैं वही कहता हूँ जो अल्लाह के ईशदूत यूसुफ़ (अ.) ने उस समय अपने भाइयों को क्षमा करते हुए कहा था जिन्होंने उनपर अत्याचार किया था और आप को कुएं में फेंक दिया था, तो आपने उनसे कहा कि: आज कोई दंड और सज़ा नहीं है, अल्लाह तुम्हें क्षमा करने वाला है जो अत्यंत दयालू है। (सूरतु-यूसुफ़:९२) "जाओ, तुम सबके सब स्वतंत्र हो।" (बैहक़ी: १८२७५)

> मुहम्मद (स.) दुनिया में ऐसे ही जीवन बिताते थे जैसे मुसाफ़िर, पेड़ के नीचे आराम करने केलिए थोड़ी देर बैठा और कुछ समय बिताया फिर चला गया।

## साधारण जीवन:

- मुहम्मद (स.) सदैव अल्लाह के इस प्रवचन के अनुसार जीवन बिताते, अल्लाह फ़रमाता है कि: "और अपनी निगाह कभी उन चीजों की ओर न दौड़ाना, जो हम ने उस में से कई लोगों को दुनियावी शोभा (ज़ीनत) केलिए दे रखी हैं, ताकि इसमें उनकी आज़माईश कर लें, तेरे रब का दिया हुआ जीविका ही बहुत अच्छा और बाक़ी रहने वाला है। (सूरतु-ताहा:१३१)
- एक दिन आपके साथी उमर (रज़ि.) आपके पास आए और आप चटाई पर सोए हुए थे, कोई बिस्तर नहीं था, और चटाई का निशान आप के बाज़ू पर स्पष्ट था, तो उमर (रज़ि.) ने कहा: "मैंने आपके घर में एक नज़र दौड़ाई, अल्लाह की क़सम, कोई ऐसी चीज़ नज़र नहीं आई, जिस पर नज़र टिक जाए" तो मैंने कहा कि: "आप अल्लाह से प्रार्थना करें कि अल्लाह हमारी स्तिथि को सुधार दे और हमें अधिक दे, इसलिए कि पर्सियन और रोमन को अल्लाह ने कितना दिया है जबकि वह अल्लाह की पूजा-उपासना भी नहीं करते" तो मुहम्मद (स.) ने कहा कि: "ऐ इब्ने-ख़त्ताब! क्या आपको भी संदेह है, यह ऐसे लोग हैं जिन्हें इस संसार में जो कुछ भी मिलने वाला था, सब अल्लाह ने दे दिया था।" (बुख़ारी: २३३६)
- मुहम्मद (स.) कहते थे कि: "दुनिया के साथ मेरा मतलब क्या है? मैं एक मुसाफ़िर की तरह हूँ, जो एक पेड़ के नीचे थोड़ी देर आराम करता है फिर चला जाता है।" (तिर्मिज़ी: २३७७)
- मुहम्मद (स.) के घर महीना बल्कि २/३ महीने हो जाते और खाने केलिए चूल्हा नहीं जलता था, और आप केवल खजूर और पानी पर गुज़ारा करते थे। (बुख़ारी: २४२८)

और कभी-कभी पूरे दिन भूके रहते और पेट भरने केलिए निम्न स्तर की खजूरें ही आपको मिलतीं। (मुस्लिम: २९७७)

और मुहम्मद (स.) ने अपने जीवन में कभी लगातार तीन दिनों तक पेट भरकर खाना नहीं खाया, और आपका अधिकतम भोजन जव की रोटी हुआ करती थी। (मुस्लिम: २९७६)

## वादा पूरा करना:

- वादा को पूरा करना इंसान का उच्च आचरण और नैतिकता है, यदि यह अच्छा है और बिना दो पार्टियों के बाध्यकारी अनुबंध के है तो स्वयं की स्थिति को बढ़ाता है। और मुहम्मद (स.) का यही तरीक़ा था, और बिना किसी अनुबंध के उनके साथ उपकार करते थे। और अगर अनुबंध होता तो आपका व्यवहार कैसा होता!।
- जब इसाइयों के राजा हेरक़ल ने मुहम्मद के गुणों के बारे में क़ुरैश से पूछा, और उसने कहा कि: क्या वह धोका देते हैं? तो लोगों ने कहा, नहीं; तो राजा ने उनसे कहा कि: इसी प्रकार ईशदूत धोका नहीं देते। (बुख़ारी: ७)
- वह अपनी प्रथम पत्नी ख़दीजा (रज़ि.) के प्रति उच्च श्रेणी की वफ़ादारी निभाई, उनके पद की रक्षा और खानदान, रिश्तेदार और उनकी सहेलियों का सम्मान रखते हुए।
- ईशदूत मुहम्मद की पत्नी आयशा (रज़ि.) मुहम्मद (स.) की प्रथम पत्नी ख़दीजा (रज़ि.) (जिनका निधन पहले ही हो चुका था) के साथ मुहम्मद (स.) की वफ़ादारी के बारे में बयान करती हैं जबकि वह आयशा को नहीं जानती हैं, आयशा (रज़ि.) कहती हैं कि: "मुहम्मद (स.) अधिकतम उनको याद करते और जब कभी बकरी वध (ज़बह) करते तो उसमें का कुछ भाग ख़दीजा की सहेलियों को भी भेजते थे" और कभी मैं आपसे कहती कि: "जैसे कि ख़दीजा को छोड़कर इस दुनिया में कोई महिला ही नहीं थी? तो आप कहते, हाँ आयशा, बात ऐसी ही है, और मुहम्मद (स.) उनकी विशेषताओं और ख़ूबियों को बयान करते। (बुख़ारी: ३६०७)
- एक बार एथोपियन राजा (नज्जाशी, जिसने इस्लाम के आरंभिक दौर में मुसलमानों की मदद की थी) का प्रतिनिधिमण्डल आपके पास आया। तो मुहम्मद (स.) स्वंय उनकी सेवा करने केलिए खड़े हो गए, तो आपके साथियों (सहाबा) ने कहा कि: "हम उनकी सेवा करने केलिए पर्याप्त हैं" तो मुहम्मद (स.) ने कहा: "उन्होंने मेरे साथियों की सेवा की और अब मैं उनकी सेवा करके उनके उपकार का बदला देना पसंद करता हूँ।" (शोअबूल्-ईमान: ८७०४)
- ईशदूत मुहम्मद (स.) ने अल्लाह के आदेश का पालन करते हुए और सम्पूर्ण भविष्यवक्ताओं का अनुसरण करते हुए जीवन के सभी क्षेत्रों में अच्छे नैतिकता का बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत किया है।

मस्जिद-ए-नबवी वह मस्जिद है जिसको मुहम्मद (स.) ने अपने शहर में बनाया, जिसको मुसलमान "मदीना मुनव्वरह" के नाम से जानते हैं, और यह मक्का के बाद दूसरा पवित्र शहर है। मुहम्मद (स.) ने उसकी ओर प्रवास किया और मस्जिद बनाई और वहीं पर दफ़न किए गए। प्रति वर्ष लाखों मुसलमान इस मस्जिद का दर्शन (ज़ियारत) करते हैं।

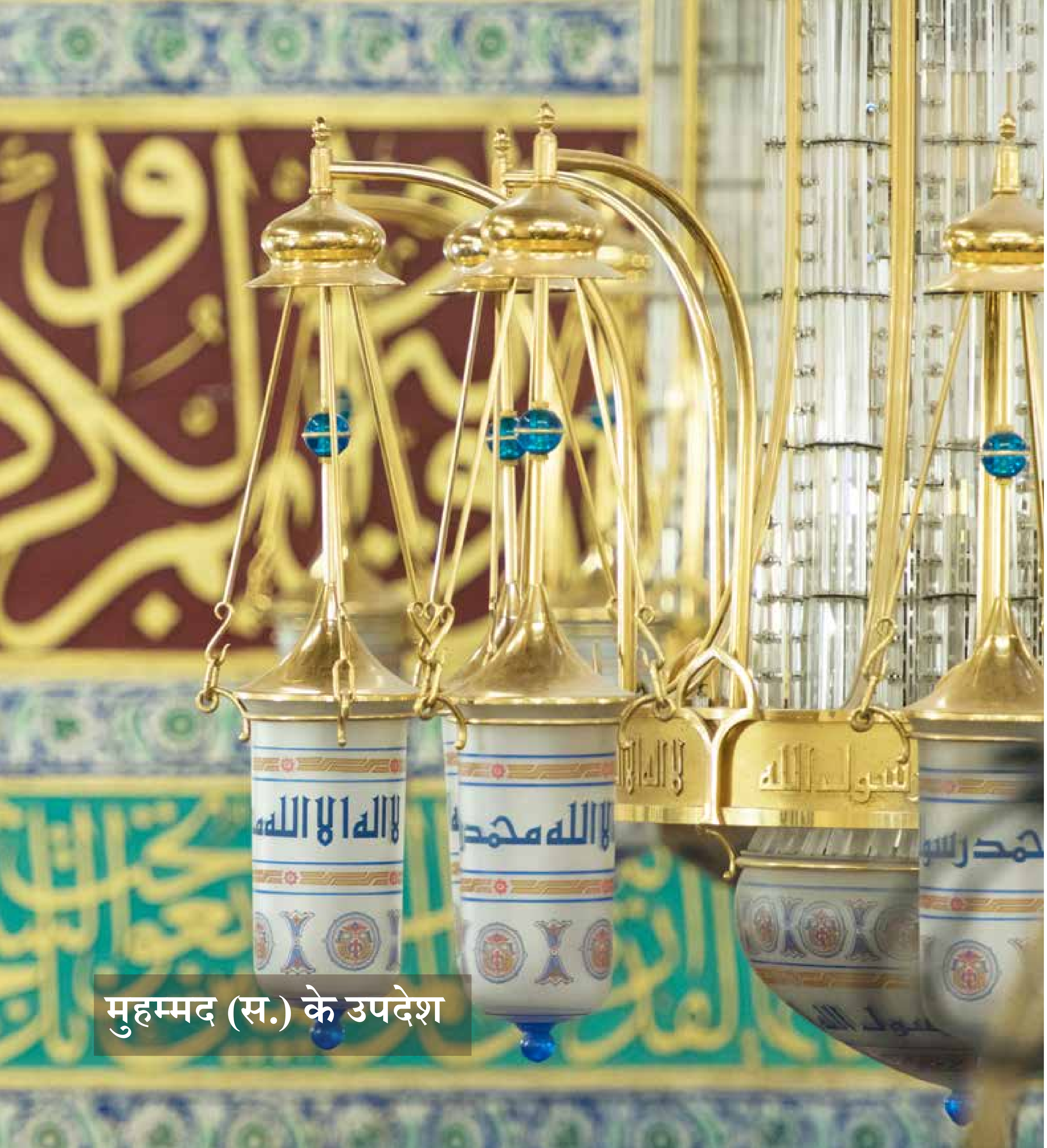

# मुहम्मद (स.) के उपदेश

मुसलमानों ने ईशदूत मुहम्मद के उपदेश (हदीस) को मौखिक और लेखन दोनों रूप से सुरक्षित करने का प्रयत्न किया। धार्मिक लोग और हाफ़िज़ (क़ुरआन और हदीस को याद करने वाले लोग) मुहम्मद (स.) के प्रवचन को लिखने और रक्षा करने के लिए प्रतिस्पर्धा की है। और ख़बरों के सत्यापन में दुनिया के सामने एक अद्भुत प्रणाली प्रस्तुत किया है, कि कौन सी चीज़ प्रमाणित है और कौन नहीं, वाक्यों और शब्दों के सटीक विवरण में भी इस का ध्यान दिया गया है, और कौन सी ऐसी चीजें हैं जो उसमें जोड़ दिया गया है जबकि वह उसमें से नहीं है..।

**मुहम्मद (स.) के उपदेश (हदीस) की कुछ झलकियाँ:**

- *"कर्मों की निर्भरता नीयत पर है और हरेक केलिए केवल वही है जिसकी उसने नीयत की।" (बुख़ारी: १)*
- *"पुण्य अच्छे आचरण का नाम है और पाप वह है जो आपके हृदय में खटके, और आप इस बात को नापसंद करें कि लोगों को उसका ज्ञान हो।" (मुस्लिम: २५५३)*
- "दुनिया के लगाव से अलग हो जाइए, अल्लाह आपसे मुहब्बत करेगा और लोगों के धन-दौलत से बेनियाज़ हो जाइए, लोग आपसे मुहब्बत करेंगे।" (इब्ने माजह: ४१०२)
- "मेरे और सम्पूर्ण संदेशवाहकों का उदाहरण ऐसे ही है जैसे किसी व्यक्ति ने घर बनाया और सुन्दर और आकर्षक घर बनाया, परन्तु कोने में एक ईंट की जगह छूट गई, अब लोग आते हैं और चारो ओर से घूम कर देखते हैं और आश्चर्य करते हुए कहते हैं कि: "यहाँ पर एक ईंट क्यों ना रखी गई? तो मैं ही वह ईंट हूँ और मैं सम्पूर्ण दूतों का अंतिम और आख़िरी हूँ।" (बुख़ारी: ३३४२)
- *"मुसलमान वह है जिसके हाथ और ज़बान से दूसरे मुसलमान सुरक्षित रहें, और मुहाजिर (प्रवासन) वह है जो उन कामों को छोड़ दे जिससे अल्लाह ने रोका है।" (बुख़ारी: १०)*
- *"तुम जहाँ और जिस जगह भी हो अल्लाह से डरो। पाप के पश्चात् पुण्य करो वह उस पाप को समाप्त कर देगा, तथा लोगों के साथ अच्छे सुलूक से पेश आओ।" (तिर्मिज़ी: १९८७)*
- "सुन लो, जिसने किसी ग़ैर-मुस्लिम पर अत्याचार किया, या उसकी क्षमता से अधिक उसपर बोझ डाला, या उसकी इच्छा के बिना ही उसका कुछ ले लिया, तो मैं परलोक में पीड़िता की ओर से वकालत करूँगा।"
- "दया करने वालों पर ईश्वर दया करता है, तुम पृथ्वी वालों पर दया करो ईश्वर तुम्हारे ऊपर दया करेगा।" (अबू-दाऊद: ४९४१)

"जिसने हमारे छोटों से लाड-प्यार ना किया और हमारे बड़ों के सम्मान को ना पहचाना उसका हमारे साथ कोई सम्बंध नहीं।" (तिर्मिज़ी: १९२०)

"तुम स्वर्ग में प्रवेश नहीं होगे जबतक तुम मोमिन न बन जाओ और तुम (पूर्ण) मोमिन नहीं बन सकते जबतक आपस में स्नेह ना करने लग जाओ। क्या मैं तुम्हें वह काम ना बताऊँ जिसके करने से तुम्हारे अंदर एक-दूसरे से प्रेम पैदा हो जाए? आपस में सलाम को रिवाज दो।" (मुस्लिम: २५९२)

- "जो दुनिया में किसी मोमिन की परेशानी दूर करेगा, अल्लाह परलोक में उसकी परेशानी दूर करेगा। और जो किसी निर्धन (तंग-दस्त) पर आसानी करेगा अल्लाह लोक और परलोक में उसके ऊपर आसानी करेगा। जो किसी के रहस्य (ऐब) को छुपाएगा अल्लाक लोक और परलोक में उसके ऐबों को छुपा लेगा।" जो अपने भाई की मदद करता है तो अल्लाह उसकी मदद करता है। जो ज्ञान (शिक्षा) के रास्ते को अनुसरण करता है तो अल्लाह उसके लिए स्वर्ग के रास्ते को आसान बना देता है..। और जिसने धार्मिक रूप से अच्छा कार्य नहीं किया (परलोक के दिन) उसके वंशज उसके कुछ भी काम नहीं आ सकते।" (मुस्लिम: २६९९)
- "जो धोखाधड़ी करे वह हम में से नहीं।" (तिर्मिज़ी: १३१५)
- "मोमिनों का उदाहरण आपस में एक-दूसरे के साथ मुहब्बत करने में, एक-दूसरे पर दया करने में और एक-दूसरे के साथ हमदर्दी और नर्मी करने में एक जिस्म के समान है। जब उसका एक हिस्सा या अंग दर्द करता है तो बाक़ी सारा शरीर भी उसके कारण बीमार और बुख़ार में ग्रस्त हो जाता है।" (मुस्लिम: २५८६)
- "तुम में से हर व्यक्ति ज़िम्मेदार है और उससे उसको ज़िम्मेदारी के बारे में पूछा जाएगा। इमाम (हाकिम) भी ज़िम्मेदार है और उससे उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछा जाएगा। पुरुष अपने घर का ज़िम्मेदार है और उससे उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछा जाएगा। और महिला अपने पति के घर की ज़िम्मेदार है और उससे उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछा जाएगा। सुन लो, तुम में से हर व्यक्ति ज़िम्मेदार है और उससे उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछा जाएगा।" (बुख़ारी: ४८९२)
- "तुम में से सबसे अच्छा वह है जो अपने परिवार केलिए अच्छा हो, और मेरा व्यवहार अपने परिवार के साथ बहुत अच्छा है।" (तिर्मिज़ी: ३८९५)

- “एक व्यक्ति रास्ते में यात्रा कर रहा था इतने में उसको तेज़ की प्यास लगी, फिर उसे एक कुआं मिला उसके अंदर उतरा और पानी पिया, फिर बाहर निकला तो देखा कि एक कुत्ता हांफ रहा है और प्यास के कारण कीचड़ खा रहा है, तो उस व्यक्ति ने कहा कि: “जैसे मैं प्यासा था शायद कुत्ते को भी वैसी ही प्यास लगी है, इसलिए वह फिर से कुआं में उतरा और अपने जूते में पानी भरकर उस कुत्ते को पिलाया, अल्लाह ने उसके इस कार्य को बहुत पसंद किया और उसको माफ़ कर दिया।” लोगों ने कहा कि: ऐ अल्लाह के रसूल, क्या जानवरों के साथ भी अच्छा व्यवहार करने पर पुण्य मिलता है? तो मुहम्मद (स.) ने कहा कि: “प्रत्येक जीवित प्राणी के साथ अच्छा व्यवहार करने पर पुण्य मिलता है।” (बुख़ारी: २४६६)
- “बहुमुख (मुनाफ़िक़) की तीन पहचान है: जब बात करे तो झूट बोले, वादा करके वादा खिलाफ़ी करे और अमानत में ख़यानत करे।” (बुख़ारी: ३३)
- “व्यक्ति के इस्लाम की अच्छाई में से यह कि बेकार की बातों को छोड़ दे।” (तिर्मिज़ी: २३१७)
- “अल्लाह हर काम में दयालुता को पसंद करता है।” (बुख़ारी: ५६७८)
- और मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: “जो दयालुता से वंचित है वह हरेक अच्छे कामों (ख़ैर) से वंचित है।” (मुस्लिम: २५९२)



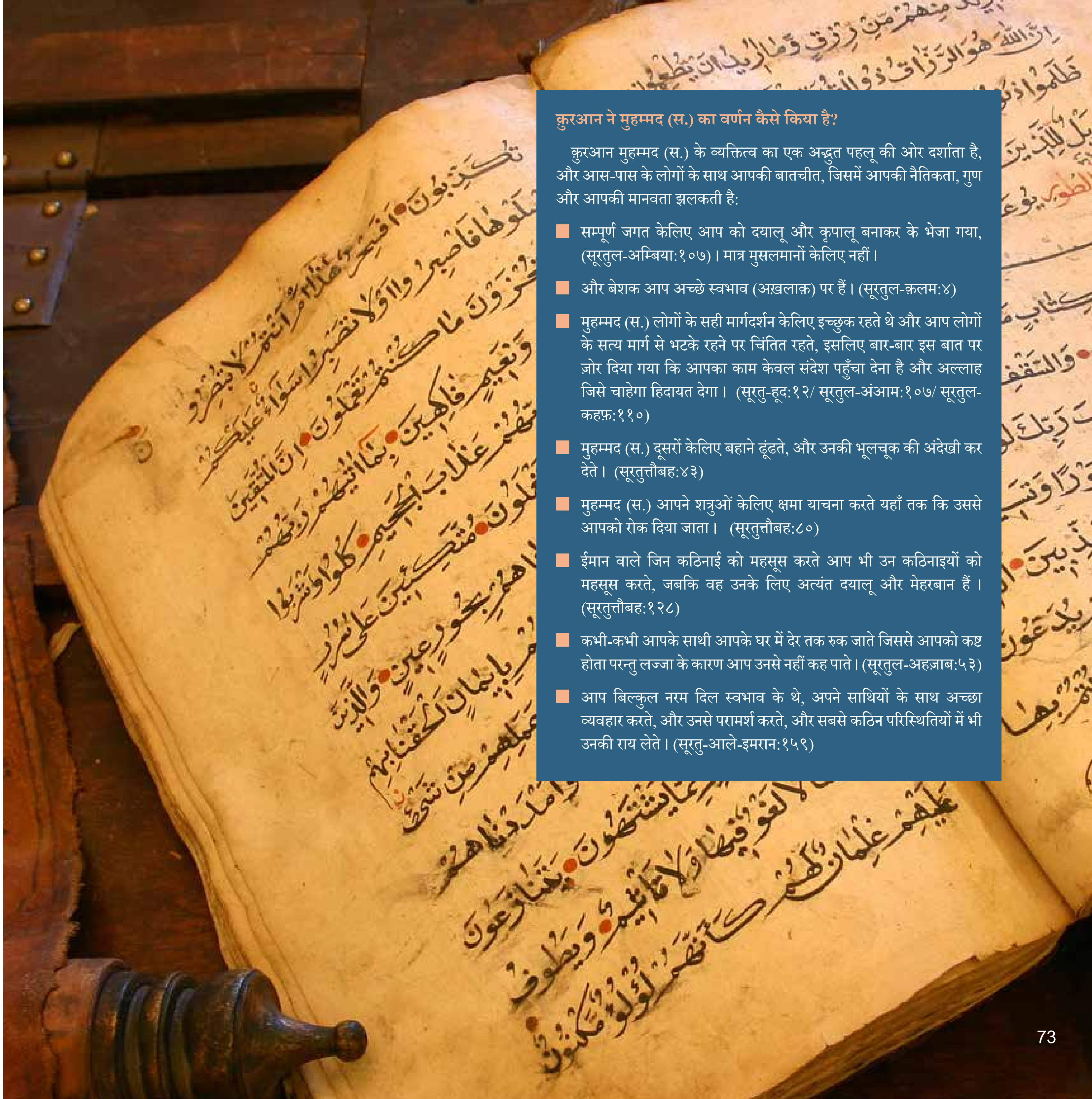

### क़ुरआन ने मुहम्मद (स.) का वर्णन कैसे किया है?

क़ुरआन मुहम्मद (स.) के व्यक्तित्व का एक अद्भुत पहलू की ओर दर्शाता है, और आस-पास के लोगों के साथ आपकी बातचीत, जिसमें आपकी नैतिकता, गुण और आपकी मानवता झलकती है:

- सम्पूर्ण जगत केलिए आप को दयालू और कृपालू बनाकर के भेजा गया, (सूरतुल-अम्बिया:१०७)। मात्र मुसलमानों केलिए नहीं।
- और बेशक आप अच्छे स्वभाव (अख़लाक़) पर हैं। (सूरतुल-क़लम:४)
- मुहम्मद (स.) लोगों के सही मार्गदर्शन केलिए इच्छुक रहते थे और आप लोगों के सत्य मार्ग से भटके रहने पर चिंतित रहते, इसलिए बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया गया कि आपका काम केवल संदेश पहुँचा देना है और अल्लाह जिसे चाहेगा हिदायत देगा। (सूरतु-हूद:१२/ सूरतुल-अंआम:१०७/ सूरतुल-कहफ़:११०)
- मुहम्मद (स.) दूसरों केलिए बहाने ढूंढते, और उनकी भूलचूक की अंदेखी कर देते। (सूरतुत्तौबह:४३)
- मुहम्मद (स.) आपने शत्रुओं केलिए क्षमा याचना करते यहाँ तक कि उससे आपको रोक दिया जाता। (सूरतुत्तौबह:८०)
- ईमान वाले जिन कठिनाई को महसूस करते आप भी उन कठिनाइयों को महसूस करते, जबकि वह उनके लिए अत्यंत दयालू और मेहरबान हैं। (सूरतुत्तौबह:१२८)
- कभी-कभी आपके साथी आपके घर में देर तक रुक जाते जिससे आपको कष्ट होता परन्तु लज्जा के कारण आप उनसे नहीं कह पाते। (सूरतुल-अहज़ाब:५३)
- आप बिल्कुल नरम दिल स्वभाव के थे, अपने साथियों के साथ अच्छा व्यवहार करते, और उनसे परामर्श करते, और सबसे कठिन परिस्थितियों में भी उनकी राय लेते। (सूरतु-आले-इमरान:१५९)

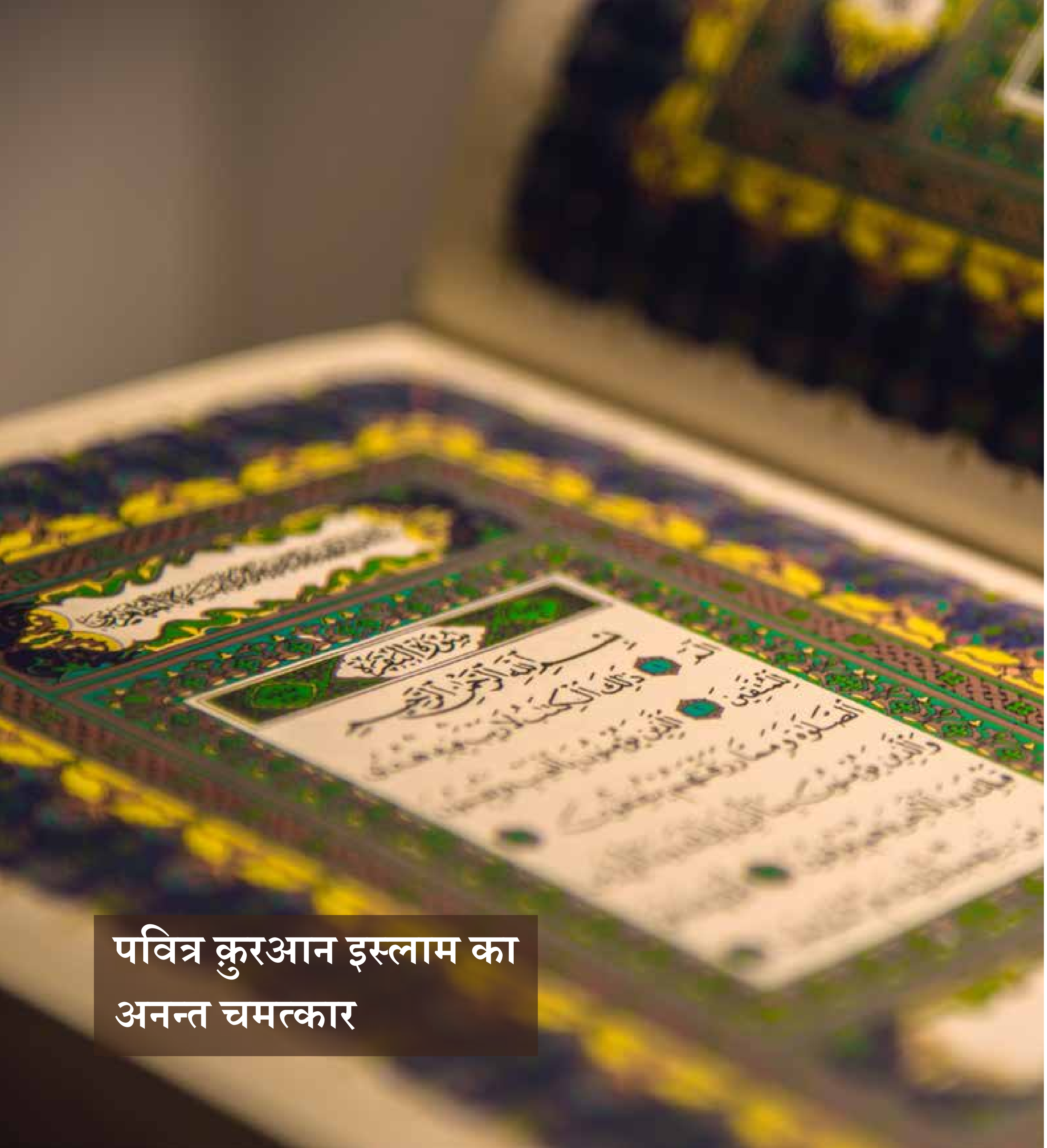

# पवित्र क़ुरआन इस्लाम का अनन्त चमत्कार

विश्व में सबसे अधिक बिक्री और वितरण होने वाली किताब ‘क़ुरआन’ है? और विश्व के डेढ़ अरब से अधिक लोग इसपर विश्वास और आस्था रखने वाले हैं?

**पवित्र क़ुरआन के प्रति मुसलमानों की आस्था:**

- सत्य ग्रन्थ अल्लाह की वाणी है जिसे अल्लाह ने ईशदूत मुहम्मद (स.) पर लोगों के प्रकाश और मार्गदर्शन केलिए अवतरित किया।
- अंतिम आकाशीय धर्मग्रन्थ है।
- किसी भी स्थानान्त्रण और हेरा-फेरी से सुरक्षित है।
- उसको पढ़ना और याद करना, और उसके प्रावधान और क़ानून को अपने जीवन में लागू करना उपासना (इबादत) है।

और जब आप ४० वर्ष के हो गए तो फ़रिश्ते जिब्रील (अ.) के द्वारा क़ुरआन के अवतरित का आरंभ हुआ। और सर्वप्रथम छंद "इक्रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़" अवतरित हुई, (ऐ मुहम्मद, पढ़ो अपने रब के नाम से, जिसने सृष्टि की)। वह परिस्थितियों और घटनाओं के आधार पर २३ वर्षों के अंतराल में अवतरित हुआ।

"और सर्वप्रथम छंद "इक्रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़" अवतरित हुई, (ऐ मुहम्मद, पढ़ो अपने रब के नाम से, जिसने सृष्टि की)। वह परिस्थितियों और घटनाओं के आधार पर २३ वर्षों के अंतराल में अवतरित हुआ।

क़ुरआन में कुल ११४ अध्याय (सूरह) हैं, उसके विषयों और विधियों में विविधता पाई जाती है। परन्तु सब इस बात से सहमत हैं कि क़ुरआन की अरबी भाषा सबसे उच्चतम भाषा है। और क़ुरआन केवल लोगों का मार्गदर्शन करता है और सत्य ईश्वर की पूजा-उपासना की ओर बुलाता है।

**क़ुरआन के मुख्य विषय:**

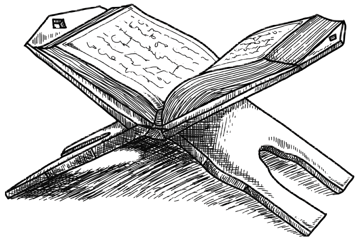

१) सत्य ईश्वर (अल्लाह) के एक होने को प्रमाणित करना, और उसके साथ भागीदार बनाने वालों के संदेहों का खण्डन करना।

२) भविश्वक्ताओं और पूर्व जनजातियों की कहानियाँ।

३) विशाल संसार और आस-पास के प्राणियों और अनेकों वरदान जो उसने हमारे ऊपर किए हैं उस पर विचार-विमर्श करने के लिए आमंत्रित करना।

४) इस्लामिक विधि, उपदेश और आदेशों का स्पष्टीकरण।

५) मोमिनीन के गुणों और नैतिकता का वर्णन, और बुरे गुणों ने बचने की चेतावनी।

६) परलोक के दिन की घटना, और ईमान वालों को अच्छा बदला और दुर्व्यवहारियों को दंडित का वर्णन।

७) मुहम्मद (स.) और उनके साथियों के साथ होने वाली घटनाओं का वर्णन करके मोमिनीम (आस्था वाले) का प्रशिक्षण।

**क़ुरआन की कुछ विशेषताएं:**



**क़ुरआन के संरक्षण में चमत्कार:**

अल्लाह ने अपने ग्रन्थ का नाम क़ुरआन रखा, जिसकी तिलावत की जाती है और सीनों में सुरक्षित है, और कई छंदों में उसने पुस्तक कहा है उसके लेखन और लाइनों में सुरक्षित के कारण। वास्तव में, क़ुरआन दोनों तरीकों से पूरी तरह से संरक्षित किया गया है। यदि जब भी उनपर कुछ अवतरित हुआ तो आपकी उपस्थिति में लिखा गया, और आपने उसको याद कर लिया। संरक्षण की गवाही नहीं स्वीकार नहीं की जाती चाहे वह कितने हों जबतक कि लिखे हुए के अनुसार ना हो जाए, इसी प्रकार लिखा हुआ प्रमाणित नही किया जाता जबतक कि मुहम्मद (स.) के मुंह से याद किये हुए के अनुसार ना हो जाए।

इसाई धर्मगुरुओं का मानना है कि विभिन्न श्रोतों, तिथि के मतभेद, और अनेक प्रकाशन के कारण इंजील (बाइबल) में मतभेद प्राकृतिक चीज़ है। हालाँकि वह अपने दृष्टिकोण से बाइबल को मानवता केलिए मार्गदर्शन समझते रहे हैं। अतः बाइबल (पुराना और नया संस्करण) दोनों बिल्कुल सुरक्षित नहीं है।

लेकिन वास्तविकता और सच्चाई यह है कि कोई भी निषक्ष व्यक्ति इस बात को स्वीकार सकता है कि क़ुरआन में किसी भी तरह का कोई विरोधाभास नहीं है और क़ुरआन इस से बिल्कुल मुक्त है। इसलिए कि शब्द और अर्थ दोनों भी अल्लाह की वाणी हैं। और मुहम्मद (स.) पर जिस रूप में अवतरित हुआ था, आपके साथियों ने लिखकर और याद करके उसी रूप में सुरक्षित रखा, उसमें कोई कमी और वृद्धि नहीं की गई। मुसलमान ने स्वंय के मतभेद के बावजूद भी क़ुरआन के एक शब्द में भी मतभेद नहीं किया।

मुहम्मद (स.) के समय से आज तक के क़ुरआन को मुसलमानों की सभी मुस्लिम पीढ़ियों ने सतर्कता से सुरक्षित रूप से संरक्षित किया है। क़ुरआन के लेखन कार्य, उच्चारण, कैसे लिखना है, शैली, उसको सीनों में संरक्षित करना और एक किताब में एकत्रित करना, इन सब चीजों पर बहुत ध्यान दिया गया है। न उसमें एक अक्षर की कमी है और न ही किसी एक मात्रा वृद्धि। और आज कोई भी व्यक्ति चाहे तो क़ुरआन का कोई प्रतिलिपि चाहे चीन अथवा अफ़्रीक़ा से ख़रीद ले और उसकी तुलना उस क़ुरआन से करे जो हज़ार वर्ष पहले लिखा गया हो और पूरे संसार के संग्रहालयों में रखा हुआ है ताकि उसकी वास्तविकता लोगों के सामने आए, आपको उन तमाम क़ुरआन के प्रतिलिपि में कोई एक अक्षर और मात्रा का अंतर विभिन्न समय और भाषा की विविधता के बावजूद नहीं मिलेगा और सम्पूर्ण प्रतिलिपि एक समान मिलेंगे। चाहे आप आज इंडोनेशिया में किसी एक बच्चे से क़ुरआन सुनें अथवा किसी मुस्लिम धर्मगुरु से जिसने मक्का में आज से हज़ार वर्ष पूर्व पढ़ा अथवा याद किया हो। क़ुरआन में आया है कि: "अगर यह अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे की ओर से होता तो बेशक उसमें बहुत कुछ मतभेद पाते।" (सूरतुन-निसा:८२) और उसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है इसलिए कि अल्लाह ने स्वंय उसकी रक्षा की ज़िम्मेदारी ले ली है, अल्लाह में फ़रमाया कि: "बेशक हम ने ही इस क़ुरआन को अवतरित किया है और हम ही उसकी रक्षा करने वाले हैं।" सूरतुल-हिज्र:९)

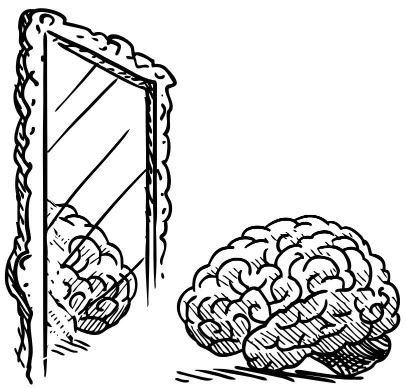

## क़ुरआन का ग्राफिकल और मनोवैज्ञानिक चमत्कार:

जो भी क़ुरआन को ध्यानपूर्वक पढ़ता है, वह महसूस करता है कि क़ुरआन व्यक्तिगत और सटीक रूप से पढ़ने वाले को सम्बोधित कर रहा है। और उससे आश्चर्य की बात यह है कि वह उसके विचारों से पूर्व ही निर्देशित करता है। जैसे कि स्वंय केलिए घोषित करने से पहले पढ़ रहा हो!

एक कलाकार आँख का चित्र बनाने में सक्षम है और दर्शक जहाँ-जहाँ जाता है उसको ऐसा महसूस होता है कि आँख उसका पीछा कर रही है। परन्तु क़ुरआन अपने पाठकों के बारे में वर्णन करता है कि वह क्या सोचता है, और कभी-कभी पाठक के दिमाग़ में प्रश्न उठने से पूर्व ही उसका उत्तर दे देता है जबकि पाठक विभिन्न क्षेत्र और सांस्कृति के होते हैं और जीवन की परिस्थितियाँ भी अलग होती हैं।

मानव इच्छाओं का निदान, उनके रहस्यों और कमज़ोरियों को दर्शाने की क़ुरआन की अपनी एक अलग शैली है। हालांकि आरंभ में पाठक केलिए यह कठोरता का कारण बन जाता है। और यह केवल इतना ही है कि आत्मा को दिमाग़ और हृदय के उन प्रश्नों केलिए जागृत करना है जिन्हें लंबे समय से स्थगित कर दिया गया है, और उनका उत्तर देने से भागता है..।

जब हम में से कोई क़ुरआन को पढ़ता है और उसमें बयान किए गए लोगों की कहानियों और गुणों का अध्ययन करता है, और उनकी सोच, रहस्यों और आरंभिक बिंदुओं के साथ जीवन बिताता है, उन में से कुछ की मुक्ति और कुछ की गुमराही (पथभ्रष्ट) के बारे में पढता है..। तो थोड़ी देर रुक कर वह अपना मूल्यांकन करने लगता है.. और इस जैसी छंद, चित्र और मॉडल असंख्य हैं। और धीरे-धीरे उसके दिल में बातें उतरने लगती हैं, यहाँ तक कि क़ुरआन उसके लिए दर्पण हो जाता है, जिससे उसकी वास्तविकता, ऐब और कमी, संभावनाएं और अवसर सब स्पष्ट हो जाते हैं। तो वही पाठक गहराई से सोच-विचार करने के पश्चात् स्वच्छ मन से “ला इलाह इल्लल्लाह” (अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य योग्य नहीं है) पढ़ कर इस्लाम को स्वीकार कर लेता है।

इसीलिए आप देखते हैं कि जब कोई निराश हो जाता है तो अल्लाह की इस वाणी को पढ़ कर संतुष्ट हो जाता है कि: “हे दूत, आप कह दो कि हे मेरे बन्दो! जिन्होंने अपनी जानो पर अत्याचार (ज़ुल्म) किए हैं तुम अल्लाह की कृपा (रहमत) से निराश न हो जाओ, बेशक अल्लाह सभी पापों को क्षमा (माफ़) कर देता है, निसंदेह वह अत्यंत क्षमाशील और दयालू है।” (सूरतुज़्ज़ुमर:५३)

जब कोई आंतरिक पीड़ा और दुःख महसूस करता है और किसी शरण की खोज में होता है तो वह अल्लाह की इस आयत को पढ़कर सुख पाता है: “और जब कोई बन्दे (भक्त) मेरे बारे में आपसे प्रश्न करें तो कह दें कि मैं बहुत क़रीब हूँ, हर पुकारने वाले की पुकार को जब कभी भी वह मुझ को पुकारे मैं स्वीकार करता हूँ, इसलिए लोगों को चाहिए कि वह मेरी बात मानें और मुझ पर ईमान और आस्था रखें यही उनकी भलाई का कारण है।” (सूरतुल-बक़रह:१८६)



जब कोई व्यक्ति यह सोचता है कि उसका जीवन नियंत्रण से बाहर है और अब अपने परिचालनों को सहन या नियंत्रित नहीं कर सकता है, तो उसे अल्लाह की इस आयत को पढ़कर उपचार और सहायता मिल जाती है: “अल्लाह किसी भी आत्मा (नफ़्स) पर उसकी क्षमता से अधिक बोझ नहीं डालता, उसकी कमाई का पुण्य उस केलिए है और जो पाप वह करे वह उसी पर है। हे हमारे रब!अगर हम भूल गए हों या ग़लती की हो तो हमें न पकड़ना। हे हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो हम से पहले लोगों पर डाला था। हे हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो हमारी क्षमता में न हो और हमें माफ़ कर दे, और हमें माफ़ी अता कर, और हम पर दया कर, तू ही हमारा मालिक है, हमें काफ़िरों पर विजय अता कर।” (सूरतु-आले-इमरान:२८६)

विल डुरान्ट ने क़ुरआन के महत्व और प्रभाव को स्वीकार किया है और उसको अपनी प्रसिद्ध किताब (सभ्यता की कहानी:१३/६८-६९) में उल्लेख किया और कहा:

> विल डुरान्ट कहता है:
>
> “कई शिक्षित और बुद्धजीवी लोगों ने क़ुरआन को मन और विचार के विभिन्नताओं के बावजूद स्वीकारा और ईमान लाए हैं, और यह केवल इसलिए है इस्लाम का सिद्धांत और आस्था सत्य, स्पष्ट, सरल और आसान है, जिसको सब लोग स्वीकार करते हैं।

अतीत के हर युग में अलग-अलग कुछ शिक्षित और बुद्धजीवी लोगों ने क़ुरआन को स्वीकारा है और उसपर ईमान लाए हैं। और इस युग में जिसमें हम रहते हैं मन और विचार के विभिन्नताओं के बावजूद भी अनगिनत (असंख्य) लोग उसपर ईमान लाए हैं। और यह केवल इसलिए है इस्लाम का सिद्धांत और आस्था सत्य, स्पष्ट, सरल और आसान है, जिसको सब लोग स्वीकार करते हैं, और रीतिरिवाज और अनुष्ठान के पालन से दूर है, मूर्तिपूजा और सृष्टि पूजा से मुक्त है। इस्लाम ने लोगों को जीवन की कठिनाइयों का सामना करने और शिकायत या ऊब के बिना, उनके प्रतिबंधों का पालन करने के की शिक्षा देता है। धर्म को विशेष रूप से परिभाषित किया गया है, और न कोई यहूदी और न ही इसाई जो सच्चे सिद्धांत और आस्था पर हैं उन्हें इस्लाम स्वीकार करने से कोई चीज़ नहीं रोक सकती। क़ुरआन में अल्लाह फ़रमाता है कि: “सारी अच्छाई पूर्व और पश्चिम की ओर मुंह करने में ही नहीं, बल्कि वास्तव में अच्छा वह इंसान है जो अल्लाह पर, परलोक पर, फ़रिश्तों पर, अल्लाह की किताब पर और ईशदूतों पर ईमान रखने वाला है, जो धन से प्रेम करने पर भी रिश्तेदारों, यतीमों, ग़रीबों, मुसाफ़िरों और भिखारियों को दे, क़ैदियों को आज़ाद करे, नमाज़ की पाबंदी और ज़कात अदा करे, जब वादा करे तो उसको पूरा करे, धन की कमी, दुःख-दर्द और लड़ाई के समय सब्र करे, यही सच्चे लोग हैं और यही परहेज़गार (बुराई से बचने वाले) हैं।” (सूरतुल-बक़रह:१७७)

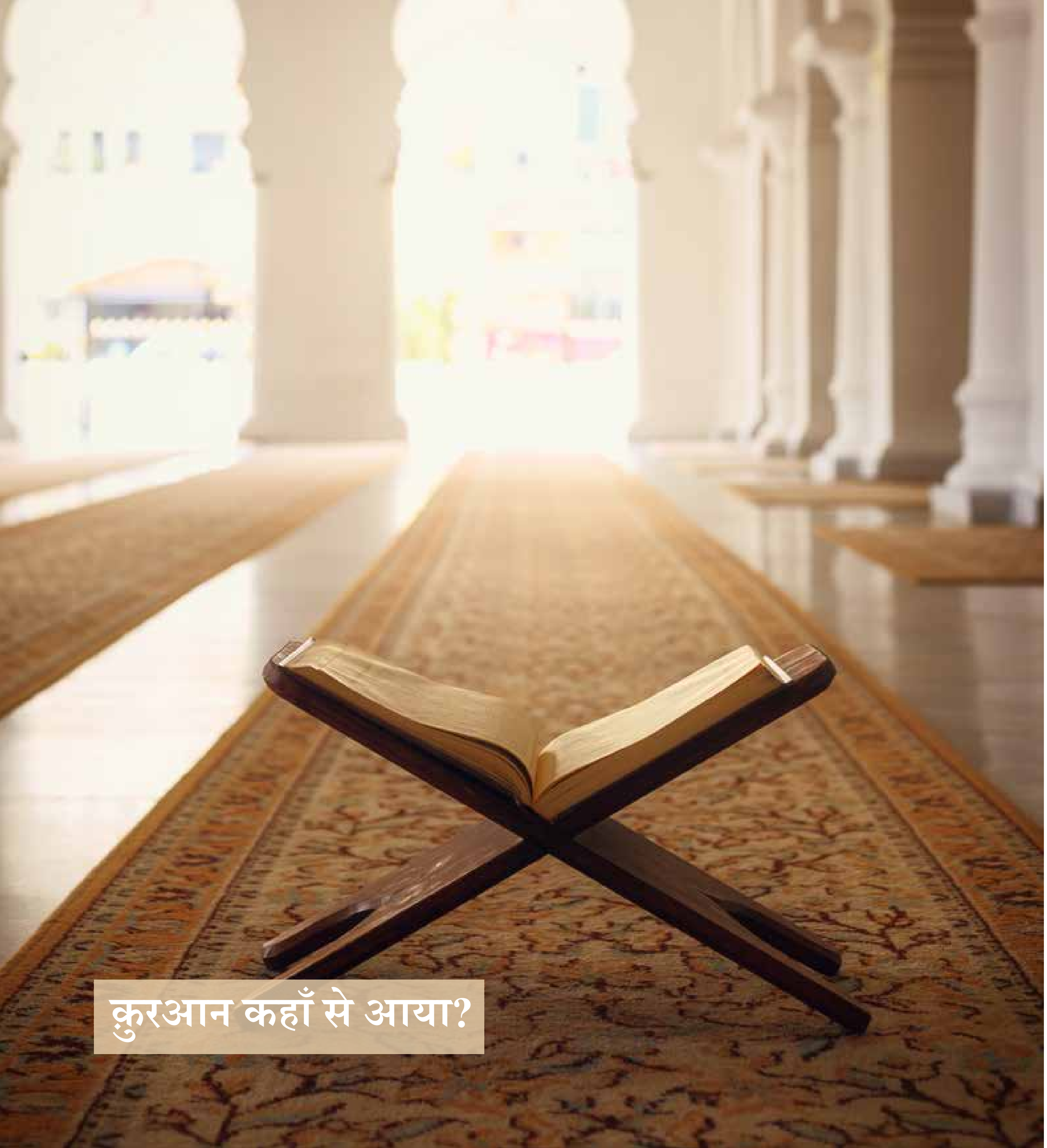

# क़ुरआन कहाँ से आया?

मुसलमानों

मुसलमानों की पवित्र पुस्तक क़ुरआन और मुहम्मद (स.) के बारे में बात करते समय एक तार्किक प्रश्न सीधे दिमाग़ में आता है। क्या हमें इस विषय के बारे में मुसलमानों की बात स्वीकार कर लेनी चाहिए? क्या हमें उसके बारे में प्रश्न पूछने का अधिकार नहीं?

इतिहासकारों का इसमें कोई मतभेद नहीं कि क़ुरआन एक अरबी व्यक्ति पर अवतरित हुआ, जो लिखना-पढ़ना नहीं जानते थे। छटवीं शताब्दी में मक्का में आपका जन्म हुआ, और आपका नाम मुहम्मद बिन-अब्दुल्लाह है। और नियमित रूप से लोगों की गवाही भी है इसलिए किसी प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं। जैसा कि हम स्पष्ट रूप से इस किताब में पढ़ते हैं कि यह क़ुरआन मुहम्मद (स.) का लिखा हुआ नहीं, बल्कि यह अल्लाह की वाणी है जो आपकी ओर अवतरित की गई। और मुहम्मद (स.) का काम केवल बिना किसी कमी और वृद्धि के लोगों तक स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है।

तो क्या यह संभव है कि मुहम्मद (स.) ने स्वंय इसका आविष्कार किया हो, अथवा सीख कर उसको लोगों के सामने प्रस्तुत किया?

> यदि इस्लाम के ईशदूत (मुहम्मद) लोगों पर अपना प्रभाव बढ़ाने केलिए अपने शब्दों को ईश्वर से जोड़ कर धोखाधड़ी करना चाहते, तो अपने सभी शब्दों में यह दावा क्यों नहीं किया?!

क़ुरआन और मुहम्मद (स.) की जीवनी से अज्ञात व्यक्ति के दिमाग़ में ऐसे प्रश्नों को आना स्वाभाविक है। परन्तु जब वह क़ुरआन और मुहम्मद (स.) की जीवनी के बारे में पढ़ता है तो ऐसी चीजों के बारे में सोच भी नहीं सकता।

जैसा कि हम जानते है और इतिहास भी इस बात का साक्षी है बहुत से लेखक और विचारक जो प्रभाव डालने केलिए लोगों के लेख को चोरी कर लेते हैं और उसका श्रेय स्वंय को देते हैं। तो एक व्यक्ति दूसरे के प्रभाव को स्वंय का श्रेय क्यों देता है?

यह प्रश्न बार-बार उठता है यदि इस्लाम के ईशदूत (मुहम्मद) (स.) लोगों पर अपना प्रभाव बढ़ाने केलिए अपने शब्दों को ईश्वर से जोड़ कर धोखाधड़ी करना चाहते, तो अपने सभी शब्दों में यह दावा क्यों नहीं किया?!

क्या यह कल्पना की जा सकती है कि वह उन्होंने लिखा, और पुस्तक का आविष्कार किया है, और ईश्वर से जोड़ कर अपने प्रभाव, प्रतिष्ठा और सम्मान को बढ़ाना चाहा। जबकि उसी समय हमें क़ुरआन में कई ऐसे स्थान मिलते हैं जहाँ सीधे मुहम्मद (स.) को फटकार लगाई गई है, और उनको मार्गदर्शित किया गया है और कहीं अगर भूल-चूक हो गई है तो उसको सुधारने के निर्देश दिए गए हैं।

क़ुरआन को पढ़ने वाला इस बात को अच्छी तरह से जानता है कि बिना किसी पक्षपात के हरेक को अनुकूल सुझाव और निर्देश दिया गया है। यहाँ तक कि अपने परिवार के मामलों में मुहम्मद (स.) की ग़लतियों, उनके द्वारा किए गए कुछ निर्णय बल्कि लोगों को इस्लाम की ओर आमंत्रित करने में भी आपको सुझाव और निर्देश दिया गया।

उदाहरण: एक दिन ऐसा हुआ कि मुहम्मद (स.) क़ुरैश के एक महान व्यक्ति को इस्लाम की ओर आमंत्रित करने में व्यस्त थे इतने में एक अंधे व्यक्ति आपके पास आते हैं, अंधे व्यक्ति को यह नहीं पता है कि मुहम्मद (स.) व्यस्त हैं, तो उसने आपको आवाज़ देते हुए कहा कि: अल्लाह ने जो आपको सिखाया है मुझे भी सिखलाएँ, और ज़ोर देकर कई बार कहा, उस नेत्रहीन व्यक्ति का चेहरा रोष से बदल गया और मुहम्मद (स.) उस क़ुरैश के व्यक्ति को इस्लाम की ओर आमंत्रित करने में व्यस्त थे और उस अंधे व्यक्ति को कोई उत्तर नहीं दिया, आपने सोचा कि अगर वह थोड़ी देर रुकें तो मैं उनका उत्तर देता हूँ, लेकिन वह चले गए, उसी समय क़ुरआन का अवतरित होना बंद हो गया और इतिहास ने उसको प्रमाणित किया है, और उसको बहुत बारीक और स्पष्टता से बयान किया है कि कैसे मुहम्मद (स.) ने उस अंधे व्यक्ति को छोड़ दिया और उसकी बातों का कोई उत्तर नहीं दिया। और यहाँ पर क़ुरआन का अवतरित होना ही बंद नहीं हुआ बल्कि मुहम्मद (स.) को फटकार भी लगाई गई और आगे से ऐसा न करने का निर्देश दिया गया। क़ुरआन में एक अध्याय है जिसका नाम "अ.ब.स" है जिसमें इस पूरी घटना को स्पष्टता से बयान किया गया है। और उसके पश्चात् जब कभी भी वह अंधे व्यक्ति आए तो मुहम्मद (स.) ने उनका स्वागत इन शब्दों से किया "स्वागत है आपका जिसके बारे में मेरे रब ने मुझे फटकार लगाई" और आप अपनी चादर को उसके लिए फैला देते।

क़ुरआन ने मुहम्मद (स.) के बारे में कई मार्गदर्शन और उनसे होने वाली कुछ ग़लतियों को प्रमाणित किया है, जिसको हम में से कोई कभी-कभी उसको लोगों के सामने बयान भी करता है..। तो क्या कोई भी व्यक्ति इस प्रकार से अपनी ग़लतियों को फैलाएगा और उसको इतिहास में बाक़ी रखेगा, अगर वह स्वंय केलिए प्रतिष्ठा और सम्मान चाहता है!

इतिहास इस बात को प्रमाणित करता है कि मुहम्मद (स.) ने कठिन परिस्थीतीयों में अपना जीवन बिताया, अपनी सच्चाई, प्रतिष्ठा और अपनी और अपने परिवार की निर्दोषता केलिए "वही" के आने की प्रतीक्षा और इच्छा करते, परन्तु वही नहीं आती..।

उदाहरणस्वरूप; आपके समुदाय के शत्रु जिन्होंने आपको कष्ट पहुँचाया उन्होंने पुराने विद्वानों और लेखकों की मुहम्मद (स.) के विरुद्ध सहायता ली।

उन्होंने तीन प्रश्न पूछने को कहा, अगर वह उत्तर देते हैं तो वह संदेष्टा हैं, अगर उत्तर नहीं देते तो वह संदेष्टा नहीं..। तो उन लोगों ने ऐसा ही किया और प्रशन पूछे, तो मुहम्मद (स.) ने उनको चुनौती देते हुआ कहा कि कल उत्तर दूँगा..।

और रहस्योद्घाटन कुछ दिनों तक वही का आना बंद हो गया, और आपके शत्रु आपके पास आते और उत्तर न दे पाने के कारण आपका मज़ाक उड़ाते। जिसके कारण आपको बहुत दुःख पहुँचा। उन प्रश्नों का उत्तर देने केलिए १५ दिनों पश्चात् मुहम्मद (स.) पर क़ुरआन अवतरित हुआ, और उसके साथ-साथ मुहम्मद (स.) को मार्गदर्शित भी किया कि: आप यह न कहो कि कल मैं कर दूँगा जबतक कि उसमें अल्लाह की इच्छा को न जोड़ें, और कहें: "इन शा अल्लाह" (अगर अल्लाह चाहे), और वही के आने में विलंब इसी बात का कारण था ताकि अल्लाह आपको इसी माध्यम से सिखा दे। (सूरतुल-कहफ़:२४)

> क़ुरआन ने मुहम्मद (स.) के बारे में कई मार्गदर्शन और उनसे होने वाली कुछ ग़लतियों को प्रमाणित किया है, जिसको हम में से कोई कभी-कभी उसको लोगों के सामने बयान भी करता है..।

## बार-बार लगाए गए आरोप:

वास्तव में! मुहम्मद (स.) की कहानी और आपका जीवन आपकी ईमानदारी के सबूत के रूप में माना जा सकता है.. ।

कैसे एक व्यक्ति जो अनपढ़ और अशिक्षित हो और अशिक्षित लोगों के बीच में रहता हो, और उन्हीं के साथ जीवन बिताता हो और उसके समारोहों में भाग लेता हो । और जीविका केलिए मज़दूरी करके बकरी चराता हो, या मज़दूरी पर व्यापार करता हो, विद्वानों से आपका कोई सम्बंध नहीं था । आपने उनके बीच ४० वर्ष बिताया और एक पल में उनसे ऐसी बातें करने लगे जो वह न जानते थे और न उन्होंने अपने पूर्वजों से सुना । प्राचीन समुदायों की कहानियाँ, सृष्टि प्रारंभ का इतिहास, पूर्व-भविष्यवक्ताओं के जीवन का विवरण और जीवन के सभी क्षेत्रों में इस्लामिक क़ानून के प्रावधानों की बारीकियों के बारे में मुहम्मद (स.) उनको सूचित करने लगे!..

इस सच्चाई ने मुहम्मद (स.) के शत्रु को बहुत आघात पहुँचाया, इसलिए उन्होंने जो कहा उसे वर्णन करने केलिए परेशान थे, कि वह कौन सा आरोप आप पर लगाया जाए जिससे लोगों को आपसे दूर किया जा सके?

उन लोगों केलिए यह दावा करना भी बहुत कठिन था कि क़ुरआन मुहम्मद (स.) का अविष्कार है, जिसने क़ुरआन को पढ़ा वह इस बात को जानता है । और न ही आपने उसको किसी और से सिखा, इसलिए कि वह हमारे साथ रहते हैं, और हम उसके जीवन का विवरण जानते हैं..। इसलिए उन्होंने उसके विरुद्ध आरोप लगाया, कभी कहते कि उसने अपने पूर्वजों से लिया है तो कभी कहते कि उसका अपना अविष्कार है, और कभी वह लोग कहते कि: उसके सपनों की कहानियाँ हैं.. । जब वह इन आरोपों को प्रमाणित करने में असमर्थ दिखे तो उन्होंने कभी आपको जादूगर, कवि और कभी-कभी पागल कहा! ।

अलग-अलग नामों से एक ही कहानी है..। क्या मूसा (अ.) के शत्रुओं ने उनपर जादूगर का आरोप नहीं लगाया? क्या ईसा (अ.) के शत्रुओं ने ईसा (अ.) को पागल नहीं कहा?

> और ऐसा तो सभी पिछले भविष्यवक्ताओं के साथ हुआ था, जब उनके शत्रु अपने आरोपों को प्रमाणित न कर सके तो उन्होंने उनके बारे में जादूगर और पागल होने का दावा किया।

और ऐसा तो सभी पिछले भविष्यवक्ताओं के साथ हुआ था, जब उनके शत्रु अपने आरोपों को प्रमाणित न कर सके तो उन्होंने उनके बारे में जादूगर और पागल होने का दावा किया। और इसी प्रकार झूटी गवाही देने वाला करता है जब वह अपनी बातों में शर्मिंदा होता है और उसके पास कोई तर्क नहीं होता तो वह तुरन्त पलट जाता है और जैसा चाहे वैसा आरोप लगाता है इस आशा और उम्मीद पर कि उसे जीत प्राप्त हो, पर ऐसा संभव कहाँ?

## इसे केवल एक प्रतिभा क्यों न मानें:

इस बात पर सभी सहमत है कि अल्लाह ने इंसान को ऐसी क्षमता और रचनात्मकता प्रदान की है जिसकी कल्पना करना कठिन है । लेकिन क्या बुद्धि केलिए निष्कर्ष और विकास की सीमाएं प्राकृतिक नहीं हैं..। यद्यपि मन एक सक्षम निर्माता, शक्तिशाली, रब के अस्तित्व की पुष्टि करता है, और इस रब को न्याय के लिए किसी अन्य जीवन के अस्तित्व की आवश्यकता होती है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को फल्स्वरूप इनाम दिया जाए या दंडित किया जाए । लेकिन क्या दिमाग़ विवरण और अन्य बारीकियों को प्रमाणित कर सकता है, जबकि उसके पास सबूत और साक्ष्य नहीं हैं? ।

क़ुरआन से परिचित व्यक्ति इस बात को जानता है कि क़ुरआन ईमान की सीमाओं की विस्तृत जानकारी देता है । और जगत की सृष्टि और उसका अंत, स्वर्ग का आनंद और नरक की यातना, स्वर्ग और नरक के दरवाज़ों कि संख्या, और उसके लिए तैनात फ़रिश्तों की संख्या और संसार और मानव जाति की वास्तविकता का विस्तार से वर्णन करता है । तो फिर किस मानसिक सिद्धांत ने सभी विवरणों का निर्माण किया?

यह बुद्धि और प्रतिभा से प्राप्त नहीं किया जा सकता है । यह तो केवल झूठ और अटकलें हैं, या यह एक ऐसा अधिकार है जिसे शिक्षा और प्रवचन के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है ।

आजके आधुनिक विज्ञान ने कुछ तथ्यों को प्रमाणित किया है, जिसकी जानकारी में कुछ भी विरोधाभास नहीं । इसी प्रकार पिछली आकाशीय किताबों में जो अदृश्य ज्ञान हैं उससे मेल खाता है ।

## संभवत: यह पहले ग्रंथों से लिया गया है:

अगर हम एक पल रुक कर चिंतन करें कि क्या ऐसा संभव है कि यह जानकारी पिछले भविष्यवक्ताओं की किताबों से ली गई है?

हम ने मुहम्मद (स.) की वास्तविकता पर चर्चा की कि आप अशिक्षित थे पढ़ना लिखना नहीं जानते थे, और आपके समुदाय के अधिक लोग अनपढ़ थे । और न उनके पास ऐसा विज्ञान था, और न ही उन्होंने पिछले किसी धर्मगुरुओं से कुछ सिखा । केवल बचपन में जब अपने चाचा के साथ सीरिया जा रहे थे उस समय अपने लोगों की उपस्तिथि में इसाई धर्मगुरु से भेंट किया था । उस समय के विद्वानों और धार्मिक नेताओं को अपनी स्थिति को संरक्षित करने और दूसरों पर अपनी महानता दिखाने के लिए ज्ञान को छिपाने की प्रवृत्ति थी, और इतिहास इस बात को प्रमाणित करता है । और उस समय ज्ञान सीखना भी आसान नहीं था..।

अगर हम इस सब से आगे बढ़ते हैं तो हमें यह पता चलता है कि किसी भी शोधकर्ता के सामने सच्चाई यही है कि क़ुरआन उन तमाम चीजों का समर्थन नहीं

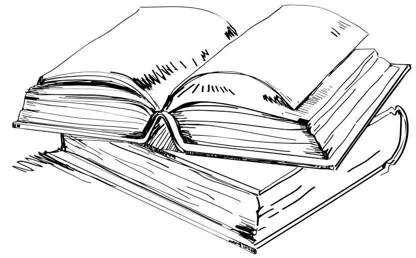

करता जो पूर्व की आकाशीय किताबों में मवजूद थी, बल्कि क़ुरआन तो झूटी जानकारी को सही करने (जो उनके कुछ धर्मगुरुओं ने बदल दिया था), और अपूर्ण कहानियों को पूरा करने, ज्ञान को छुपाते थे उसको बयान करने केलिए, उनके ग़लत आस्था का खण्डन करने, उनके ग़लत व्यवहार और सांस्कृति को बयान करने केलिए क़ुरआन आया । और क़ुरआन इस जैसे उदाहरणों से भरा पड़ा है ..। तो अब, इस ऐतिहासिक प्रमाण को खारिज करते हुए, क्या मुहम्मद (स.) उन धार्मिक नेताओं का शिष्य हो सकते हैं और उनके ज्ञान को सही ठहरा सकते हैं?

## विभिन्न ऐतिहासिक तथ्य:

शोधकर्ता और न्याय प्रेमी निष्पक्ष रूप से थोड़ी देर रुक कर सोचें.. क्या मुहम्मद (स.) एक अरबी व्यक्ति नहीं थे?

इतिहास इस बात का साक्षी है कि उस समय अरब समुदाय के पास कोई कला नहीं थी सिवाय इसके कि वह अपनी भाषा और लेखन की शैली पर गर्व करते थे । उनका उद्योग केवल कविता और साहित्य था, जिसके लिए मंच और सभा धारण करते और सभा आयोजन करते थे । साहित्य और कविता के आधार पर किसी समुदाय को उच्च श्रेणी में रखा जाता तो किसी को निचली श्रेणी में!

इतिहास और साहित्य की किताबें हमें बताती हैं जब कोई काव्य या गद्य कहता तो लोग उसकी आलोचना करते, अगर कुछ कमी रह जाती तो उसको पूरा करते, वह जानते थे कि उनसे कहाँ चूक हो रही है और अपने अंदाज़ में उसका उत्तर देते । अत: यही उनकी दौड़ का क्षेत्र, और अपनी शक्ति और विशिष्टता की उपस्थिति थी?

यदि मुहम्मद (स.) सत्य ईशदूत नहीं होते तो आप अपने शत्रुओं को चुनौती नहीं देते जो शत्रु आपको बुरा-भला कहते और लोगों को आपसे दूर रहने की चेतावनी देते। परन्तु जब मुहम्मद (स.) ने उनको क़ुरआन जैसी किताब या उससे छोटी कोई किताब लाने की चुनौती दी तो आपके शत्रुओं ने आपकी इस चुनौती को स्वीकार करने के बजाए मौन धारण कर लिया और भागते फिरे।

यदि क़ुरआन मुहम्मद (स.) की रचना होती तो चुनौती देने से पूर्व सोचते इसलिए कि वह लोग अरब के महाकवि और साहित्यकार थे, और उनकी अपनी शक्ति थी। अगर वह चाहते तो आपने बहस करते, आपसे लड़ते, और लोगों के सामने इस बात को स्पष्ट करते कि मुहम्मद (स.) जो क़ुरआन लेकर आए हैं वह ग़लत है परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया!

अगर यह मान लिया जाए कि आपने अपने समुदाय की क्षमताओं को जानने केलिए ऐसी हिम्मत की, तो भविष्य के पीढ़ियों पर और परलोक तक आने वाले लोगों पर ये कैसे निर्णय ले सकते हैं कि वह इस जैसी कोई किताब और न ही उसका कोई भाग नहीं ला सकते, यघपि लोग उसको लाने पर एक-दूसरे के सहायक क्यों न बन जाएँ?!

वास्तव में एक साहसिक और जोखिम पूर्ण चुनौती थी, और ऐसा वही व्यक्ति कर सकता है जिसके अंदर पूर्ण आत्मविश्वास और दृढ संकल्प हो.. और मामला ऐसा ही था। क़ुरैश और अरब जनजाति के महाकवि और साहित्यिकार न ही क़ुरआन जैसी कोई किताब लाए और न ही क़ुरआन का कोई अध्याय पेश करने की हिम्मत कर सके। और वास्तविकता और सच्चाई यही है कि १४ शताब्दी से लेकर आज तक यही चुनौती बाक़ी है। और इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिसने भी ऐसा प्रयास किया तो वह स्पष्ट रूप से असफल रहा और अपने समुदाय केलिए मज़ाक और साहित्यक अवमानना का कारण बन गया।

## अंतिम शब्द:

हम में से प्रत्येक व्यक्ति को क़ुरआन के बारे में अपना व्यक्तिगत अनुभव उसकी स्तिथि, पढ़ने, अध्ययन करने के बारे में साझा करना चाहिए। अगर अरबी भाषा नहीं आती तो अपनी भाषा केलिए उचित अनुवाद का चयन सुनिश्चित करे।

मुहम्मद (स.) के ईशदूत होने के बारे में सबसे बड़ा सबूत क़ुरआन है, इसलिए सब को क़ुरआन का अध्ययन करना चाहिए। क़ुरआन का अध्ययन करने और पढ़ने के पश्चात् आप सही निश्कर्ष तक पहुँच जाएँगे। अल्लाह पवित्र क़ुरआन में कहता है कि: "क्या उन्हें यह काफ़ी नहीं कि हम ने आप पर अपनी किताब अवतरित कर दी जो उनपर पढ़ी जा रही है। इस में रहमत (भी) है और नसीहत (भी) है, उन लोगों केलिए जो ईमान वाले हैं।" (सूरतुल-अनकबूत:५१)

और सभी को क़ुरआन पढ़ने और उसका अध्ययन करने का आह्वान करता है और इसके ज्ञान वही व्यक्ति वंचित और दूर रहेगा जिसके हृदय और बुद्धि पर ताला लग चुका हो। (सूरतु-मुहम्मद:२४)

## सूरतुल-फ़ातिहा:

क़ुरआन की सबसे महान सूरह है और मुसलमान बराबर उसको हर नमाज़ में पढ़ता है, और संक्षेप में इसका अर्थ यह है:

### सूरतुल-फ़ातिहा का अर्थ:

| | |
|---|---|
| (अल्लाह के नाम से आरंभ करता हूँ जो अत्यंत कृपालु और दयालु है) | मैं अल्लाह के नाम से उसका सम्मान और आदर करते हुए शुरू करता हूँ, वह दयालु है जिसकी कृपा हर चीज़ को अपने घेरे में लिए हुए है। |
| समस्त प्रकार की प्रशंसा उस अल्लाह केलिए है जो सर्वलोक का रब है। | प्रेम और महानता के साथ अल्लाह के सभी गुणों, कार्यों और तमाम प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नेमतों के साथ प्रशंसा की गई है। वही तमाम सृष्टि का निर्माता और जन्मदाता है और हर प्रकार का अधिकार केवल उसी को है। |
| जो अत्यंत कृपालु और दयालु है। | दया (रहमत) और उसका अर्थ तमाम क्षेत्रों और प्रस्तिथियों को सम्मिलित है, और अल्लाह की सामान्य दया इस संसार की हर चीज़ को घेरे हुए है, और एक विशेष दया और रहमत जो केवल उसके ऊपर आस्था (ईमान) रखने वाले लोगों केलिए है। |
| बदले के दिन अर्थात क़यामत का स्वामी है। | बदले और हिसाब के दिन का पूर्णरूप से स्वामी है। |
| हम विशेष रूप से केवल तेरी ही उपासना करते हैं, और समस्त कार्यों में तुझ ही से सहायता मांगते हैं। | हम केवल तेरी ही विशेष रूप से उपासना करते हैं, और उपासना में किसी को भी भागीदार नहीं बनाते, और समस्त कार्यों में हम तुझ ही से सहायता मांगते हैं, इसलिए कि तमाम चीजों का स्वामी तू ही है तुम्हारे सेवाय कोई एक कण का भी मालिक नहीं। |
| हमें इस्लाम का सत्य और सीधा मार्ग दिखा। | हे अल्लाह! हमें सीधे और सत्य मार्ग की तौफ़ीक़ प्रदान कर, तथा उसी पर हमारी मृत्यु तक जमे रहमे की शक्ति प्रदान कर। |
| उन लोगों का मार्ग जिन पर तेरा इनाम व एकराम हुआ। | उन भविष्यवक्ताओं और सदाचारी लोगों का मार्ग जिनको तूने हिदायत और दृढ़ता प्रदान की, जिन्होंने सत्यता को पहचान कर उसको अपनाया। |
| उनका मार्ग नहीं जिन पर तेरा प्रकोप आया, न ही उनका जो गुमराह तथा पथभ्रष्ट हुए। | हमें उन लोगों के मार्ग से दूर रख और मुक्ति प्रदान कर जिन पर तेरा प्रकोप आया और जैसे (यहूदी) जिन्होंने सत्यता को पहचान कर उसको नहीं अपनाया, और उनके मार्ग से जो अज्ञानता के कारण सत्य मार्ग से भटक गए जैसे (इसाई), और अल्लाह के मार्ग को छोड़कर सत्य की खोज करनी चाही। |
| आमीन | हे अल्लाह! क़बूल कर ले। |

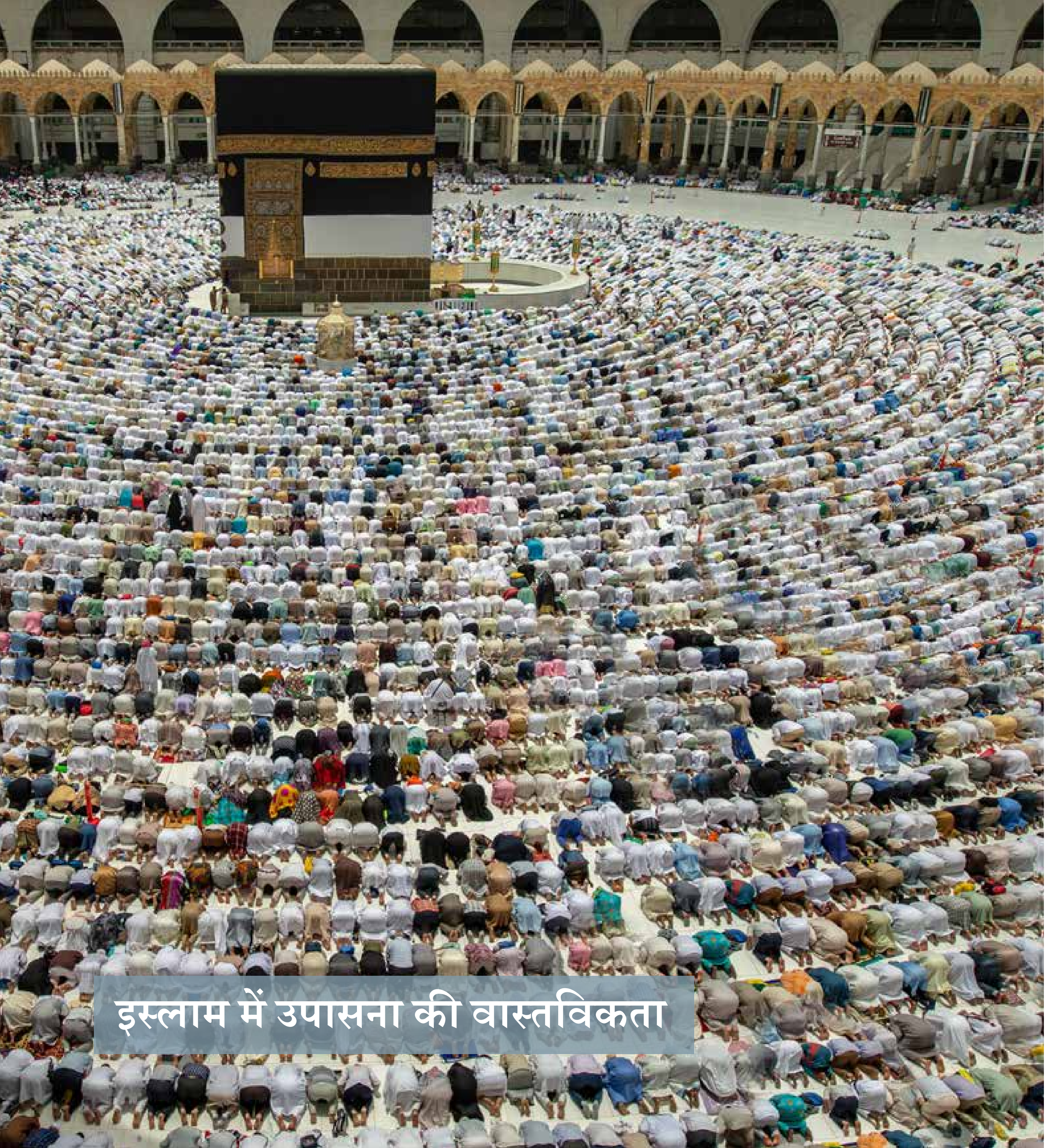

# इस्लाम में उपासना की वास्तविकता

## क्या

**क्या अल्लाह को हमारी उपासना की आवश्यकता है?**

अल्लाह सर्वशक्तिमान को हमारी उपासना और कर्मों की कोई आवश्यकता नहीं है। और मुक्ति और प्रायश्चित्त केलिए कोई विशेष उपासना नहीं और न ही पुजारी को दान और दक्षिणा देना सही है। बल्कि प्रायश्चित प्राप्त करने केलिए अल्लाह पर ईमान, विश्वास और उससे सम्बंध आवश्यक है। जिसे आत्मा और व्यवहार की शुद्धता, मानव समाज की सेवा करने और इसकी प्रगति के लिए प्रयास करना चाहिए।

क्या

क्या अल्लाह को हमारी उपासना की आवश्यकता है?

अल्लाह सर्वशक्तिमान को हमारी उपासना और कर्मों की कोई आवश्यकता नहीं है। और मुक्ति और प्रायश्चित्त केलिए कोई विशेष उपासना नहीं और न ही पुजारी को दान और दक्षिणा देना सही है। बल्कि प्रायश्चित प्राप्त करने केलिए अल्लाह पर ईमान, विश्वास और उससे सम्बंध आवश्यक है। जिसे आत्मा और व्यवहार की शुद्धता, मानव समाज की सेवा करने और इसकी प्रगति के लिए प्रयास करना चाहिए।

अल्लाह ने क़ुरआन में फ़रमाया कि: "मैंने जिन्नात और इंसानों को केवल इसलिए पैदा किया है कि वे केवल मेरी ही उपासना करें। न मैं उनसे जीविका चाहता हूँ, न मेरी यह इच्छा है कि ये मुझे खिलाएं। वास्तव में, अल्लाह तो स्वंय जीविका प्रदान करने वाला ताक़त वाला और बलवान है।" (सूरतुत्तूर:५६-५८)

कुछ लोगों ने जब नमाज़ की दिशा के बारे में प्रश्न किया कि नमाज़ केलिए सही दिशा क्या है, इसलिए कि नमाज़ केलिए सही दिशा (मक्का की दिशा) का होना अनिवार्य है। इस बात पर ज़ोर दिया गया केवल नमाज़ केलिए पूर्व एवं पश्चिम की दिशा ढूँढने का नाम ही इस्लाम नहीं है बल्कि अल्लाह पर विश्वास, उससे सम्बंध, नेक कार्य और मानवता को लाभ पहुँचाना दीन और धर्म है, अल्लाह ने क़ुरआन में फ़रमाया कि: "सारी अच्छाई पूर्व और पश्चिम की ओर मुंह करने में ही नहीं, बल्कि वास्तव में अच्छा वह इंसान है जो अल्लाह पर, परलोक पर, फ़रिश्तों पर, अल्लाह की किताब पर और ईशदूतों पर ईमान रखने वाला है, जो धन से प्रेम करने पर भी रिश्तेदारों, यतीमों, ग़रीबों, मुसाफ़िरों और भिखारियों को दे, क़ैदियों को आज़ाद करे, नमाज़ की पाबंदी और ज़कात अदा करे, जब वादा करे तो उसको पूरा करे, धन की कमी, दुःख-दर्द और लड़ाई के समय सब्र करे, यही सच्चे लोग हैं और यही परहेज़गार (बुराई से बचने वाले) हैं।" (सूरतुल-बक़रह:१७७)

और क़ुरआन ने इस बात पर भी ज़ोर दिया है कि जो उपासना और धार्मिक होने में अथक प्रयास करते हैं वह स्वंय के फ़ाएदे और मुक्ति केलिए ऐसा करते हैं, परन्तु जिसने इंकार किया वह स्वंय को हानि पहुँचाने वाला है और अल्लाह इन चीजों से बेनियाज़ है।

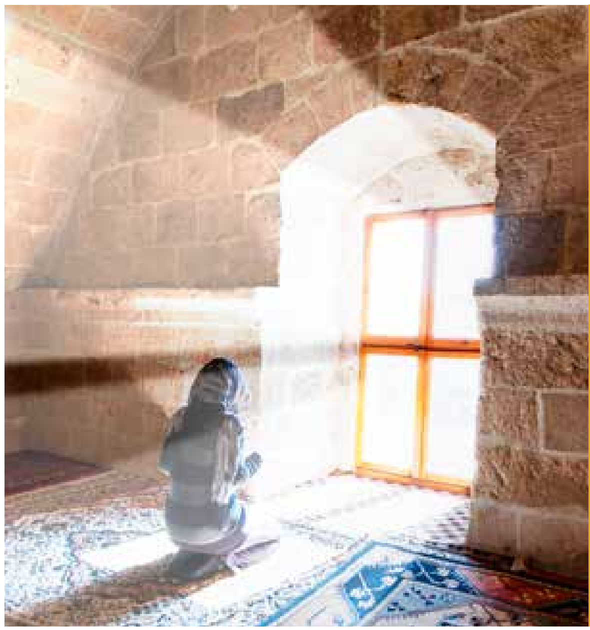

> कुछ लोगों ने जब नमाज़ की दिशा के बारे में प्रश्न किया कि नमाज़ केलिए सही दिशा क्या है, इसलिए नमाज़ केलिए सही दिशा (मक्का की दिशा) का होना अनिवार्य है। इस बात पर ज़ोर दिया गया केवल नमाज़ केलिए पूर्व एवं पश्चिम की दिशा ढूँढने का नाम ही इस्लाम नहीं है बल्कि अल्लाह पर विश्वास, उससे सम्बंध, नेक कार्य और मानवता को लाभ पहुँचाना दीन और धर्म है।



## इस्लाम के मूल आधार:

इस्लाम में उपासना के महत्वपूर्ण आधार:

सत्य ईश्वर की भक्ति और मुहम्मद (स.) का अनुसरण करना, और वह यह है कि इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य योग नहीं है और मुहम्मद (स.) उसके ईशदूत हैं। (पृष्ठ न०31 देखें)

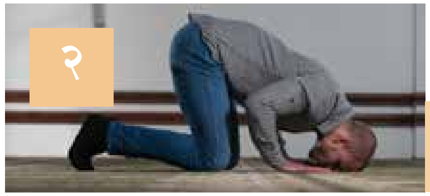


नमाज़ क़ायम करना। (पृष्ठ न० 94 देखें)

दान (ज़कात) देना। (पृष्ठ न० 98 देखें)

रमज़ान के महीने का उपवास (रोज़ा) रखना। (पृष्ठ न०100 देखें)

धन और शारीरिक रूप से सक्षम लोगों पर अल्लाह के घर (काबा) का हज्ज करना। (पृष्ठ न० 102 देखें)

**ये आदेश और परीक्षण क्यों हैं?**

विभिन्न रूप में यद्यपि यह प्रश्न बार-बार दोहराया जाता है, कोई कहता है कि: अल्लाह ने हमें भोजन करने केलिए मुंह, दांत और उदर (मेदा) प्रदान किया, तो फिर उपवास का आदेश क्यों देता है? उसने हमें सुन्दरता और काम-वासना प्रदान किया, फिर नज़रें झुकाने और इच्छा नियंत्रण का आदेश क्यों देता है! कोई दूसरा उससे आगे बढ़कर कहता है कि जब हमें शक्ति प्रदान की है तो फिर अन्याय और दूसरों पर अत्याचार करने से क्यों रोकता है?

सच्चाई यह है कि इस्लामी धारणा में यह बहुत स्पष्ट है, अल्लाह ने हमें क्षमता और बल उनको नियंत्रित करने केलिए दिया, न कि वह हमें अपने नियंत्रण में कर लें..। अल्लाह ने आपको घोड़ा दिया ताकि आप उसको सवारी और साधन के रूप में प्रयोग करें, न कि घोड़ा स्वंय आपकी सवारी करे और आपको अपने नियंत्रण में रखे। इसी प्रकार अल्लाह ने हमें जो शरीर और शक्ति प्रदान की है वही हमारी सवारी है ताकि हम उसको सही समय,स्थान और सही तरीक़े से उपयोग करें, न कि उसका उल्टा।

मनुष्य की जो श्रेष्ठता और महानता है वह इसलिए है कि उसको अपनी वासना पर नियंत्रण करने, कामना और आत्मा का नेतृत्व करने और उन शक्तियों को लाभ पहुँचाने में निर्देशित करने की क्षमता है। इसीलिए अल्लाह में इंसानों को श्रेष्ठता दी है.. और इसीलिए अल्लाह ने हमें बनाया है।

जैसा कि क़ुरआन में है कि: "बेशक हम ने इंसान को मिले-जुले वीर्य (नुत्फ़े) से इम्तेहान केलिए पैदा किया, और उसको सनने वाला देखने वाला बनाया। हम ने उसे रास्ता दिखाया, अब चाहे वह शुक्रगुज़ार बने अथवा नाशुक्रा।" (सूरतुल-इंसान:२-३)

जो लोग आपदाओं और पीड़ा से पीड़ित हैं, वे उनकी आध्यात्मिक, नैतिक और ईमान की स्थितियों को विकसित करने के लिए एक अतिरिक्त परीक्षा है। ताकि हम अपने इस जीवन के उद्देश्य को याद रखें, जैसा कि क़ुरआन में आया है कि: "और हम किसी न किसी प्रकार से तुम्हारी परीक्षा अवश्य लेंगे, शत्रु के भय से, भूख-प्यास से, माल व् जान, फलों की कमी से और उन धैर्य रखने वालों को ख़ुशख़बरी दे दीजिए। उन्हें जब कभी भी कोई कठिनाई आती है, तो वह कहते हैं कि हम तो ख़ुद अल्लाह केलिए हैं और हम उसी की ओर लौटने वाले हैं।" (सूरतुल-बक़रह:१५५-१५६)

जीवन ईश्वर का अमूल्य वरदान है, आस्था, कर्म और नैतिकता की प्रगति और सुधार केलिए स्वर्ण अवसर है। ईश्वर सर्वशक्तिमान ने हमारे मार्गदर्शन और सुधार के लिए बार-बार अवसर दिया है, परन्तु मजबूर नहीं किया है, और हम को चयन करने केलिए पूरा अधिकार दिया है, और हमें पृथ्वी के निर्माण, मानवता का लाभ, और अपनी ग़लतियों से लाभ उठाने का निर्देशन किया है। और जब हम से ग़लती हो जाए तो तुरन्त वापिस लौटें और अल्लाह से पश्चाताप करें, मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: "यदि तुम पाप नहीं करोगे तो अल्लाह तुम्हारे बदले किसी और समुदाय को लाएगा, जो पाप भी करेंगे और अल्लाह से क्षमा मांगेंगे तो अल्लाह उन्हें क्षमा भी करदेगा।" (मुस्लिम:२७४९)

मनुष्य की जो श्रेष्ठता और महानता है वह इसलिए है कि उसको अपनी वासना पर नियंत्रण करने, कामना और आत्मा का नेतृत्व करने और उन शक्तियों को लाभ पहुँचाने में निर्देशित करने की क्षमता है।

## नमाज़

**शायद कि इस सच्चाई के बारे में पूर्व ही सोचा होगा, जब मिडिया और दूसरे माध्यम से एक अजीब दृश्य देखा कि मुसलमान एक दिशा में होकर नमाज़ पढ़ते हैं, और खड़े होकर और झुक कर अल्लाह की उपासना करते हैं, ऐसा लगता है कि जैसे इस संसार से उन्हें कुछ लेना-देना नहीं है..।**

> मुहम्मद (स.) को सबसे अधिक नमाज़ में लज्ज़त और ख़ुशी प्राप्त होती थी।



### तो नमाज़ है क्या?

नमाज़ का इस्लाम में बड़ा महत्व है, इसलिए कि अल्लाह का निकटतम प्राप्त करने, प्रार्थना और दुआ करने का महत्वपूर्ण तरीक़ा और माध्यम है। जैसा कि अल्लाह ने अपने ईशदूत मुहम्मद (स.) से कहा कि: “अल्लाह केलिए सिजदा करो और उसकी निकटता प्राप्त करो।” (सूरतुल-अलक़:१९) इसलिए मौखिक साक्षय (एकेश्वरवाद) के बाद इस्लाम का दूसरा महत्वपूर्ण आधार माना जाता है।

मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: “इस्लाम पाँच चीज़ों पर आधारित है; अल्लाह के एक सत्य उपास्य होने की गवाही देना, तथा मुहम्मद (स.) के ईशदूत और रसूल होने की गवाही देना और नमाज़ क़ायम करना..।” (बुख़ारी: ८)

और मुसलमान को नमाज़ पढ़ने पर पुण्य भी मिलता है जैसा कि इस्लाम हमें इस बात की शिक्षा देता है। दिल लगाकर नमाज़ पढ़ने, हिम्मत करके, अपनी भावनाओं पर ध्यान केंद्रित करके, और अल्लाह से प्रार्थना करके और उसकी निकटतम का एहसास करके जब कोई नमाज़ पढ़ता है तो उसके मन को शान्ति प्राप्त होती है। इसीलिए मुहम्मद (स.) को सबसे अधिक नमाज़ में लज्ज़त और ख़ुशी प्राप्त होती थी।

इसलिए क़ुरआन हमें नमाज़ क़ायन करने को निर्देशित करता है, केवल पढ़ने केलिए नहीं, बल्कि वास्तव में नमाज़ उसी समय क़ायम होगी जब हृदय, मन और आत्मा के साथ क़ायम की जाए..। और अगर हमने ऐसा किया, तो नमाज़ हमारे लिए अच्छा कर्म करने और अपराधों और अवरोधों से दूर होने का एक अच्छा सहायक बनेगी। अल्लाह का ज़िक्र करना और उसका आश्रय लेना सबसे बड़ी बात है जो मनुष्य करता है।

जो यह सोचता है कि नमाज़ केवल स्नान और स्वच्छता के बाद एक शारीरिक व्यायाम है, तो उसकी यह धारणा ग़लत है, बल्कि नमाज़ एक महत्वपूर्ण उपासना है जिसमें कर्म और शब्द से अल्लाह की महानता को दर्शाया जाता है।

> नमाज़ एक महत्वपूर्ण उपासना है जिसमें कर्म और शब्द से अल्लाह की महानता को दर्शाया जाता है।

नमाज़ में नमाज़ पढ़ने वाला सबसे प्रथम शब्द ‘अल्लाहु-अक्बर’ कहता है, फिर अल्लाह की महानता और अपनी असहायता से परिचित अल्लाह केलिए झुकता (रुकूअ) है, और ‘सुब्हान रब्बियल-अज़ीम’ कहता है, फिर अल्लाह की निकटता और अपनी प्रार्थना के उत्तर केलिए अपना माथा और

नाक पृथ्वी पर रखकर सिजदा करते हुए 'सुब्हान रब्बियल-आला' कहता है, और अपने रब से प्रार्थना करता है और मांगता है..। इस प्रकार, प्रार्थना के सभी कार्य और शब्द केवल शारीरिक व्यायाम नहीं हैं बल्कि बहुत महत्वपूर्ण क्षण होता है जिसमें आस्तिक अपने निर्माता और जन्मदाता तक पहुँचने का प्रयास करता है, जिससे उसको प्रसन्नता प्राप्त होती है।

अल्लाह ने मुसलमानों पर हर दिन और रात में पाँच समय की नमाज़ पढ़ने का आदेश दिया है, और उसको कहीं भी पढ़ा जा सकता है। पर सामूहिक रूप से मस्जिद में नमाज़ पढ़ने पर प्रेरित किया है ताकि एक-दूसरे को जानने, सम्बंध मज़बूत करने और धर्म और दुनिया के मामलों में एक-दूसरे की सहायक बन सकें।

इस्लाम इन पाँच नमाज़ों के अतिरिक्त सुन्नत और नफ़िल नमाज़ पढ़ने पर भी प्रेरित किया है, समय मिलने पर पढ़ ले।

पूरी दुनिया के मुसलमान काबा की दिशा की ओर मुंह करके नमाज़ पढ़ते हैं, यह एक घन के आकार की इमारत है, जिसे ईशदूत इब्राहीम (अ.) ने बनाया है और यह अरब द्वीप के पश्चिम में है। और सम्पूर्ण ईशदूतों ने इसका हज्ज किया। हम सम्पूर्ण मुसल्मानों का यह आस्था है कि काबा के अंदर नुक़सान और लाभ पहुँचाने की कोई शक्ति नहीं, परन्तु अल्लाह ने इस संसार के सम्पूर्ण मुसलमानों को आदेश दिया है कि वह नमाज़ इसी दिशा की ओर मुंह करके पढ़ें ताकि विश्वभर के मुसलमान एकत्रित रह सकें।

## अज़ान:

मुसलमानों को नमाज़ के समय होने की सूचना और नमाज़ पढ़ने केलिए मस्जिद में आने का आह्वान करने और बुलाने का नाम 'अज़ान' है।

और यह अल्लाह का ज़िक्र और उसकी प्रशंसा करने का उत्कृष्ट तरीक़ा, और मुसलमानों को नमाज़ केलिए तैयार होने की सूचना है, अज़ान के शब्द यह हैं:

१. अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर।

२. अश्हदु अल्ला इला ह इल्लल्लाह, अश्हदु अल्ला इला ह इल्लल्लाह।

३. अश्हदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह, अश्हदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह।

४. हय्य अलस्सलाह। हय्य अलस्सलाह।

५. हय्य अलल्फ़लाह। हय्य अलल्फ़लाह।

६. अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर।

७. ला इला ह इल्लल्लाह।

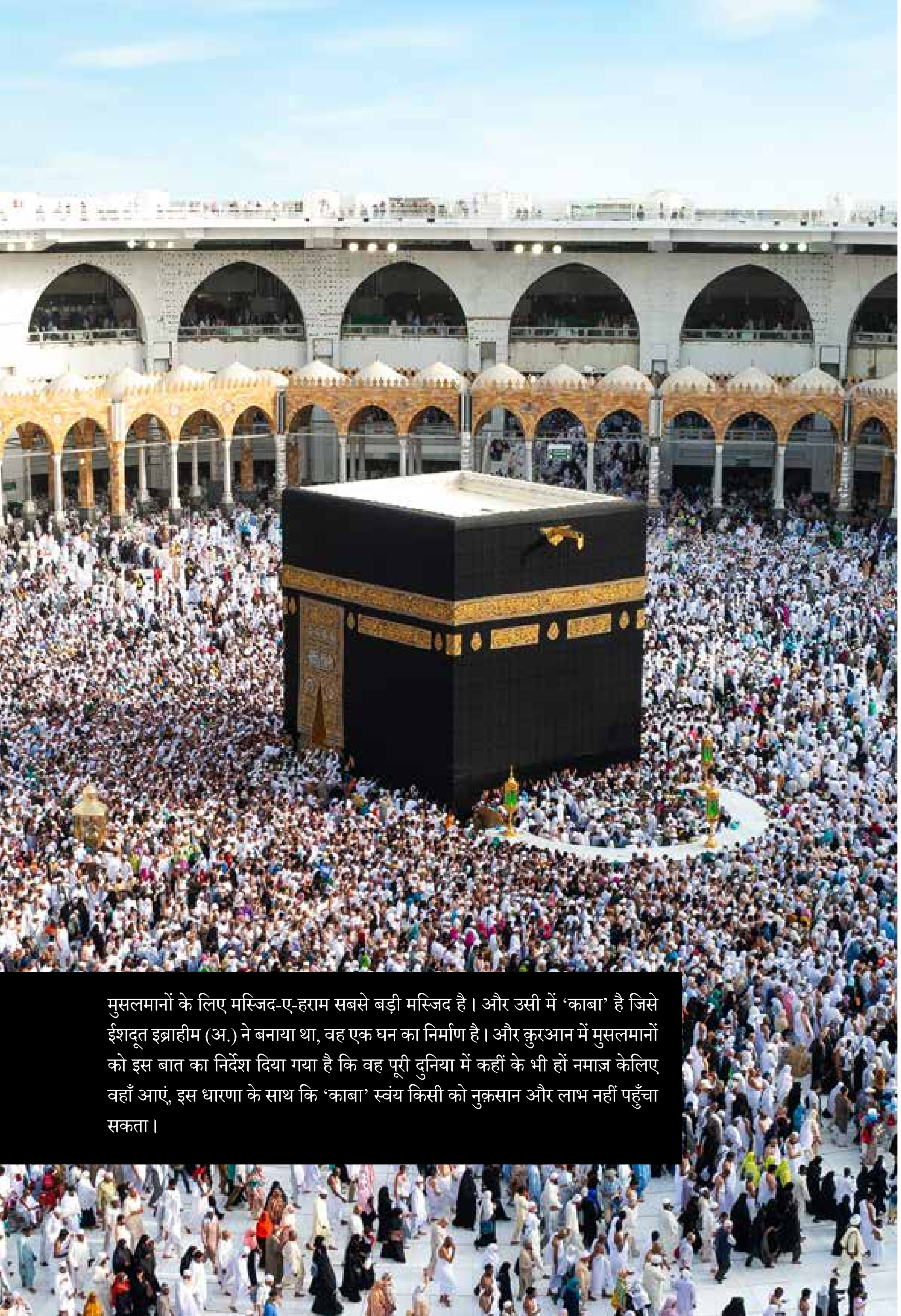

मुसलमानों के लिए मस्जिद-ए-हराम सबसे बड़ी मस्जिद है। और उसी में 'काबा' है जिसे ईशदूत इब्राहीम (अ.) ने बनाया था, वह एक घन का निर्माण है। और क़ुरआन में मुसलमानों को इस बात का निर्देश दिया गया है कि वह पूरी दुनिया में कहीं के भी हों नमाज़ केलिए वहाँ आएं, इस धारणा के साथ कि 'काबा' स्वंय किसी को नुक़सान और लाभ नहीं पहुँचा सकता।

## दान (ज़कात)

हम सब इस बात से सहमत हैं कि समाज में ग़रीब और धनि के बीच में जो खाई है उसका समाधान बहुत आवश्यक है। चूँकि जब समाज में ग़रीबी बढ़ती है तो वहीं असाधारण और अन्य आपराधिक गतिविधियों का कारण बनती है। अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने ग़रीबी को दूर करने और गरीबों और गरीबों के बीच समस्याओं को रोकने के लिए कई वित्तीय प्रणालियों, बौद्धिक दर्शन, और क़ानूनों को पारित किया है, लेकिन आज तक वे सभी असफल रहे। तो इसके बारे में इस्लाम की धारणा क्या है?

दान देना इस्लाम के ५ महत्वपूर्ण आधारों में से एक महत्वपूर्ण आधार है। अल्लाह ने हर मुस्लिम धनि व्यक्ति का उसके अतिरिक्त संपत्ति पर २.५% की दर से हरेक वर्ष दान (ज़कात) निकालना अनिवार्य किया है। और यह दान ग़रीब, असहाय और ज़रूरतमंदों में बाँटा जाएगा।

यह याद रखे कि धनि दान देकर ग़रीबों पर कोई उपकार नहीं कर रहा है, बल्कि यह तो ग़रीबों का अधिकार और हक़ है जो धनि लोगों से लिया जाता है। और बिना मांगे और उनका अपमान किए बिना उन तक दान को पहुँचाना है।

दान का न्यूतम दर (२.५%) मात्र मुस्लिम धनि व्यक्ति पर निकालना अनिवार्य है। यदि कोई आदमी आगे बढ़कर और अधिक ख़र्च करे और प्रतिस्पर्धा करना चाहे तो उसके लिए पूरा मैदान खाली है। दान देने से दुनिया में सुख, शान्ति, ख़ुशी, अच्छा स्वास्थ्य, धन में वृद्धि तथा परलोक में कई गुना पुण्य और स्वर्ग में उच्च स्थान प्राप्त होगा।

जैसा कि क़ुरआन में आया है कि: “अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने का उदाहरण ऐसे ही है जैसे गेहूँ का एक ‘बीज’ जिससे ७ बालियाँ होती हैं और हर बाली में १००-१०० दाने होते हैं, तो एक दाने से सात सौ दाने हो जाते हैं। इसी प्रकार यदि कोई अल्लाह के रास्ते में शुद्ध नीयत से एक रुपया ख़र्च करेगा, तो अल्लाह उसको सात सौ बल्कि उससे बहुत अधिक पुण्य देने वाला है। (सूरतुल-बक़रह:२६१)

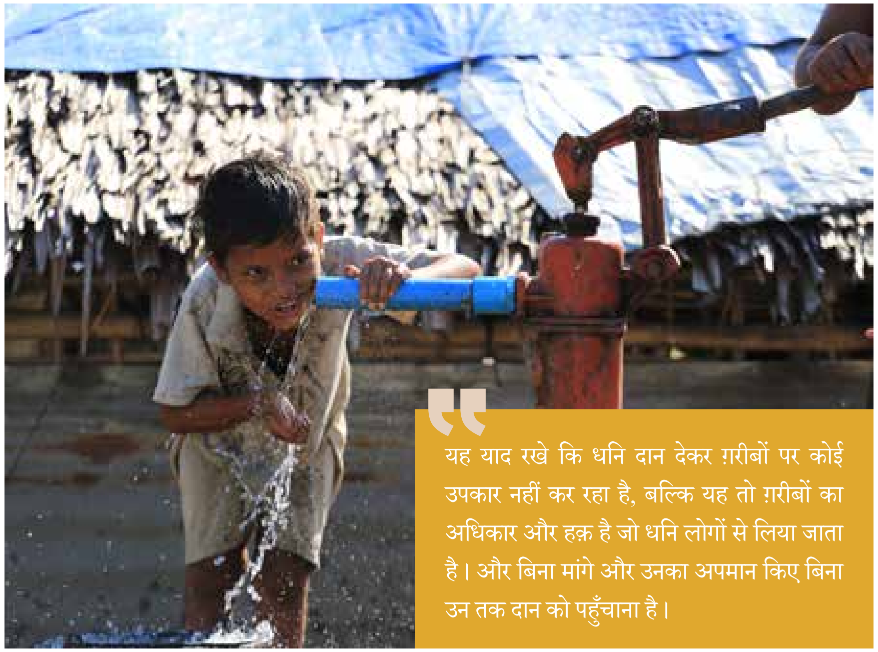

यह याद रखे कि धनि दान देकर ग़रीबों पर कोई उपकार नहीं कर रहा है, बल्कि यह तो ग़रीबों का अधिकार और हक़ है जो धनि लोगों से लिया जाता है। और बिना मांगे और उनका अपमान किए बिना उन तक दान को पहुँचाना है।



दान से असहाय और ग़रीबों की मदद करने से आत्मा आत्मा और मन की शुद्धता एवं सफाई होती है, क़ुरआन में अल्लाह ने मुहम्मद (स.) को संबोधित करते हुए कहा: “आप उनके मालों में से दान (सदक़ा) ले लीजिए, जिनके माध्यम से आप उनको शुद्ध और पवित्र कर दें। सूरतुत्तौबा:१०३)

याद रखिए, जो धन को ख़र्च करने में कंजूसी करता है और ख़र्च नहीं करता, असहाय और ग़रीब की सहायता नहीं करता तो वह हानि और नुक़सान उठाने वालों में से होगा, इसलिए कि उसने अपने आपको लोक-परलोक की शान्ति और ख़ुशी से अपने आप को वंचित कर लिया। (सूरतु-मुहम्मद:३८)

इस्लाम के इस महत्वपूर्ण आधार को लागू करके, सामाजिक सुरक्षा की अवधारणा प्राप्त की जाती है, और समाज के समूहों के बीच संतुलन बना रहता है। जो लोग इसके हक़दार हैं उन्हें दान (ज़कात) देकर, वित्तीय संपत्ति समाज की सीमित श्रेणियों में संग्रहित नहीं होती है। यही कारण है कि मुसलमानों के आरंभिक इतिहास में कई बार ऐसा हुआ कि लोग ज़कात लेकर घुमते और जो दान के हक़दार ग़रीब और असहाय हैं उनको ढूढते परन्तु उनको नहीं पाते थे।

इसी प्रकार से, दान आपसी सम्बंध, प्रेम और स्नेह की भावनाओं को मज़बूत करता है, इसलिए मानव समाज में यदि कोई किसी पर एहसान करता है तो मन उससे प्रेम करने लगता है, इस प्रकार से समाज में हर कोई एक-दूसरे के साथ प्रेम और स्नेह करके एक मज़बूत दीवार की रूप में रह सकता है। और चोरी, लूटपाट और डकैती की घटनाएं कम हो जाएँगी।

क़ुरआन ने उदाहरण प्रस्तुत किया है कि: “अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने का उदाहरण ऐसे ही है जैसे गेहूँ का एक ‘बीज’ जिससे ७ बालियाँ होती हैं और हर बाली में १००-१०० दाने होते हैं, तो एक दाने से सात सौ दाने हो जाते हैं।

## उपवास

हम सभी उस व्यक्ति की प्रशंसा करते हैं जो खुद को नियंत्रित करता हैं, और अपने स्वास्थ्य की सुरक्षा, और अपना वज़न कम करने, या डॉक्टर के निर्देशों के अनुपालन में खाने, या इस प्रकार और दूसरी चीजों से बचता है है..। और हम इसे अधिक से अधिक महत्वपूर्ण लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करने की अपनी क्षमता की सफलता और उपलब्धि मानते हैं .. ।

बल्कि मुस्लिम तो अपने सृष्टिकर्ता अल्लाह के आदेश का पालन करते हुए, उपवास करके अपने आपको और भी अधिक प्रशिक्षण देता है, स्वंय को और अपनी वासनाओं को नियंत्रित करता है।

उपवास (रोज़ा) इस्लाम के महत्वपूर्ण ५ आधारों में से चौथा आधार है, और जो उपवास रखने की क्षमता रखता है उसके लिए उपवास रखना अनिवार्य है। और उपवास का अर्थ यह होता है कि: रमज़ान के महीने में हर दिन सुबह (फ़ज्र की अज़ान) से लेकर सूर्यास्त तक खाने पीने तथा संभोग से रुक जाने का नाम उपवास (रोज़ा) है। रमज़ान चाँद का नौवां महीना है।

> इसीलिए मुहम्मद (स.) ने चेतावनी दी है कि जो रमज़ान में आपने आपको नहीं बदलता और नैतिकता में सुधार नहीं लाता तो उसने उपवास से कुछ भी लाभ नहीं उठाया।

क़ुरआन इस बात का उल्लेख करता है कि पिछली समुदाय पर भी रोज़ा अनिवार्य (फ़र्ज़) किया गया था, यह अलग बात है कि उपवास रखने का तरीक़ा अलग था, परन्तु उद्देश्य केवल एक ही है कि: सत्य ईश्वर की उपासना करना और उससे डरना।

जब एक मुसलमान रमज़ान के महीने में प्रत्येक दिन कुछ घंटों के लिए अपनी अनुमत इच्छाओं पर नियंत्रण करता है, तो वह खुद का मालिक होता है, उसे नियंत्रित करने में सक्षम होता है। तो वह हर स्थिति में आसानी से अपने जीवन के बाक़ी हिस्सों में वर्जित इच्छाओं को नियंत्रित कर सकता है। इसीलिए मुहम्मद (स.) ने चेतावनी दी है कि जो रमज़ान में आपने आपको नहीं बदलता और नैतिकता में सुधार नहीं लाता तो उसने उपवास से कुछ भी लाभ नहीं उठाया।

मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: "जो भी उपवास की स्तिथि में झूट बोलना और ग़लत कार्य करना न छोड़े तो उसको खाना और पीना छोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है।" (बुख़ारी: १८०४)

> क़ुरआन इस बात का उल्लेख करता है कि पिछली समुदाय पर भी रोज़ा अनिवार्य (फ़र्ज़) किया गया था, यह अलग बात है कि उपवास रखने का तरीक़ा अलग था, परन्तु उद्देश्य केवल एक ही है कि: सत्य ईश्वर की उपासना करना और उससे डरना।

उपवास करने वाला व्यक्ति जब भूखा और प्यासा रहता है तो ग़रीबों और भूखे लोगों की मदद करने के लिए यह चीज़ बड़ा प्रोत्साहन बन जाती है, जो समय से खाना और पीना नहीं पाते, औ न ही उनके अधिकार में यह चीज़ होती है, इसलिए कि उपवास के कारण उन्होंने जो पीड़ा का अनुभव किया है।

> जब इस्लाम मुसलमान पर उपवास को अनिवार्य करता है, तो वह उसे ग़रीबों की भूख और भोजन की उनकी आवश्यकता की याद दिलाता है।

## हज्ज

अधिकांश धर्मों में धार्मिक यात्राएँ हैं जहाँ लोग अपने निर्माता की पूजा करते हैं। लेकिन संख्याओं के संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण और वार्षिक यात्रा इस्लाम की तीर्थ यात्रा है। जहाँ प्रत्येक वर्ष तीस लाख से अधिक मुस्लिम उस पवित्र यात्रा के लिए एक छोटे से स्थान पर एकत्रित होते हैं।

तो हज्ज है क्या?

हज्ज इस्लाम के महत्वपूर्ण आधारों में से पाँचवाँ आधार है, और यह केवल उन लोगों के लिए अनिवार्य है जिनके पास वित्तीय (धन) और शारीरिक क्षमता हो।

यह एक महान यात्रा है जिसमें पूरे विश्व से लोग राष्ट्र, भाषा, जाति, रंग को भूल कर सभी एक जैसे कपड़े और एक ही रंग में अल्लाह की उपासना करते हैं, जो मनुष्य और उसके ईश्वर के बीच सम्बंधों की सच्चाई का प्रतीक है। (लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल् हम्द वन्नेअमत लक वलमुल्क, ला शरीक लक)।

हे अल्लाह! पूज्य योग्य तू ही है, हम अपनी जीभ और हृदय से इस बात का स्वीकार करते हैं कि तू ही सत्य ईश्वर है, सम्पूर्ण प्रशंसा योग्य तू ही है, तू ही निर्माता है जिसका कोई भागीदार नहीं।

यह एक आध्यात्मिक यात्रा है, जिसमें मुस्लिम हर प्रकार से अल्लाह की उपासना करता है। तमाम लोग एक ही उद्देश्य से आते हैं और वह है, अल्लाह का ज़िक्र करना और उससे डरना। और अपनी आवश्यकताओं को उसके सामने रखते हुए यह प्रार्थना करना कि: हे अल्लाह हमारी ग़लतियों को माफ़ करदे। मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: "काबा का परिक्रमा (तवाफ़) और सफ़ा और मर्वा के बीच में (सई करना) दौड़ना यह अल्लाह की प्रशंसा और उसके ज़िक्र केलिए है।" (इब्न-अबी-शैबा:१५३३४)

हज्ज की तीर्थयात्रा केलिए अपने सामान्य कपड़े को निकाल कर दो सफ़ेद चादर पहनना यह अल्लाह केलिए अनुसरण और पूरे संसार से आए हुए हाजियों के साथ समान्ता का प्रतीक है।

# इस्लाम में परिवारिक व्वस्था

वर्तमान

वर्तमान युग में एक घर कई व्यक्तियों के समूह से मिलकर परिवार बनता है, जहाँ मूल द्वार एक दूसरे के साथ रखा जाता है।

कई लोग दुर्भाग्य से पत्नी या बच्चों के लिए वास्तविक ज़िम्मेदारी लेने से भागते हैं, तो उनको अपनी ज़िम्मेदारी लिए बिना ख़ुद को आनंद लेने और अपनी इच्छाओं को पूरा करने से कौन रोकता है?

यद्यपि यह प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से देखी गई है, लेकिन कुछ स्वार्थी लोग इतिहास की शुरुआत के बाद से ऐसा करने की कोशिश कर रहे थे। वास्तव में, यह स्वार्थी समाज का एक उपज है इससे लिया गया नकारात्मक प्रभाव व्यक्तियों, समाज और पूरे देश के लिए एक मूर्ख प्रवृत्ति है।

इसलिए, इस्लाम ने अपने परिवारिक सिस्टम, अधिकारों और कर्तव्यों पर सदस्यों का ध्यान केंद्रित करने पर ज़ोर दिया है, क्योंकि इस्लाम में घर और परिवार जागरूकता और शिक्षा का केंद्र है, समृद्ध समाज और विकसित राष्ट्र के बढ़ावा केलिए बहुत आवश्यक है, जिससे समाज बेहतर और अच्छा होता है।

**और यह अनगिनत प्रावधानों में प्रकट होता है, जिनमें निम्न यह हैं:**

१

**इस्लाम ने विवाह और परिवार के गठन के सिद्धांत पर बल दिया:**

- इस्लाम ने विवाह और परिवार गठन को उत्कृष्ट कार्य और दूतों का तरीक़ा और सुन्नत बताया है। इसलिए कि जब आपके साथियों ने विवाह किए बिना आपने आपको उपासना, नमाज़ और उपवास केलिए समर्पित करने को कहा, तो मुहम्मद (स.) ने उनसे कहा कि: "मैं उपवास भी करता हूँ, और खाता भी हूँ, और रात में नमाज़ भी पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ, और मैंने विवाह भी किया है, तो जो मेरे तरीक़े से हटेगा उसका सम्बंध मुझसे नहीं है।" (बुख़ारी: ४७७६)
- शादी को आसान बनाने का आदेश दिया, और उन लोगों की सहायता करने का आदेश दिया है जो शादी करना चाहते हैं, मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: "तीन लोगों पर अल्लाह की विशेष मदद होती है" उनमें से एक वह है जो "विवाह अपनी इज्ज़त की रक्षा केलिए करता है।" (तिर्मिज़ी: १६५५)
- अल्लाह ने मानव जाति पर जो उपकार और वरदान किया है क़ुरआन ने उसका वर्णन किया है कि पति और पत्नी के बीच जो प्रेम, स्नेह, संतुष्टि, दया और मानवता पैदा की है वह अल्लाह का अमूल्य वरदान और निशानी है, जैसा कि क़ुरआन में है कि: "और उसकी निशानियों में से है कि तुम्हारी ही जाति से पत्नियाँ पैदा की ताकि तुम उनसे सुख पाओ, उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दया भाव पैदा कर दिए।" (सूरतुर्रूम:२१)
- इस्लाम ने युवाओं को कामवासना और जवानी के कारण विवाह करने का आदेश दिया है, जिसमें उनके लिए संतुष्टि और सुकून है। और वासना और इच्छा शक्ति केलिए वैध समाधान ढूँढने का आदेश दिया है।



> "अल्लाह ने मानवजाति पर जो उपकार और वरदान किया है क़ुरआन ने उसका वर्णन किया है कि पति और पत्नी के बीच जो प्रेम, स्नेह, संतुष्टि, दया और मानवता पैदा की है वह अल्लाह का अमूल्य वरदान और निशानी है।

२

**इस्लाम ने परिवार के हर सदस्य को पूर्ण सम्मान दिया, चाहे पुरुष हो या महिला:**

इसीलिए इस्लाम ने बच्चों की शिक्षा औ उनकी देख-भाल केलिए माता और पिता को ज़िम्मेदार बनाया है, मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: "तुम में से हर एक हाकिम है और तुम सब लोगों से तुम्हारे अधीन रहने वाले लोगों के बारे में पूछा जाएगा। इमाम भी हाकिम है और उससे उसके अधीन लोगों के बार में पूछा जाएगा, और हर मर्द अपने-अपने घर का हाकिम है, उसे उसके घर वालों के बारे में पूछा जाएगा, और महिला अपने पति के घर की हाकिम है और उससे उसके घर में रहमे वाले लोगों के बारे में पूछा जाएगा, औ नौकर अपने मालिक के माल का ज़िम्मेदार है और उससे उस माल के बारे में पूछा जाएगा।" (बुख़ारी: ८५३)

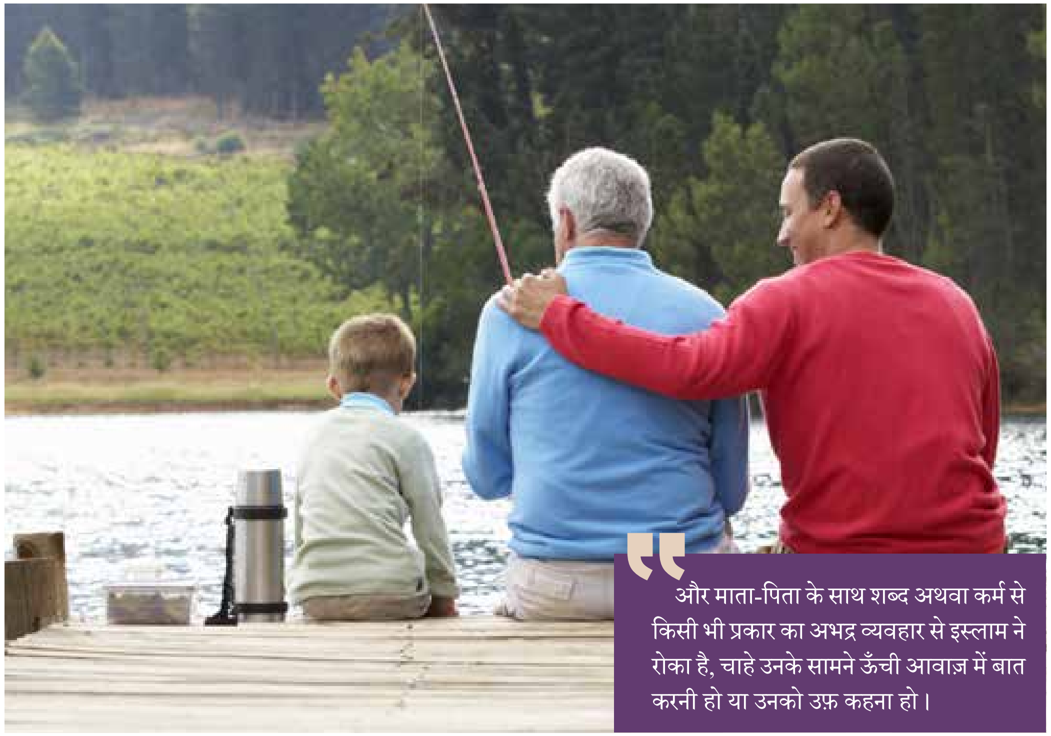

"और माता-पिता के साथ शब्द अथवा कर्म से किसी भी प्रकार का अभद्र व्यवहार से इस्लाम ने रोका है, चाहे उनके सामने ऊँची आवाज़ में बात करनी हो या उनको उफ़ कहना हो।

४

**इस्लाम बेटे और बेटियों के अधिकारों के संरक्षण और उनके बीच ख़र्च करने में न्याय का आदेश देता है:**

मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया: "मनुष्य के पापी होने केलिए यही काफ़ी है कि अभिभावक के ऊपर ख़र्च न करे।" (अबू-दाऊद : १६९२)

और विशेष कर बेटियों के पालन-पोषण और उनपर ख़र्च करने पर ज़ोर दिया है, मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: "जो व्यक्ति इन बच्चियों की देख-भाल और अच्छा व्यवहार करेगा तो यह उनके लिए नरक में जाने से बाधा बन जाएँगी।" (बुख़ारी: ५९९५)

३

**इस्लाम में माता-पिता के प्रति सम्मान और उनकी मृत्यु तक उनकी सेवा करने और उनके आदेशों का पालन करने को अनिवार्य करता है:**

बेटा या बेटी चाहे कितने बड़े हो जाएँ उन्हें अपने माता-पिता का सम्मान और आज्ञापालन करना अनिवार्य है। और अल्लाह ने अपनी उपासना के साथ-साथ उनकी आज्ञाकारिता को बयान किया है, और उनके साथ शब्द अथवा कर्म से किसी भी प्रकार का अभद्र व्यवहार से रोका है चाहे उनके सामने ऊँची आवाज़ में बात करनी हो या उनको उफ़ कहना हो, जैसा कि अल्लाह ने क़ुरआन में बयान किया है कि: "और तेरा रब खुला हुक्म दे चूका है कि तुम उसके सिवाय किसी दूसरे की आराधना न करना और माता-पिता के संग अच्छा सुलूक करना, यदि तेरी मौजूदगी में इन में से एक या ये दोनों बुढ़ापे को पहुँच जाएँ तो उनको उफ़ तक न कहना, उन्हें डाँटना नहीं बल्कि उनके साथ नम्रता पूर्वक बात-चीत करना।" (सूरतुल-इस्रा:२३)

५

**इस्लाम ने रिश्तेदारों के संग अच्छा व्यवहार करने को अनिवार्य किया है:**

इसका अर्थ: यह है कि अपने माता और पिता के रिश्तेदारों संग अच्छा व्यवहार करे, और यह अल्लाह की उपासना और उसकी निकटता में से एक है। और रिश्तों को तोड़ने और उनके साथ दुर्व्यवहार करने से रोका है, और ऐसा करना बहुत बड़ा पाप है, मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: "रिश्तों को तोड़ने वाला व्यक्ति स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा।" (मुस्लिम: २५५६)

# इस्लाम में महिला का स्थान

टीवी विज्ञापनों, सड़क पर, या पत्रिकाओं के कवर पर जब हमारी नज़र पड़ती है तो हमें महिलाओं के प्रति नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, कि महिला केवल एक पुतली और पुरुष की वासना को पूरा करने और खेलौना के सिवाय कुछ भी नहीं है..।

शायद, यह प्राचीन सभ्यता का विकृति है। महिलाओं का अपमान करना और वस्तुओं की तरह बेचना-ख़रीदना आम बात थी।

लंबे समय से महिलाओं ने अन्याय और उत्पीड़न के विरुद्ध, और राक्षसी दरवाज़े से निकलने के लिए संघर्ष किया लेकिन, आधुनिकता के नाम पर, उनको उसी जगह लौटा दिया गया।

१४०० वर्ष पूर्व इस्लाम के आगमन के बाद लंबे समय से पीड़ित महिलाओं के विरुद्ध क्रांतिकारी बदलाव आया है। जिसने उनके अधिकारों और स्थिति को संरक्षित करने वाले कई प्रावधान बनाया। ताकि वह समाज में सम्मान के साथ रह सकें, और समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को पूर्ण रूप से पूरा कर सकें।

यही कारण है कि क़ुरआन की लंबी सूरतों में से एक सूरह 'सूरतुन-निसा' ही महिलाओं के नाम से रख दी, जिसमें महिला सम्बंधित विस्तृत प्रावधानों का उल्लेख किया गया है। और उसमें से कई उत्कृष्ट महिलाओं की कहानियाँ का वर्णन किया गया। मात्र यही नहीं, बल्कि ईसा (अ.) की माँ के नाम पर एक अध्याय का नाम ही (सूरतु-मरियम) रख दिया है।

इस्लाम महिला के प्रति लोगों के कोण को बदलने केलिए आया, इसलिए कि वह भी एक इंसान है जिसे अल्लाह ने बनाया है, केवल एक वस्तु नहीं, और जीवन साथी है, मात्र रात बिताने की चीज़ नहीं, और संतुष्टि, स्नेह और दया की प्रतीक है, मात्र वासना और लज़्ज़त पूरा करने की चीज़ नहीं।

**महिलाओं के सम्मान और उनके अधिकारों के कुछ उदाहरण:**

- इस्लाम ने महिला को अपना जीवन साथी (पति) चुनने की पूरी स्वतंत्रता दी, और बच्चों की देख-भाल और उसकी शिक्षा केलिए उसके कंधों पर बड़ी ज़िम्मेदारी रखी, मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: "और महिला अपने पति के घर की हाकिम है और उससे उसके घर में रहमे वाले लोगों के बारे में पूछा जाएगा।" (बुख़ारी: ८५३)

- इस्लाम ने शादी के बाद भी महिला का नाम पिता संग बाक़ी रखा और सम्मान दिया, इसलिए उसकी निस्बत विवाह के बाद नहीं बदलेगी, बल्कि उसकी निस्बत अपने पिता और खानदान से ही जुड़ी रहेगी।

- इस्लाम ने बूढ़ी और कमज़ोर महिला की सेवा करने के सम्मान और पुण्य पर ज़ोर दिया है, जिनका कोई नहीं है, भले ही वह आपकी रिश्तेदार न हों, और अल्लाह के निकट सर्वोत्तम कार्यों में से एक है। मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: "विधवा और ग़रीब महिलाओं की सेवा करने वाला ऐसा ही है जैसे अल्लाह के रास्ते में धार्मिक युद्ध (जिहाद) करने वाला और दिनभर उपवास करने वाला और रातभर नमाज़ पढ़ने वाला।" (बुख़ारी: ५६६१)

> कुछ लोग इस्लाम में महिलाओं पर अन्याय, अत्याचार और उनके अधिकार न देने और आधुनिक युग संग न चलने का आरोप लगाते हैं। जब हम यह देखते हैं हैं कि विकसित देश जैसे ब्रिटेन में जिन लोगों ने इस्लाम ने प्रवेश किया उन में से ७५% महिलाएं हैं जिन्होंने इस्लाम के प्रावधानों, क़ानून और परिवार और परिवारिक मुद्दों का अध्ययन करने के बाद इस्लाम में प्रवेश किया।
>
> INDEPENDET 6-11-2011

- इस्लाम ने सभी वित्तीय लेनदेन सहित कई अलग-अलग मामलों में पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता को क़ायम रखा है, मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: “महिलाएं पुरुषों की तरह हैं (यानी, अहकाम और मसाएल में दोनों एक सामान हैं)।” (अबू-दाऊद: २३६)
- इस्लाम ने महिला, विशेष कर पत्नी, माँ और बेटी की देख-भाल और उनपर ख़र्च करने को बिना किसी उपकार और एहसान के मनुष्य पर अनिवार्य किया है।
- इस्लाम ने पैत्रिक संपत्ति (विरासत) में महिलाओं को न्यायपूर्ण  अधिकार दिया है, कुछ मामलों में, यदि पुरुषों के बराबर अधिकार हैं, तो कुछ स्थिति में, ज़िम्मेदारी, शुल्क और व्यय के आधार पर निर्धारित किया जाता है। कुछ लोग कहीं पर महिला को मनुष्य से कम हिस्सा मिलने पर इस्लाम पर आरोप लगाते हैं और दोषी ठहराते हैं, परन्तु वह यह नहीं देखते कि इस्लाम ने मनुष्यों पर जो ज़िम्मेदारी दी है, और महिला और परिवार पर ख़र्च करने को अनिवार्य बताया है। इस्लाम एक एकीकृत और संतुलित प्रणाली है, जिसमें किसी भी पक्ष पर अन्याय नहीं है।

> **इस्लाम ने विरासत में महिलाओं को न्यायपूर्ण  अधिकार दिया है, कुछ मामलों में, यदि पुरुषों के बराबर अधिकार हैं, तो कुछ स्थिति में कम और ज़यादा की अधिकार है।**

### इस्लाम ने इन महिलाओं की देख-भाल पर ज़ोर दिया है:

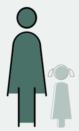

**माँ:** एक आदमी मुहम्मद (स.) के पास आए और कहा कि: हे अल्लाह के रसूल, सबसे अधिक सेवा और सम्मान योग्य कौन है? तो आपने कहा कि: “तुम्हारी माँ” तो उसने कहा फिर कौन? तो आपने जवाब दिया कि: “फिर तुम्हारी माँ” तो उसने कहा, फिर कौन? तो आपने कहा कि: “फिर तुम्हारी माँ” तो उसने कहा फिर कौन? तो आपने (चौथी बार) कहा कि: “तुम्हारा बाप”। (बुख़ारी: ५६२६)

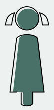

**बेटी:** मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: “जिसके पास तीन बेटियाँ हों, और उसने उनके देख-भाल, खाने-पीने, कपड़ा की अपनी क्षमता के अनुसार पर्याप्त व्यवस्था की तो वह बेटियाँ उसके लिए नरक में जाने से बाधा बनेंगी।” (इब्ने-माजह: ३६६९)

**पत्नी:** मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: “तुम में से सबसे अच्छा व्यक्ति वह है जो अपने घर-परिवार केलिए अच्छा हो, और मैं अपने घर-परिवार केलिए तुम में से सबसे अच्छा हूँ।” (तिर्मिज़ी: ३८९५)



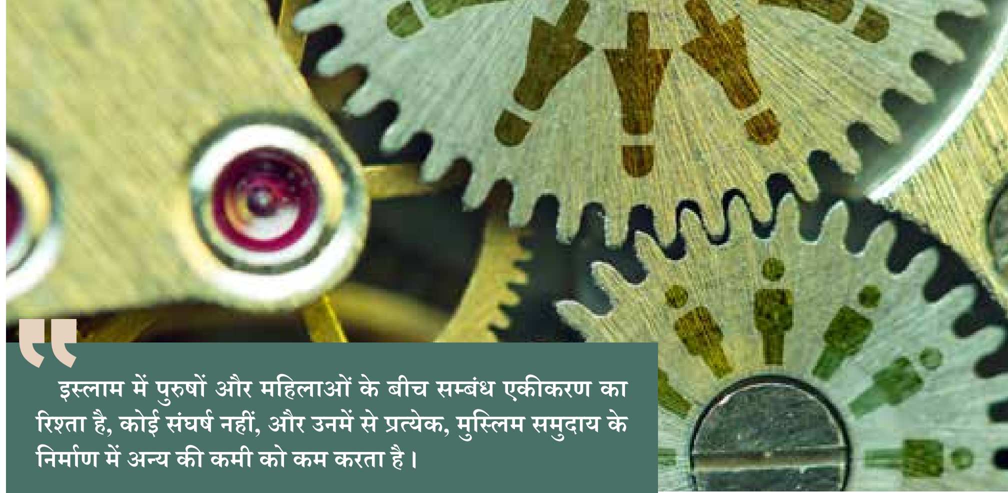

> **इस्लाम में पुरुषों और महिलाओं के बीच सम्बंध एकीकरण का रिश्ता है, कोई संघर्ष नहीं, और उनमें से प्रत्येक, मुस्लिम समुदाय के निर्माण में अन्य की कमी को कम करता है।**

### इस्लाम में पुरुष एवं महिला के बीच संघर्ष के लिए कोई जगह नहीं है:

इस्लाम में पुरुष एवं महिला के बीच लड़ाई और संघर्ष के लिए कोई जगह नहीं है, और भौतिक लाभ केलिए प्रतिस्पर्धा करने का कोई मतलब नहीं है, और पुरुष महिलाओं के विरुद्ध और महिला पुरुष के विरुद्ध अभियान चलाने के कोई मतलब नहीं है, एक दूसरे की कमज़ोरियों को खोजने और एक-दूसरे का अपमान करना बेकार है!

अपने जीवन साथी संग कोई कैसे युद्ध कर सकता है, और भाई अपने बहन से कैसे संघर्ष कर सकता है, जैसा कि मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि: महिला भी पुरुष के समान है।” उनके बीच का रिश्ता पूरक है, उनमें से प्रत्येक, मुस्लिम समुदाय के निर्माण में अन्य की कमी को कम करता है।

क़ुरआन इस पूरकता को ख़ूबसूरती से चित्रित और बयान करता है कि: “महिला पुरुष का और पुरुष महिला का लिबास है।”  (सूरतुल-बक़रह: १८७)

पुरुष एवं महिला दोनों में कोई न कोई कमी और कमज़ोरी है। पुरुष महिला में जो कमी और कमज़ोरी देखता है वह एक प्रकार की उसकी शक्ति होती है जो मनुष्य नहीं कर सकता, परन्तु परिवार को उसकी आवश्यकता होती है। जो कमी  महिलाएं पुरुषों में देखती हैं, शायद वह किसी प्रकार की क्षमता का एक अभिव्यक्ति है जो महिला के उपयुक्त नहीं है, परन्तु इन दोनों के सहयोग के बिना जीवन और समाज का निर्माण संभव नहीं है।

यह बेतुकी और बेकार की बात है कि अल्लाह ने दो प्रकार की सृष्टि (पुरुष और महिलाएं) पैदा की, फिर वह कहता है कि: दोनों (पुरुष और महिलाएं) हर चीज़ में एक समान हों।

जब कुछ पुरुषों ने महिलाओं को प्रदान किए गए अधिकारों और कुछ महिलाएं ने पुरुषों को प्रदान किए गए अधिकारों केलिए कामना किया तो क़ुरआन की यह आयत अवतरित हुई कि: “और उस चीज़ की कामना न करो, जिसके कारण अल्लाह ने तुम में से किसी को किसी पर फ़ज़ीलत दी है, पुरुषों का वह हिस्सा जो उन्होंने कमाया, और महिलाओं केलिए वह हिस्सा है जो उन्होंने कमाया, औ अल्लाह से उसका फ़ज़्ल माँगो।” (सूरतुन-निसा:३२)

हरेक की अपनी विशेषता और ज़िम्मेदारी है, और हरेक अल्लाह का आशीर्वाद को प्राप्त करने केलिए अपनी भूमिका निभाने की कोशिश करता है। इस्लामी क़ानून और विधान मात्र पुरुषों और महिलाओं केलिए नहीं, बल्कि मानव, परिवार और मुस्लिम समुदाय की गणना और मार्गदर्शन केलिए है।

### पुरुष और महिला के बीच का सम्बंध:

सीमा और कानूनों, रीति-रिवाजों और व्यवहारों में पुरुषों और महिलाओं के बीच सम्बंधों का संगठन और विनियमन, जो पूरे इतिहास में मानवता के कई व्याख्याओं और विकल्पों द्वारा आयोजित किया गया है, गणना करना या पालन करना मुश्किल है। लेकिन इतिहास में मानव विज्ञान की किताबें इस बात की साक्षी हैं कि कुछ समुदाय नंग महिला और यौन अराजकता में कोई हर्ज महसूस नहीं करते, बल्कि कुछ समुदाई महिलाओं को डर से ज़ंजीर से बाँध कर रखते थे। कुछ दूसरे समुदाय, जो महिलाओं को छोड़कर पुरुषों को शरीर ढाँकने को कहते, या शरीर के कुछ अंग को ढकते तो कुछ को खुला रखते, और इसके अतिरिक्त भी बहुत चीजें हैं जिनको सिमित करना कठिन है.. ।

पूरे इतिहास में अधिकतम लोग, विशेष रूप से सभ्यता का पाठ पढ़ाने वाले लोगों का मानना है कि पुरुषों और महिलाओं के बीच सम्बंधों केलिए एक प्रभावी प्रणाली और इसे नियंत्रित करने वाले क़ानून की आवश्यकता है, ताकि जीवन जंगल और खलिहान न बन जाए, जहाँ मनुष्य और जानवर के कोई अंतर न रह जाए।

### इस्लाम में पुरुषों और महिलाओं के बीच सम्बंधों की प्रकृति:

इस्लाम में पुरुष और महिला के बीच का रिश्ता मानव प्रयास नहीं है जो इतिहास और भूगोल के आधार पर तैयार किया गया कोई प्रणाली हो। बल्कि यह एक एकीकृत प्रणाली है जो हर समय और स्थान के लिए मान्य है, पवित्र क़ुरआन में अल्लाह ने इसे अवतरित किया, और मुहम्मद (स.) ने लोगों को सिखाया।

पुरुषों और महिलाओं के बीच सम्बंध इस्लाम में नाता के आधार पर आधारित है।

**इस्लाम में महिला सम्बंधित पुरुष इस प्रकार हैं:**

**१) पति:**

क़ुरआन ने पति और पत्नी के बीच मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और शारीरिक सम्बंध की एक अद्भुत तस्वीर के रूप में बयान किया है। इसलिए कहीं पर महिला को पुरुष की पोशाक कहा तो वहीँ पुरुष को महिला की पोशाक कहा, क़ुरआन में है कि: "महिला पुरुष का और पुरुष महिला का लिबास है।" (सूरतुल-बक़रह: १८७)

**२) महरम:**

महरम से मुराद वह व्यक्ति जिनसे क़रीबी रिश्ता होने के कारण कभी भी विवाह नहीं हो सकता, और वे 13 प्रकार के पुरुष रिश्तेदार हैं: पिता, दादा, बेटा, भाई, चाचा, मामा, भतीजा या भान्जा, पोता या नाती इत्यादि..। और महिला अपने इन रिश्तेदारों के सामने बिना हिजाब के रह सकती है, और अपनी प्रकृति पर बिना नग्न या अर्धनग्न उनके साथ रह सकती है।

**३) अजनबी पुरुष:**

अजनबी पुरुष से मुराद यह है कि हर वो व्यक्ति जो महिला का महरम न हो।

इस्लाम ने अजनबी महिला सम्बंधित कई क़ानून पारित किया है जो महिलाओं की अस्मिता को सुरक्षित करता है, और शैतानी दरवाजों को बंद करता है। जिसने मानव की सृष्टि की वह उनके बारे में अधिक जानता है कि उनके लिए क्या सही है, जैसा कि क़ुरआन में आया है कि: "क्या वही न जाने जिसने पैदा किया? फिर वह बारीक देखने और जानने वाला भी हो।" (सूरतुल-मुल्क:१४)

**इस्लाम ने अजनबी पुरुषों के सामने हिजाब को क्यों अनिवार्य किया?**

- ताकि महिला अपनी गरिमा और पवित्रता को संरक्षित करते हुए, वैज्ञानिक और व्यावहारिक क्षेत्रों में जीवन और समाज में अपना योगदान दे सके।
- एक ओर प्रलोभन और उत्तेजना की संभावनाओं को कम करने और समाज की शुद्धता सुनिश्चित करने केलिए, तो दूसरी ओर महिलाओं की गरिमा को संरक्षित करने के लिए।
- मनुष्यों के शुद्धता और अनुशासन केलिए यह चीज़ सहायक बनती है, जिसके कारण वह महिला संग इंसानों जैसा व्यवहार करता है, और सांस्कृतिक और वैज्ञानिक रूप से लाभ उठाता है। न कि केवल महिला को यौन उत्तेजक के रूप में प्रयोग करे। और महिला कोई खिलौने का सामान नहीं है कि जैसे चाहे वैसे प्रयोग करे।



**पुरुष और अजनबी महिला के बीच सम्बंध के सिद्धांत:**

**१) निगाह नीची रखना:**

अल्लाह ने पुरुष और महिला दोनों को निगाह नीची रखने का आदेश दिया है। अर्थ यह है कि ऐसे न देखे जो उसके कामवासना को उत्तेजित करे। इसलिए कि यही शुद्धता और अस्मिता की सुरक्षा का रास्ता है, जैसे बिना किसी रोक-टोक के बार-बार देखा तो यह पाप और अनैतिकता का मार्ग है, अल्लाह क़ुरआन में कहता है कि: "मुसलमान पुरुषों से कहो कि अपनी निगाह नीची रखें, और अपने गुप्ताँग (शर्मगाह) की रक्षा करें, यही उनके लिए पवित्रता (पाकीज़गी) है, लोग जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह सब जानता है। और मुसलमान महिलाओं से कहो कि वे भी अपनी निगाहें नीची रखें, और अपनी शर्मगाह की रक्षा करें।" (सूरतुन-नूर:३०-३१)

**२) अच्छा व्यवहार करना:**

पुरुष और महिला एक दूसरे के साथ सभ्य और सम्मानपूर्वक व्यवहार करें, चाहे वह कार्य क्षेत्र अथवा ज्ञान और पढ़ाई का क्षेत्र हो। यौन उत्तेजित सभी गतिविधियों से दूर रहते हुए।

**३) पर्दा करना:**

अल्लाह ने महिला को पर्दा करने और अपन शरीर को छुपाने का आदेश दिया है, क्यूंकि अल्लाह ने उन्हें सुन्दर और आकर्षक बयाना है, जिसके कारण पुरुष उनकी ओर आकर्षित होते हैं और फ़ित्ना में पढ़ जाते हैं। इसलिए प्राचीन काल से लेकर वर्तमान युग तक, पुरुषों को छेड़छाड़ करने केलिए एक महिला का उपयोग किया जाता है, मिडिया और विज्ञापन में अभी भी महिलाओं का अधिक उपयोग किया जाता है।

पर्दे की सीमा: इस्लाम में पर्दे की सीमा यह है कि महिला अजनबी पुरुष के सामने अपनी दोनों हथेली और चेहरा (मुखड़ा) को छोड़कर सम्पूर्ण शरीर को ढकेगी, जैसा कि क़ुरआन में है कि: "और महिला अपने श्रृंगार का प्रदर्शन न करे सिवाय उसके जो ज़ाहिर हो।" (सूरतुन-नूर:३१)

> इस्लाम में पर्दे की, कई आलोचकों ने इस बात को अनदेखा किया है कि इतिहास में सबसे उत्कृष्ट महिलाओं में से एक (पवित्र मरियम) का चित्र, जो कि पर्दे के साथ है, और यह मुसलमानों के पर्दे की तरह से ही है।

# खाने-पीने में इस्लाम का क़ानून

इस्लाम के बारे में खोज करने वाले केलिए यह एक सामान्य प्रश्न होता है कि इस्लाम ने सूअर और मादक पदार्थ (अल्कोहल) को क्यों अवैध किया गया है?

इस्लाम के बारे में खोज करने वाले केलिए यह एक सामान्य प्रश्न होता है कि इस्लाम ने सूअर और मादक पदार्थ (अल्कोहल) को क्यों अवैध किया गया है?

उसका उत्तर समझने केलिए निम्नलिखित स्पष्टीकरण का जानना आवश्यक है:

इस्लाम ने मुसलमानों केलिए पृथ्वी की सम्पूर्ण वस्तुओं को वैध किया है, ताकि हम उससे लाभ उठाएं। और क़ुरआन ने इस बात का स्पष्टीकरण कर दिया है कि पृथ्वी की जो भी वस्तुएं स्रष्टि की गई हैं वह केवल लाभ उठाने केलिए की गई हैं। (सूरतुल-बक़रह:२९)

उन्हीं में से खाना और पानी है, क़ुरआन ने सम्पूर्ण वस्तुओं को वैध किया है सिवाय नशीला पदार्थ और जो स्वास्थ्य केलिए हानिकारक हो, या जिससे बुद्धि चली जाए। शायद आपको सूअर और मादक पदार्थ (अल्कोहल) निषेध के बारे में जानने की रूचि हो सकती है।

## सूअर:

क़ुरआन में स्पष्ट रूप से सूअर का मांस खाने को अवैध किया गया है, यद्यपि सुअर उस समय अरबों के बीच प्रचलित नहीं था। कुछ लोग इस निषेध से आश्चर्यचकित हैं और इसकी आलोचना करते हैं जबकि यह केवल मुस्लिमों केलिए विशिष्ट नहीं है बल्कि यहूदियों के निकट भी हराम और निषेध है, जैसा कि (Old Testament) में है। और आश्चर्य की बात है कि, कई धार्मिक विद्वानों ने प्रमाणित किया है कि इसाइयों में भी सूअर का मांस अवैध है, जैसा कि (New Testament) में है, परन्तु उन लोगों ने उसमें मन-मानी हेरा-फेरी की और परिवर्तन कर दिया।

(अधिक जानकारी केलिए: Mark ५: ११-१३, Matthew ६७, २ Peter २/२२, Luke १५/११ पढ़िए)

अल्लाह ने हमारे लिए खाने-पीने की सम्पूर्ण वस्तुओं को वैध किया, फिर हमारे आस्था (ईमान) और आज्ञाकारिता का परीक्षण करने कलिए कुछ वस्तुओं को अवैध किया। जैसे कि आदम (अ.) केलिए स्वर्ग के सारे खाने वैध थे परन्तु उनके परीक्षण केलिए एक पेड़ के फल का खाना अवैध था?

“ अल्लाह ने हमारे लिए खाने-पीने की सम्पूर्ण वस्तुओं को वैध किया, फिर हमारे आस्था (ईमान) और आज्ञाकारिता का परीक्षण करने कलिए कुछ वस्तुओं को अवैध किया। जैसे कि आदम (अ.) केलिए स्वर्ग के सारे खाने वैध थे परन्तु उनके परीक्षण केलिए एक पेड़ के फल का खाना अवैध था?

## मदिरा (शराब) और नशीला पदार्थ:

समाज में महामारी और ख़तरनाक बीमारीयों को समाप्त करने और स्वास्थ्य और जीवन की रक्षा केलिए कड़ा क़ानून और नियन लाना और पारित करना राज्यों और सरकारों की सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है। और किसी भी प्रकार का असंतुलन और लापरवाही करने से व्यक्ति और समाज पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है..।

शायद, यह रिपोर्ट हमें आश्चर्यचकित करने के लिए पर्याप्त है! ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की रिपोर्ट पर एक WHO नेचर ४८३ नामक पत्रिका १५/०३/२०१२ ई० को और २७५ विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट ११/०२/२०११ ई० में प्रकाशित की गई है।

जिसमें प्रति वर्ष, मदिरा और नशीला पदार्थ (अल्कोहल) का सेवन करने से पीड़ितों की संख्या एड्स, मलेरिया और तपेदिक के पीड़ितों की संख्या से अधिक है, जो उस वर्ष सभी युद्धों, नरसंहार और आतंकवाद के पीड़ितों के लगभग तीन गुना अधिक है ...।

यहाँ पर कुछ आंकड़े दिए जारहे हैं, जो WHO की रिपोर्ट की पुष्टि करता है।

विश्व में प्रति वर्ष मदिरा और नशीला पदार्थ से मरने वालों की संख्या २५,००,००० (पच्चीस लाख) है, जिसमें १५-२९ वर्ष की आयु के ३२,०००० युवा शामिल हैं, जो विश्व भर में अल्कोहल सम्बंधित कारणों से मर जाते हैं। जो कुल, वार्षिक मृत्यु दर कर ९ % है।

अमरीका में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार प्रति वर्ष विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले ७,००,००० विद्यार्थी हिंसात्मक घटना के शिकार होते हैं। जो मदिरा (शराब) और नशीला पदार्थ के अधिक सेवन के कारण होता है।

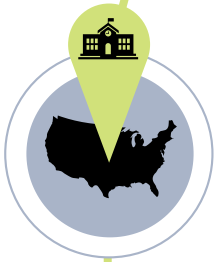

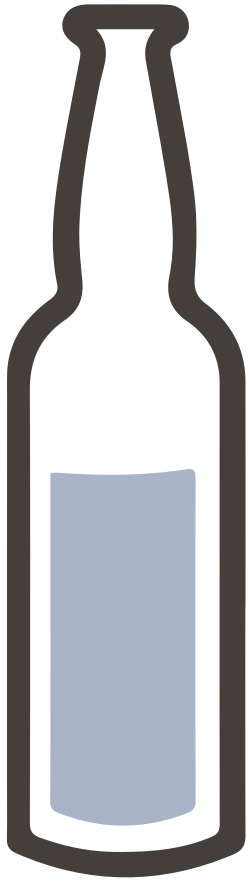

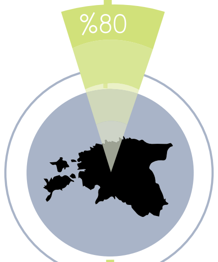


२०११ की एक रिपोर्ट के अनुसार, एस्टोनिया में युवा लोगों द्वारा किए गए ८०% हिंसक अपराधों को अत्यधिक शराब के सेवन के कारण देखा गया।

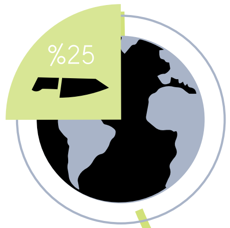


अंतर्राष्ट्रीय रिपोर्ट के अनुसार पृथ्वी पर कुल अपराध का एक चौथाई अपराध शराब के सेवन के कारण देखा गया।

WHO की सभी रिपोर्ट और डेटा, सम्पूर्ण राज्यों को कड़े उपायों और क़ानूनों को लाने और बनाने का आह्वान करते हैं, जो शराब और नशीला पदार्थ के कारण उन दैनिक त्रासदियों को कम करे या रोक सके।



**अकेले ब्रिटेन में केवल एक वर्ष में:**

- ब्रिटेन में लगभग दस लाख अपराध और हिंसा शराब और अल्कोहल से सम्बंधित थे, और आम तौर पर लगभग आधे हिंसक अपराध नशीला पदार्थ और अल्कोहल के सेवन से जोड़ा जाता था।
- शराब और अल्कोहल के कारण ७० लाख सड़क दुर्घटना और आपातकाल अस्पताल में पंजीकृत हुईं; जिसके लिए लगभग ६५० मिलियन ब्रिटिश पाउण्ड करदाताओं केलिए भुगतान किया गया।
- मदिरा और नशीला पदार्थ (अल्कोहल) से जुड़े अपराध की लागत करदाताओं के साथ ८-१३ बिलियन पाउण्ड आंकी जाती है।

**क़ुरआन मदिरा और नशीला पदार्थ पर कैसे नियंत्रण करता है:**

मदिरा और नशीला पदार्थ के सेवन से व्यक्ति और समाज पर जो नकारात्मक प्रभाव पढ़ने वाले थे उसको नियंत्रण करने केलिए इस्लाम ने WHO की रिपोर्ट की प्रतीक्षा नहीं की..। इसलिए कि जिसने मानव की सृष्टि की वह उनके बारे में जानता है कि समाज और जीवन केलिए क्या फ़ाएदेमंद और क्या हानिकारक है।

१४ शताब्दी पूर्व जब इस्लाम आया उस समय अरब समुदाय मदिरा और नशीला पदार्थ के सेवन में मस्त रहते थे। और शराब के सेवन से शान्ति और सुख प्राप्त करते थे। उसके कारण घमण्ड करते और अपने पूरे धन को ख़र्च करते।

क़ुरआन इस मामले से बहुत ही तार्किक और निष्पक्ष तरीक़े से व्यवहार करता है, कि शराब के कुछ फ़ाएदे और लाभ हैं; जब उसका सेवन करने वाला दुःख को भूल जाता है और आनंद महसूस करता है..। लेकिन उसका प्रभाव और दंड बहुत गंभीर है, और व्यक्ति और समाज पर जो मनोवैज्ञानिक, व्यवहारिक और स्वास्थ्य के हानिकारक प्रभाव पड़ जाते हैं उनका इलाज करना असंभव हो जाता है। अल्लाह क़ुरआन में कहता है कि: "लोग आपसे शराब और जुआ के बारे में प्रश्न करते हैं, आप कह दीजिए इन दोनों में बड़ा पाप है, और लोगों को इस से दुनियावी फ़ाएदा भी होता है, परन्तु उनका पाप (गुनाह) उनके फ़ाएदे से कहीं अधिक है।" (सूरतुल-बक़रह:२१९)

फिर ज़ोर देकर शराब के सेवन से रोक दिया गया और इसे शैतान का कार्य बताया गया, यह दोस्ती को शत्रुता में बदल देता है, आपसी नफरत और ईर्ष्या को बढ़ावा देता है, जब क़ुरआन में लोगों से पूछा गया कि (तुम इस से रुक क्यों नहीं जाते?) तो लोगों ने कहा कि: हम रुक गए, हम रुक गए, और अल्लाह के आदेश का पालन करते हुए मदीना की गलियों में शराब को बहा दिया गया और व्यर्थ कर दिया गया।

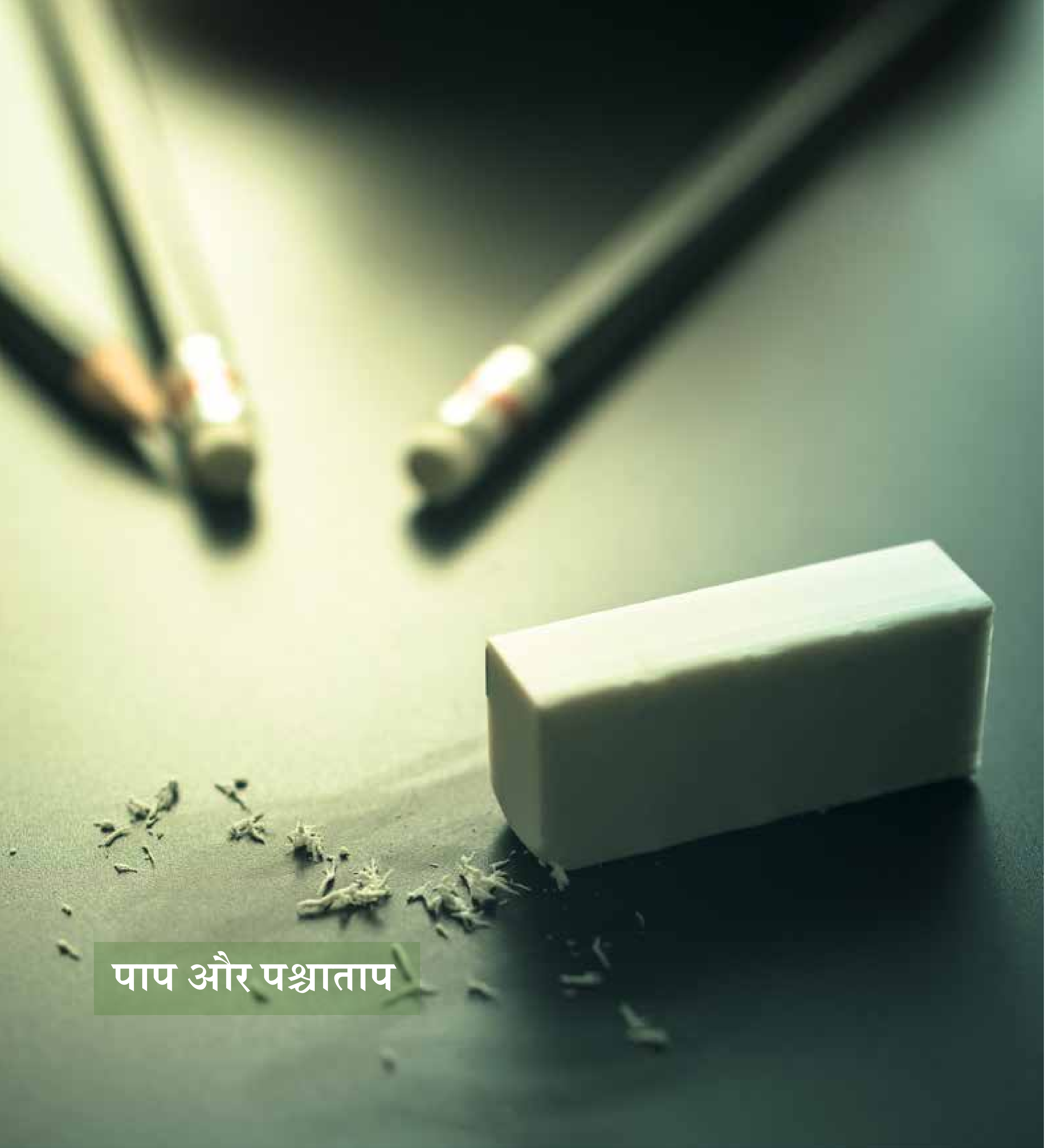


पाप

पाप और पश्चाताप: अधिकतम सभी धर्मों की बौद्धिक समस्याओं में से एक है। पाप के पश्चाताप को हर धर्म में अलग-अलग रूप में वर्णित किया गया है।

इस्लाम ने पाप और पश्चाताप का एक बड़ा संतुलन बना दिया है। अल्लाह ने अच्छे और बुरे गुण दोनों के साथ मनुष्य को बनाया। फिर भी अल्लाह ने लोगों को सही और ग़लत को अलग करने के लिए विवेकाधिकार भी प्रदान किया है। फिर भी अगर कोई कुछ ग़लत करने का विकल्प चुनता है, तो वह स्वंय के लिए ज़िम्मेदार है, क्योंकि उसे सही और ग़लत चुनने का अधिकार है। कभी-कभी किसी व्यक्ति से ग़लती हो सकती है यदि कोई ग़लती हुई है तो उसे निम्नलिखित में सारांशित किया जा सकता है:

- क़ुरआन में इस बात को स्पष्ट किया गया है कि गुनाह और पश्चाताप (तौबा) दोनों व्यक्तिगत चीजें हैं, और इसमें कोई जटिलता और अस्पष्टता नहीं है। मनुष्य के जन्म से पहले उसपर कोई गुनाह नहीं होता है। याद रखें हर नवजात शिशु शुद्ध, और पवित्र पैदा होता है, अतीत के किसी भी ग़लती को सहन नहीं कर सकता। न ही कोई ऐसा व्यक्ति है जिसके पास क्षमा करने और पापों के लिए प्रायश्चित करने का अधिकार है। आदम (अ.) का पाप उनका व्यक्तिगत पाप था, और इससे मुक्ति भी आसानी से पश्चाताप (तौबा) था।

इस प्रकार उनके प्रत्येक संतानों का पाप भी एक व्यक्तिगत पाप है, और पश्चाताप का पथ खुला हुआ है, हर व्यक्ति उसके लिए प्रयत्न करे और मायूस न हो। और हर व्यक्ति अपना बोझ बर्दाश्त करेगा इसलिए किसी को भी अन्य के पाप से नहीं लिया जाएगा। और यही वह चीज़ है जिसको सत्य ईश्वर के संदेशवाहक लेकर आए जैसा कि क़ुरआन हमें बताता है। (सूरतुन-नज्म:३६-४१)

- पश्चाताप (तौबा) अल्लाह की पूजा-उपासना और उसके निकटता प्राप्त करने केलिए सबसे महान कृत्यों में से एक है। और यह किसी विशेष से सम्बंधित नहीं, न ही किसी विशेष स्थान की आवश्यकता है और न ही किसी की मान्यता और अनुमति की ज़रूरत है। परन्तु यह ईश्वर और उसके बन्दे के बीच की पूजा है। इसलिए ईश्वर के नामों और गुणों में से (अत्तौवा बुर्रहीम) अति क्षमा प्रदान करने वाला, दयालु है (गुनाहों को माफ़ करने और तौबा क़बूल करने वाला) है। क़ुरआन ने उन लोगों के गुणों को बयान किया है जो स्वर्ग में प्रवेश करने वाले हैं कि जब उनसे कोई गुनाह हो जाता है तो वह जल्दी तौबा करते हैं: "जब उनसे कोई बुरा काम हो जाए या कोई गुनाह कर बैठें, तो जल्दी ही अल्लाह को याद और अपने गुनाहों से तौबा करते हैं, और हक़ीक़त में अल्लाह के सिवाय कौन गुनाहों को माफ़ कर सकता है, और वे जानते हुए अपने किए हुए पर इसरार नहीं करते।" (सूरतु-आले-इमरान:१३५)

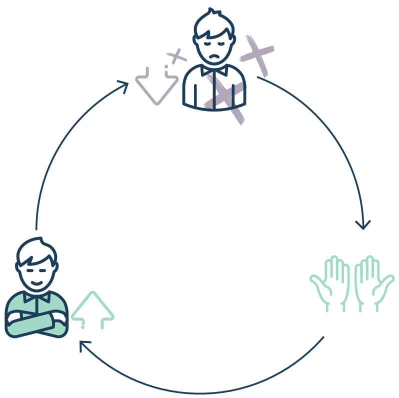

> इस्लाम में तौबा करने के तरीक़े बता दिए गए हैं, पहले पाप की दुनिया को त्याग दे, अतीत में किए गए पापों पर पछतावा करे, और आगे से ऐसा न करने का संकल्प ले, और अगर उसपर किसी के अधिकार हों तो उसको लौटा दे..।



यदि फिर से वह पाप अथवा ग़लती कर बैठा तो उसकी पहली तौबा बेकार नहीं गई, लेकिन उसने अभी नया गुनाह और पाप किया है इसलिए उसको फिर से पश्चाताप करने की आवश्यकता है।

इस प्रकार, इस्लाम में एक व्यक्ति पूर्णता, उन्नति और ग़लतियों से दूरी और उसकी मानव प्रकृति के ज्ञान के बारे में अपनी चिंता के बीच संतुलन की स्थिति में रहता है, जो अधिकतर कमज़ोर होता है और कभी अपने मार्ग से भटक जाता है।

इसलिए गतिविधि, डर, कमी और विचलन किसी भी प्रस्तिथियों में मायूस नहीं होना चाहिए, बल्कि अल्लाह से तौबा और क्षमा याचना करनी चाहिए।

यहाँ पर उन दोनों में अंतर बताना अवश्य है जो अल्लाह से डरने वाले हैं और दूसरे लोग जो उससे नहीं डरते हैं जैस कि क़ुरआन इस बात को प्रमाणित करता है कि सदाचारी से जब कोई पाप हो जाता है तो वह तुरन्त अपने पाप को याद करके अल्लाह से तौबा करता है, उनके विपरीत दूसरे लोग जो बार-बार ग़लती करते हैं और उसी पर डटे रहते हैं। (सूरतुल-आराफ़:२०१-२०२)

> मनुष्य के जन्म से पहले उसपर कोई गुनाह नहीं होता है। याद रखें हर नवजात शिशु शुद्ध, और पवित्र पैदा होता है, अतीत के किसी भी ग़लती को सहन नहीं कर सकता।

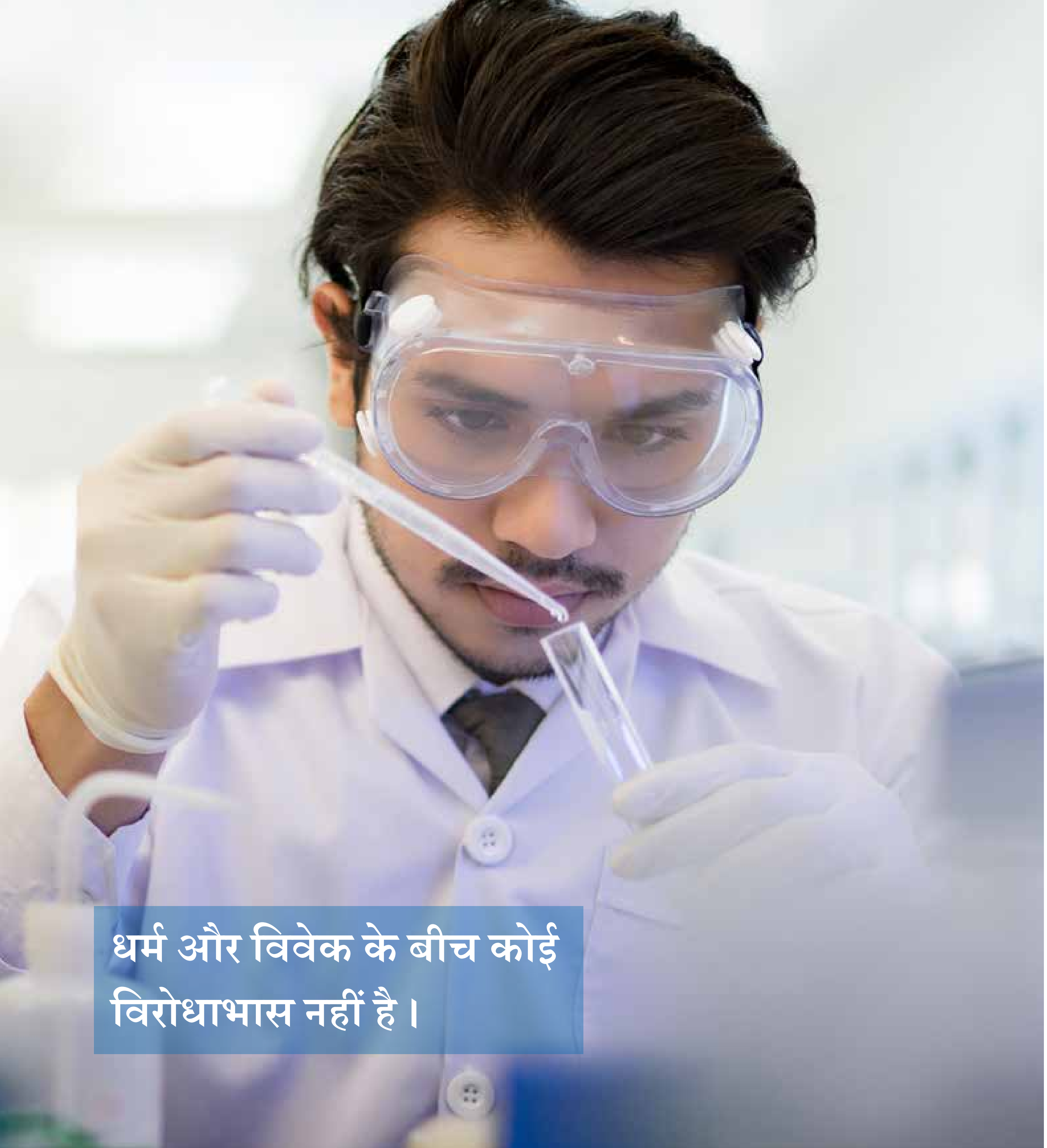

## धर्म और विवेक के बीच कोई विरोधाभास नहीं है।

कुछ लोग सोचते हैं कि धर्म और विवेक के बीच एक विरोधाभास है, और धर्म वैज्ञानिक पद्धति का विरोध करता है, क्यूंकि उनकी दृष्टि से धर्म, अंधापन, पुरानी कहानी और ग़लत सोच का नाम है। जबकि विज्ञान और दर्शन एक संगठित ज्ञान तक पहुँचने का मार्ग है जो शोध, सोच और प्रयोग की शर्तों से एक विश्वसनीय विज्ञान बन सकता है.. ध्यान देने से पता चलता है कि ऐसा विश्वास रखने से कभी कुछ सही और कुछ ग़लत होने का संभव रहता है।

## कुछ

कुछ लोग सोचते हैं कि धर्म और विवेक के बीच एक विरोधाभास है, और धर्म वैज्ञानिक पद्धति का विरोध करता है, क्यूंकि उनकी दृष्टि से धर्म, अंधापन, पुरानी कहानी और ग़लत सोच का नाम है। जबकि विज्ञान और दर्शन एक संगठित ज्ञान तक पहुँचने का मार्ग है जो शोध, सोच और प्रयोग की शर्तों से एक विश्वसनीय विज्ञान बन सकता है.. ध्यान देने से पता चलता है कि ऐसा विश्वास रखने से कभी कुछ सही और कुछ ग़लत होने का संभव रहता है।

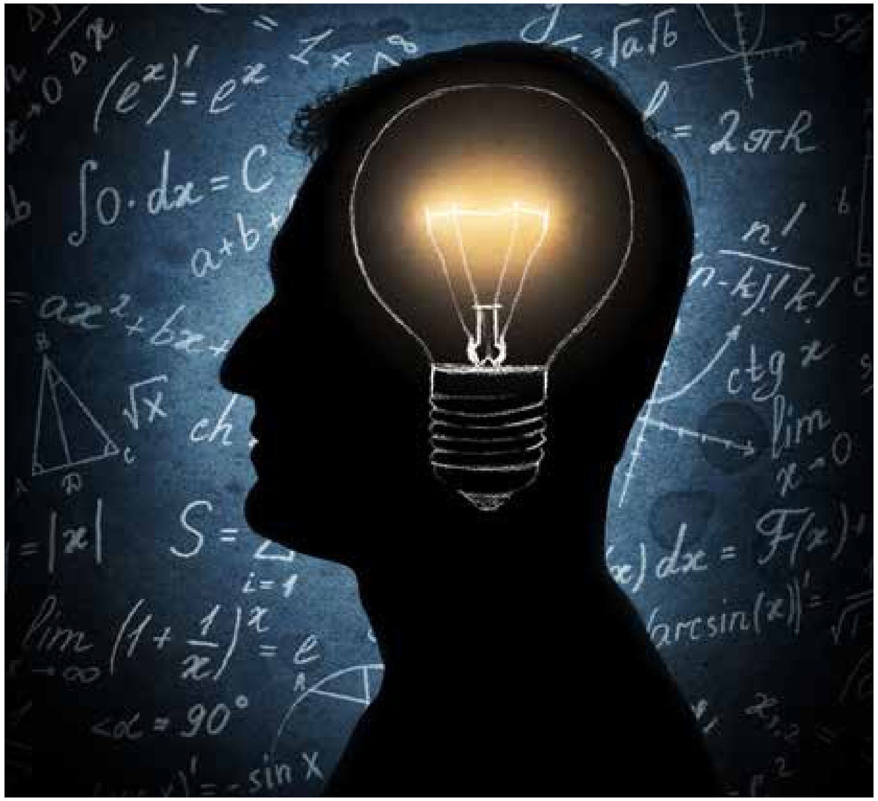

सच्चाई यह है कि अनेक धर्मों के कारण कभी मन उसको स्वीकार करता और कभी-कभी इसका विरोध करता है। इसलिए कि उसके श्रोत और पुस्तकें ग़लत आस्था और अंधविश्वासों से भरे हुए हैं जो संसार और विज्ञान का विरोधाभास करती हैं।

लेकिन एक धर्म है जिसमें धर्म और भेदभाव के बीच कोई विरोधाभास नहीं है। इसके बजाय आध्यात्मिक ज्ञान और दर्शन विज्ञान में पहला क़दम है। इसलिए धर्मों के बीच गुणात्मक मतभेदों के बारे में सोचे बिना सभी धर्मों को व्यापक रूप से गुमराह और ग़लत बताना उचित नहीं है!



इस्लाम का मुख्य श्रोत; क़ुरआन का अध्ययन करने वाले व्यक्ति को अच्छी तरह पता है कि क़ुरआन ने विवेक को उच्च दर्जा दिया है, जो अन्य धर्मों में नहीं है। क़ुरआन से परिचित व्यक्ति को तनिक भी कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि उसने बुद्धि को बार-बार सोचने और ध्यान देने के लिये आमंत्रित किया है। यहाँ तक कि उसने इनकार के प्रश्न के साथ (क्या आप समझते नहीं?) १३ से अधिक बार दोहराया है।

> "क़ुरआन से परिचित व्यक्ति को तनिक भी कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि उसने बुद्धि को बार-बार सोचने और ध्यान देने के लिये आमंत्रित किया है।

**क़ुरआन बुद्धि के कार्यों का मार्गदर्शन करता है और ध्यान केंद्रित करता है। और इसका प्रभाव जीवन के हर पहलू में देखा जा सकता है, जैसे कि:**

१ क़ुरआन उन बुद्धिमान लोगों को संबोधित करता है, जो अत्याचार, अहंकार, भय और अज्ञानता के सभी रूपों से मुक्त हों, जो मानसिक साक्ष्य और कई तर्कसंगतताओं के साथ अल्लाह पर आस्था और विश्वास रखने की अनिवार्यता दर्शाता है, अल्लाह कहता है: "क्या ये बिना किसी (पैदा करने वाले) के स्वंय ही पैदा हो गए हैं, या ये ख़ुद पैदा करने वाले हैं? क्या उन्होंने ही आकाशों और धरती को बनाया है? बल्कि ये विश्वास न करने वाले लोग हैं।" (सूरतुत्तूर:३५-३६-)

२ क़ुरआन विपक्ष के सबूतों पर चर्चा करता है, और उन तर्कों को ख़ारिज कर देता है जो बिना प्रमाण बात करते हैं, अल्लाह कहत है कि: "उनसे कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो कोई प्रमाण तो पेश करो।" (सूरतुल-बक़रह:१११)

३ उन लोगों की निन्दा करता है जो अपनी बुद्धि का प्रयोग नहीं करते, वह उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित करता है जिसकी कोई इंद्रियां नहीं हैं, क्यूंकि वे जो देखते और सुनते हैं सही निर्णय और विकल्प चुनने के लिए उससे उन्हें लाभ नहीं होता है, अल्लाह कहता है: "क्या उन्होंने धरती में सैर करके नहीं देखा, जो उनके दिल इन बातों को समझते या कानों से ही इन (घटनाओं) को सुन लेते, बात यह है कि केवल आँखें ही अंधी नहीं होतीं बल्कि वे दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं।" (सूरतुल-हज्ज:४६)

४ क़ुरआन ने ज्ञान और विवेकाधिकार के उपयोग में बाधा डालने वाली सभी चीजों के बारे में चेतावनी दी है, क़ुरआन न केवल ज्ञान और चेतना के उपयोग को प्रेरित किया है बल्कि बदतर चीज़ो से सतर्कता बरतने की चेतावनी भी दी है। अच्छे मानव प्रकृति अच्छे और बुरे संघर्ष से प्रभावित होती है। इसलिए कभी-कभी किसी व्यक्ति को अपनी इच्छा या डर या दोस्तों की धोखाधड़ी के कारण कल के नतीजे के बारे में सोचने का तरीक़ा ग़लत लगता है।

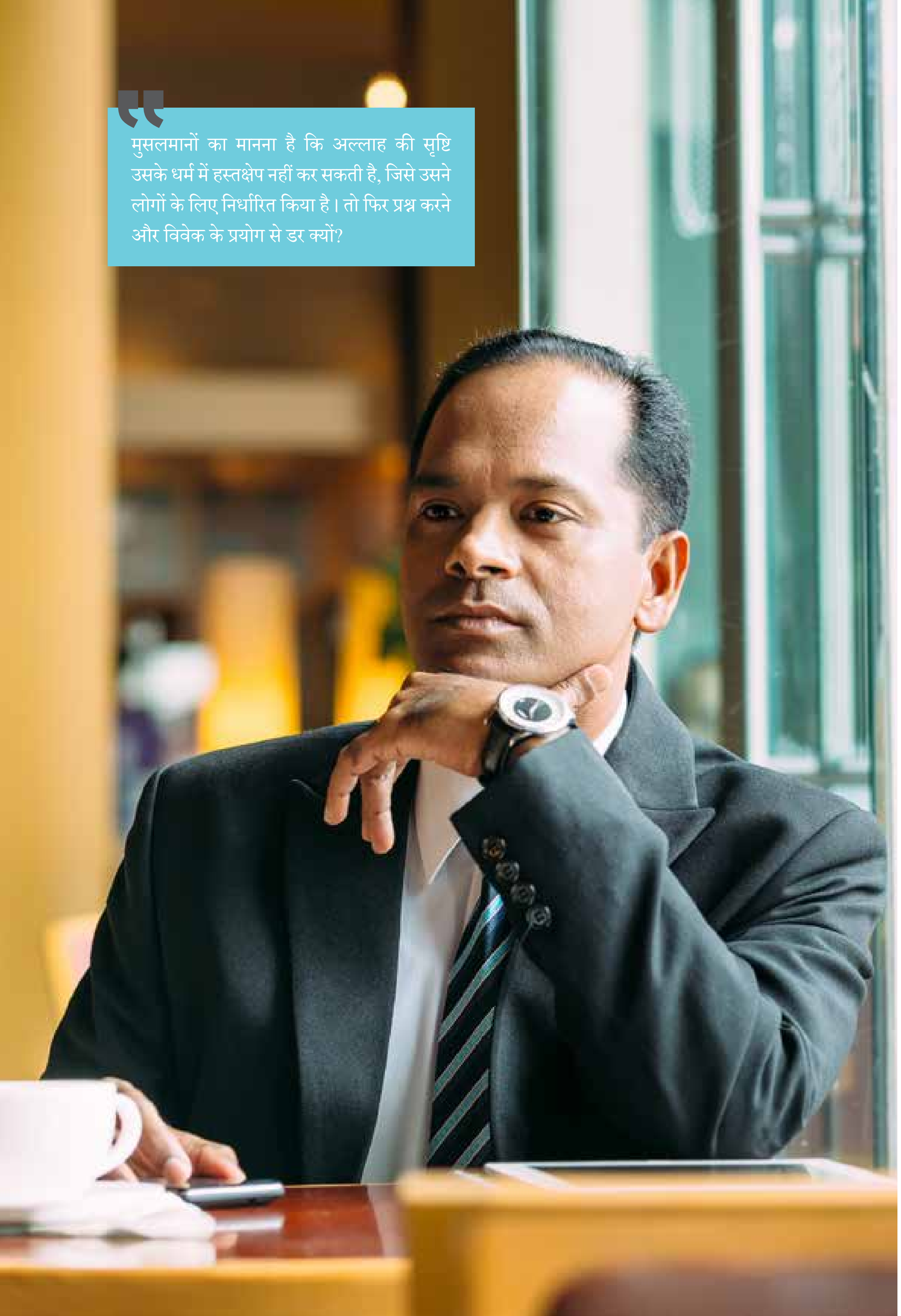

> मुसलमानों का मानना है कि अल्लाह की सृष्टि उसके धर्म में हस्तक्षेप नहीं कर सकती है, जिसे उसने लोगों के लिए निर्धारित किया है। तो फिर प्रश्न करने और विवेक के प्रयोग से डर क्यों?

**सही सोच में आने वाली बाधाएँ, जैसा की क़ुरआन ने स्पष्ट किया है:**

- परंपरा: पारिवारिक परंपरा, ग़लत आदत और हमेशा नकारात्मक सोच सही सोच को प्रभावित करती हैं, जिससे सत्य को स्वीकार करना और झूट को छोड़ना मुश्किल हो जाता है। और पूर्ण रूप से कभी इस बहस पर सोचने पर विराम लग जाता है कि मैं जो कर रहा हूँ और जिसपर मेरा जन्म हुआ है यही सही है। जैसा कि क़ुरआन इस बात को स्पष्ट रूप से बयान करता है कि कुछ लोगों के पास सत्य स्पष्ट हो जाता है लेकिन परंपरा उसको स्वीकार करने में बाधा आती है: "और उनसे जब कभी कहा जाता है कि अल्लाह की ओर से अवतरित की गई किताब पर अमल करो तो उत्तर देते हैं कि हम तो उस परंपरा को अपनाएंगे जिसपर हमने अपने पूर्वजों को पाया है, यघपि उनके पूर्वज बेवक़ूफ़ और भटके हुए हों।" (सूरतुल-बक़रह: १७०)
- अहंकार और घमण्ड: कभी-कभी लोग बौद्धिक प्रमाणित सत्यों के साथ-साथ अपने व्यक्तिगत हितों, अपने पद, ईर्ष्या और श्रोत का विनियमन को आधार बनाकर अस्वीकार कर देते हैं। जैसा की अल्लाह ने क़ुरआन में एक विशेष वर्ग के बारे में बयान किया कि: "और उन्होंने सत्य को जानने के पश्चात् केवल अहंकार और घमण्ड के कारण इनकार किया यघपि उनका दिल सत्य के प्रति विश्वस्त था।" (सूरतुल नमल:१४)

> इसलिए क़ुरआन मनुष्य को सदैव और सभी क्षेत्रों में बुद्धि, प्रश्न, स्वयं में विचार, संसार, सृष्टि, में बिना किसी शर्त और प्रतिबंधित प्रतिबद्धता के आमंत्रित करता है।

- लज्ज़तों में लिप्त होना: कभी मन सही चीज़ को जान लेता है लेकिन उसे अपनाने और चुनने का साहस नहीं कर पाता, क्यूंकि वह स्वयं की खुशियों में लिप्त है। इसी प्रकार क़ुरआन ने ऐसे ही एक व्यक्ति का उदाहरण दिया है कि: "अल्लाह ने एक व्यक्ति को ज्ञान और सूझ-बुझ दोनों प्रदान किया था और उसके अनुसार वह जीवन भी बिता सकता था लेकिन तत्काल रुचि और अपने ही मन की बात मानने के कारण वह उससे निकल गया और यह केवल इसलिए हुआ क्यूंकि वह लज्ज़तों में इतना डूबा हुआ था कोई सही निर्णय लेने में सक्षम नहीं था।" (सूरतुल-आराफ़:१७५-१७६)

इसलिए क़ुरआन मनुष्य को सदैव और सभी क्षेत्रों में बुद्धि, प्रश्न, स्वयं में विचार, संसार, सृष्टि, में बिना किसी शर्त और प्रतिबंधित प्रतिबद्धता के आमंत्रित करता है।

प्रश्न पूछने से वह व्यक्ति डरता है जो अपने अंदर कुछ छुपाता है, लेकिन सत्य धर्म केलिए अवश्य है कि वह सत्य ईश्वर की ओर से हो जिसने मनुष्यों को जन्म दिया और उनको महानता प्रदान की। और यह संभव नहीं है कि सत्य धर्म और विवेक में कोई विरोधाभास हो। तो फिर प्रश्न करने और विवेक के प्रयोग पर डर क्यों? अल्लाह क़ुरआन में कहता है कि: "सावधान, सृष्ट करना और आदेश जारी करना सर्वाधिकार केवल अल्लाह ही का है, सम्पूर्ण जगत का मालिक बहुत मुबारक है।" (सूरतुल-आराफ़: ५४)

# इस्लाम शान्ति का धर्म है

कुछ लोग आश्चर्यचकित हैं - मीडिया में क्या हो रहा है – जब वह जानते हैं कि इस्लाम में शान्ति की असाधारण स्थिति है, इसलिए एक मुस्लिम शान्ति शब्द को एक दिन में कई बार दोहराता और उसके अर्थ को समझता है।

अस-सलाम सत्य ईश्वर (अल्लाह) के नामों में से एक नाम है, और परलोक के पश्चात् जो स्वर्ग है उसका नाम दारुस्सलाम (शान्ति का घर) है। और मुसलमानों का सलाम और अभिवादन इसी सलाम से आरंभ होता है। मुसलमानों की नमाज़ का अंत इसी सलाम शब्द से होता है। और यह तमाम चीज़े एकत्रित होकर धर्म बनती हैं जिसको "इस्लाम" कहा जाता है जिसका अर्थ अमन अथवा शान्ति है।

और यदि इस्लाम सबसे कमज़ोर जानवरों के अधिकारों के लिए शान्ति और सम्मान की मांग करता है। पैग़म्बर मुहम्मद (स.) हमें बताते है कि "एक महिला बिल्ली के साथ क्रूर व्यवहार के कारण नरक में चली गई, उसको बाँध कर रखी, न उसे खाना खिलाया और न ही छोड़ा कि वे स्वंय ही खा ले।" (मुस्लिम: २२४२) वहीँ देहव्यापार करने वाली महिला एक कुत्ते को पानी पिलाने के कारण स्वर्ग में प्रवेश कर गई।" (बुख़ारी: ३२८०)

इस्लाम ने धर्म और विचारों में मतभेद होने के बावजूद लोगों के अधिकारों और उनके साथ सहअस्तित्व केलिए अति उत्तम उदाहरण पेश किया है। यहाँ तक कि दूत मुहम्मद (स.) ने धमकी दी है कि "अगर कोई किसी भी ग़ैर-मुस्लिम पर अत्याचार करेगा या उससे उसके क्षमता से अधिक बोझ डालेगा तो मैं महाप्रलय के दिन पीड़िता की ओर से वकालत करूँगा।" (अबू-दाऊद : ३०५२)

इस्लाम दूसरों के साथ वास्तविक और न्यायपूर्ण शान्ति की मांग करता है, जहाँ हर व्यक्ति के अधिकार को सुनिश्चित किया जा सके। दमनकारी और बलात्कारी को उसके अपराध के लिए दंडित किया जा सके। इस्लाम में शान्ति और न्याय के नाम पर कोई धोखाधड़ी नहीं है, कि चोर जो चोरी कर ले वह उसका है और जिसके घर चोरी हुई उसको थोड़े से मूल्य पर संतुष्ट किया जाए।"

> मुहम्मद (स.) ने धमकी दी है कि अगर कोई किसी भी ग़ैर-मुस्लिम पर अत्याचार करेगा या उससे उसके क्षमता से अधिक बोझ डालेगा तो मैं क़यामत के दिन पीड़िता की ओर से वकालत करूँगा।

कई लोगों ने अंजान शब्दों और मीडिया अभियानों के प्रचार केलिए उनके दृष्टिकोण को बाज़ार में बेचने के लिए उपयोग की जाने वाली साधनों का उपयोग किया है। याद रखें, प्रत्येक दृश्य में एक से अधिक कोण होते हैं और प्रत्येक कहानी में एक से अधिक उपन्यास होते हैं। कुछ ही लोगों होते हैं जो सच्चाई की खोज करने और मीडिया के प्रचार को उनके श्रोतों से जानकारी प्राप्त करने और स्थिति को निष्पक्ष और न्यायसंगत तरीक़े से करने का बोझ उठा पाते हैं।

**आप का ध्यान केंद्रित करने केलिए कुछ तथ्य:**

> कुछ ही लोगों होते हैं जो सच्चाई की खोज करने और मीडिया के प्रचार को उनके श्रोतों से जानकारी प्राप्त करने और स्थिति को निष्पक्ष और न्यायसंगत तरीक़े से करने का बोझ उठा पाते हैं।

**इस्लाम आज सबसे तेज़ी से फैलने वाला धर्म:**

कम सामग्री, मुसलमानों की आर्थिक कमज़ोरी और अंतर्राष्ट्रीय मिडिया का इस्लाम को बदनाम करने के बावजूद प्यू रिसर्च सेंटर (pewresearch.org) के अनुसार इस्लाम अमेरिका, यूरोप, अफ़्रीक़ा और एशिया में बड़ी तेज़ी से फैलने वाला धर्म है। तो क्या लोगों को इस्लाम अपनाने केलिए मजबूर किया गया या दृढ़ विश्वास और उनके पसंद के कारण फैला है?।

तथ्य यह है कि मुसलमान दूसरों के अधिकारों के प्रति प्रतिबद्ध हैं और उनके विकल्पों और सांस्कृतियों का सम्मान करते हैं, जिससे दूसरों के दिलों और दिमाग पर बड़ा प्रभाव पड़ा है, और यह मुस्लिमों ने उनके ऊपर कोई एहसान नहीं किया, बल्कि यह तो केवल अल्लाह के आदेश का पालन था। अल्लाह क़ुरआन में कहता है कि: "धर्म में किसी भी प्रकार की कोई ज़ोर-ज़बर्दस्ती नहीं है, सच-झूट से अलग हो गया।" सूरतुल-बक़रह:२५६)

**क्या लोगों को ज़बर्दस्ती इस्लाम में प्रवेश किया गया?**

मनुष्य ने हमेशा अपनी राय, प्रभाव और रुचि को लागू करने के लिए बल का उपयोग किया है, और इतिहास विभिन्न धर्मों और पंथों से संबंधित सभी संप्रदायों के उदाहरणों से भरा है।

इतिहास साक्षी है, जब इसाईयों ने स्पेन के मुसलमानों पर आक्रमण किया और मुस्लिमों को पराजित कर दिया। तो भयानक नरसंहार देख कर स्पेनिश पुजारी रिचर्ड बर्टोलॉम ने वर्णन करते हुए कहा था कि: "उन अप्रवासियों ने स्थानीय निवासियों पर अत्याचार किया यहाँ तक कि उनको इंसान तक नहीं समझा बल्कि उनके साथ पशुओं से कम स्तर का व्यवहार किया गया।"

A Brief Account of the Destruction of the Indies by Bartolome de las Casas (Jan 1. 2009)

**मुसलमानों ने विजय प्राप्त करने के बाद नए देशों में कैसा शासन किया?**

**मुस्लिमों ने स्पेन में लगभग आठ शताब्दी तक शासन किया:**

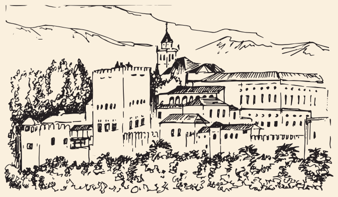

मुस्लिमों ने स्पेन में ७११-१४९२ से ७८१ वर्षों तक शासन किया । और वह विश्व सभ्यता का केंद्र था और उसने किसी भी इसाई को इस्लाम में प्रवेश होने केलिए मजबूर नहीं किया, बल्कि उनके अधिकारों की रक्षा की और राज्य में अपने व्यापार और केन्द्रों को बढ़ाया और मुस्लिमों ने उस अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाई जो इस्लामिक विजय से पूर्व यहूदियों द्वारा किया गया था, और इतिहास उन तथ्यों से भरा पड़ा है ।

जब इसाबेला और फर्नांडीज़ ने स्पेन में मुस्लिमों को पराजित कर दिया, तो इस्लाम के सभी पहलुओं पर पूर्णरूप से प्रतिबंध लगा दिया गया था, यहाँ तक कि इस्लाम में छिपे हुए रहने वाले लोगों को दंडित करने के लिए निरीक्षण आयोग और अदालतें भी स्थापित की गई!

और मुसलमानों को अपने घरों से निष्कासित कर दिया गया था, लेकिन यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि मुसलमानों को स्पेन से निष्कासन के साथ-साथ यहूदियों को उनके साथ निष्कासित कर दिया गया था और मुस्लिमों को इस्लामी देशों में जहाँ उन्हें एक सुरक्षित आश्रय और सभ्य जीवन मिला वहीँ रह गए ।

**मुस्लिमों ने भारत पर लगभग एक हज़ार वर्ष शासन किया जहाँ भारत की कुल जनसंख्या का 80% ग़ैर-मुस्लिम थे:**

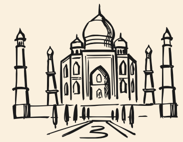

मुस्लिमों ने भारतीय उपमहाद्वीप पर लगभग एक हजार वर्ष तक शासन किया । उन्होंने सभी धर्मों के अधिकारों और इबादतों को संरक्षित किया । उन्होंने उत्पीड़ित धर्मों से उत्पीड़न को समाप्त किया । सभी इतिहासकारों का कहना है कि इस्लाम बल से नहीं फैला और न ही किसी को भी इस्लाम में प्रवेश करने के लिए मजबूर नहीं किया ।

**मुसलमानों ने मिस्र में १४०० से अधिक वर्षों का शासन किया, फिर भी उन्होंने क़िब्ती समुदाय के अधिकारों की रक्षा की ।**

जबसे मुहम्मद (स.) के एक साथी "अम्र बिन आस" ने मिस्र में विजय प्राप्त की उसी समय से वहाँ पर मुसलमानों का शासन रहा । उन्होंने न केवल ग़ैर-मुस्लिमों के धर्म और पवित्र स्थानों को संरक्षित किया है, बल्कि उन्हें रोमनों द्वारा छेड़छाड़, उत्पीड़न, अन्याय और नस्लीय भेदभाव के नाम पर दबाव से बचाया गया है । क़िब्ती उस समय से धर्म और पूजा की स्वतंत्रता मिल गई, और आज उनकी जनसंख्या ५० लाख से अधिक है ।

**बड़े-बड़े इस्लामिक देश जहाँ इस्लाम युद्ध और सैन्य अभियान के बिना फैला:**

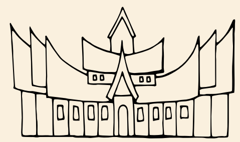

इंडोनेशिया २५० मिलियन से अधिक जनसंख्या वाला देश हैं, जिनमें से 87% मुस्लिमों की जनसंख्या है । इस्लाम छठी शताब्दी में मुस्लिम व्यापारियों के उच्च आचरण से प्रवेश किया । और वहाँ पर कोई सेना नहीं पहुंची थी । पुर्तगाल, जर्मनी और अंग्रेजों के उपनिवेशवाद के पश्चात् ही वहाँ पर ख़ून का खेल खेला गया ।

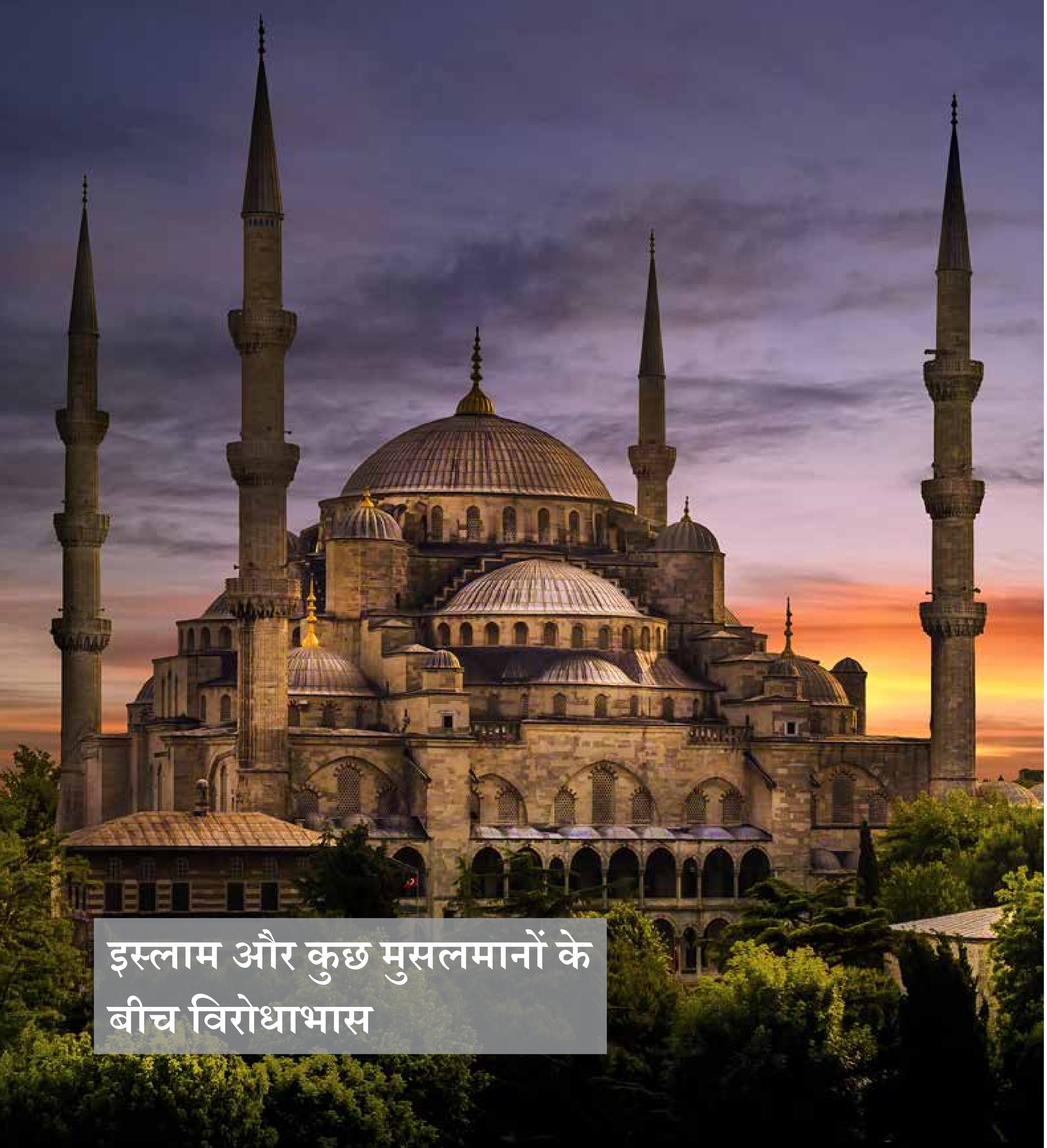

# इस्लाम और कुछ मुसलमानों के बीच विरोधाभास

यह कैसा विरोधाभास है? कुछ लोग कहते हैं कि इस्लाम की विशेषता और वास्तविकता यह है कि जो नैतिकता, भूमि निर्माण कार्य, मानव का लाभ, और लोगों के बीच शान्ति फैलाने की बात करता है, फिर कुछ लोग इसके विपरीत कार्य करके आपने आपको इस्लाम से सम्बंधित करते हैं और अपने आपको मुसलमान कहते हैं, तो क्या ऐसा संभव है कि वे धर्म के सच्चे अनुयायी हैं?

यह कैसा विरोधाभास है? कुछ लोग कहते हैं कि इस्लाम की विशेषता और वास्तविकता यह है कि जो नैतिकता, भूमि निर्माण कार्य, मानव का लाभ, और लोगों के बीच शान्ति फैलाने की बात करता है, फिर कुछ लोग इसके विपरीत कार्य करके आपने आपको इस्लाम से सम्बंधित करते हैं और अपने आपको मुसलमान कहते हैं, तो क्या ऐसा संभव है कि वे धर्म के सच्चे अनुयायी हैं?

**वास्तव में, यह भ्रम की बात है, और कई अक्षों पर शान्तिपूर्वक ढंग से सोचने की आवश्यकता है:**

- इस्लाम से सम्बंध या इस्लाम में पैदा होने वाले सभी लोग धार्मिक मुस्लिम नहीं हैं। बहुत से ऐसे लोग हैं जो इस्लाम की शिक्षा और वास्तविकता से बहुत दूर हैं और उनमें कई कमियां और विचलन पाई जाती हैं, और कुछ मुसलमान ऐसे भी हैं जो केवल 'इस्लाम' के नाम से ही परिचित होते हैं।
- किसी भी व्यक्ति की व्यक्तिगत ग़लती को उसके धर्म से जोड़ना सही नहीं है, ऐसा कहना कभी भी उचित नहीं होगा कि: हिट्लर का अत्याचार और ज़ुल्म उसके धर्म के कारण था, जिसने कई हज़ार यहूदियों की हत्या कर दी थी, या यह कहा जाए कि इसाई धर्म हिंसक धर्म है क्यूंकि हिट्लर एक इसाई था। या जो नास्तिक होता है वह लोगों की हत्या करता है, इसलिए कि जोसेफ स्टालिन नास्तिक था और उसने लाखों लोगों की हत्या की थी। यह सभी आरोप निष्पक्षता और वास्तविकता से बहुत दूर हैं।
- **इतिहास साक्षी है कि, इस्लाम की सच्चाई, सभ्यता, और शान्ति, विज्ञान और विकास की भावना का उदाहरण है, भारत के पूर्व से स्पेन के पश्चिम तक फैल गया, और इसके प्रभाव अभी भी हमारे लिए दृश्यमान हैं, और वे आज हमारे जीवन में सभ्यता का मार्गदर्शक प्रकाश हैं। वहीँ ऐसे देश भी हैं जो इस दौड़ में पूरा प्रयास कर रहे हैं, इसी प्रकार, मुसलमानों ने व्यक्तिगत रूप से विज्ञान, चिकित्सा और जीवन के हर विभाग में अतुलनीय भूमिका निभाई है।**

> किसी भी व्यक्ति की व्यक्तिगत ग़लती को उसके धर्म से जोड़ना सही नहीं है।

- **चिकित्सा से जुड़े कुछ डॉक्टरों की स्वास्थ्य से सम्बंधित गतिविधियों के कारण, आधुनिक चिकित्सा के महत्व को खारिज नहीं किया जा सकता, और उपचार से आपने आपको रोका नहीं जा सकता। और कोई भी शिक्षा से नहीं लड़ता और अपने बच्चों को शिक्षा से नहीं रोकता, इस कारण कि कुछ अध्यापकों ने इस सम्मानजनक पेशे का दुरुपयोग किया है..। किसी की व्यक्तिगत ग़लती को धर्म से जोड़ना सही नहीं है, इसी प्रकार, यदि मुस्लिम विद्वान कुछ ग़लत करते हैं, तो इसे इस्लाम की ग़लती नहीं कहा जा सकता है।**

**अजीब बात यह है कि इस्लाम के विरुद्ध उसके शत्रु योजनाबद्ध तरीक़े से बदनाम करने में कोई कमी नहीं रख रहे हैं, फिर भी अधिक लोग इस्लाम का असली रूप पेश करने में सक्षम रहते हैं। और पूरी दुनिया के लोग आज भी इस्लाम में प्रवेश कर रहे हैं।**

> और कोई भी शिक्षा से नहीं लड़ता और अपने बच्चों को शिक्षा से नहीं रोकता, इस कारण कि कुछ अध्यापकों ने इस सम्मानजनक पेशे का दुरुपयोग किया है।

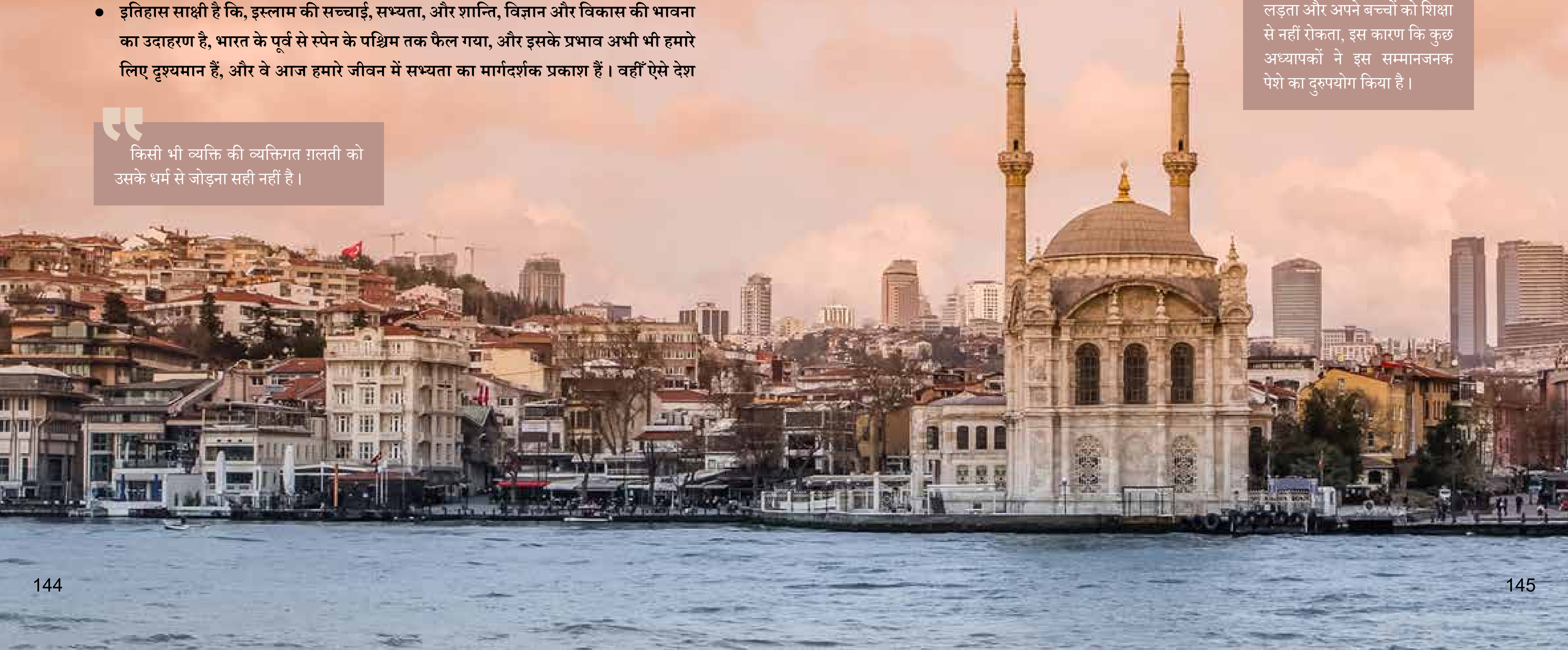

**नया कोण**

निर्णय लेने और अपि लाभ के लिए एक अवसर प्राप्त करने में कितनी बार आप झिझक गए हैं, और आज भी उस हिचकिचाहट के लिए स्वंय को दोषी ठहराते हैं।

मनुष्य केलिए सबसे बड़ा गौरव बिना किसी डर और उपहास के अपनी स्वतंत्रता और निर्णय लेने की उसकी क्षमता है।

जीवन में हमेशा फूलों से स्वागत नहीं किया जाता है। जीवन में चुनौतियों का निवारण करना साहसी और प्रशंसा योग्य क़दम है। निर्णय लेने के साहस में यदि कोई ग़लती हो जाए तो बिना किसी हिचकिचाहट और संकोच के अपनी ग़लती स्वीकार करें। क्योंकि यह आपके अहंकार को त्यागने और ग़लत कार्य करने में सुधार करने और सत्य को अपनाने के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। जिसका वास्तविक प्रभाव आपके नैतिकता और व्यक्तित्व में प्रकट होता।

जैसा कि आपने अपना बहुमूल्य समय देकर इस्लाम की विशेषताओं को उसके श्रोतों से जानने का अवसर दिया था, जो आपने पढ़ा है, उस पर विचार करने और सोचने में संकोच न करें।

यदि आपको इस धर्म की सच्चाई और इसकी सुंदरता दिखाई दी है, और आपको अभी भी इस्लाम की वास्तविकता और विशेषता के बारे में और अधिक शोध और प्रश्न की आवश्यकता है, तो आपके पास पढ़ने, संवाद करने और प्रश्न करने का विस्तृत क्षेत्र और मैदान है, लेकिन शर्त यह कि अध्ययन करने से पूर्व निष्पक्ष और एक अलग कोण से देखने का प्रयास करें..।

पूरी किताब पढ़कर हमें सम्मान प्रदान करें, और हम यह आशा करते हैं कि कुछ गंभीर प्रश्न ऐसे आए होंगे जिन्होंने आपको सहमत और असहमत होने पर मजबूर कर दिया होगा। और हमें आपकी राय या प्रश्न और आपत्ति सुनकर प्रसन्नता प्राप्त होगी, और हम ध्यानपूर्वक सुनने और स्वागत करने का वादा करते हैं।

इस्लाम के बारे में अधिक जानकारी के लिए:

LAUNCHING
CURiOSiTY
JUST SCAN IT.!!

THISISLAM.net

अपना अनुभव साझा करें

info@modern-guide.com

INDIAN

- क्या आप अपने आस-पास और मिडिया में बहुचर्चित विषय धर्म के बारे में सही जानकारी प्राप्त करना नहीं चाहते?
- कृपया आप थोड़ी देर रुक कर गहराई से सोचें उस धर्म के बारे में जो ग्लोबल आँकड़ों के अनुसार सबसे अधिक फैलने वाला और स्वीकार किया जाने वाला धर्म है।
- जब आप जीवन, धर्म और संसार के बारे में और समुदाय की धारणा और संस्कृतियों की खोज करते हैं, तो क्या आपको खुशी महसूस नहीं होती?
- आप इस्लाम की सही जानकारी प्राप्त करने के लिए अपना बहुमूल्य समय क्यों नहीं देते। फिर अपनी बुद्धि और विवेक के साथ निर्णय लें?

यदि उपर्युक्त कोई चीज़ रोचक हो या उससे आप सहमत हों, तो यह पुस्तक आपके लिए निश्चित रूप से सहायक साबित होगी।

9 786039 137375

LAUNCHING CURiOSiTY JUST SCAN IT.!!

MODERN GUIDE

THIS IS ISLAM

THISISLAM.net